राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत युवा जागरण का अग्रदूत RNI no. UPHIN45193/24/1/2014

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

जय विजय

मासिक

वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in, ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com

वर्ष-३, अंक-४ नवी मुंबई जनवरी २०१७ विक्रमी सं. २०७३ युगाब्द ५११७ पृष्ठ-३० निःशुल्क

प्रधानमंत्री की मन की बात : कानून में सब बराबर

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने २४ दिसम्बर को साल की आखिरी मन की बात के कार्यक्रम की शुरुआत देशवासियों को क्रिसमस की शुभकामनायें देते हुए की। उन्होंने मदन मोहन मालवीय और पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिन की भी शुभकामनायें दीं। 'मन की बात' कार्यक्रम का यह २७वां प्रसारण था। इस कार्यक्रम का यह इस साल का आखिरी संस्करण था। गौरतलब है कि पीएम मोदी रेडियो पर हर महीने के आखिरी रविवार को इस कार्यक्रम के जरिए अलग-अलग मुद्दों पर देश के सामने अपनी राय रखते हैं।

पीएम मोदी ने कहा कि क्रिसमस की सौगात के रूप में पंद्रह हजार लोगों को लाटरी सिस्टम से इनाम मिलेगा। हर एक के खाते में एक-एक हजार रुपये का इनाम जाएगा। योजना १०० दिनों तक चलेगी। कैशलेस माध्यमों से ग्राहकों को सामान देने वाले दुकानदारों को भी इनाम मिलेगा। ३००० से ज्यादा की खरीददारी करने वालों को इनाम नहीं मिलेगा। कैशलेस खरीददारी करने वाले ग्राहकों के लिए १४ अप्रैल को एक बंपर ड्रा होगा, जिसमें करोड़ों के इनाम मिलेंगे।

पीएम ने कहा कि देश में टेक्नोलॉजी, ई-पेमेंट और ऑनलाइन पेमेंट का उपयोग करने की जागरूकता तेजी से बढ़ रही है। देश के नौजवान नए आइडिया और टेक्नोलॉजी से डिजिटल मूवमेंट को बल दें। पीएम ने कहा कि व्यापारियों को डिजिटल लेन-देन करने और अपने कारोबार में ऑनलाइन पेमेंट की पद्धति विकसित करने पर टैक्स में छूट मिलेगी। नोटबंदी के बाद कैशलेस कारोबार २००-३०० प्रतिशत बढ़ा है।

पीएम ने कहा कि जनता ने परेशानी सहकर भी सरकार का साथ नहीं छोड़ा। जितनी पीड़ा आपको होती है, उतनी ही पीड़ा मुझे भी होती है। सरकार जनता जनार्दन के लिए है। जनता की सुविधा के लिए बड़े फैसले लेने पड़ते हैं। पीएम ने कहा कि मैं चाहता था सदन में भ्रष्टाचार और काले धन के खिलाफ लड़ाई पर, राजनीतिक दलों को मिलने वाले चंदे पर व्यापक चर्चा हो। कानून सबके लिए बराबर है। किसी को भी छूट नहीं मिलनी चाहिए। जो लोग अफवाह फैला रहे हैं कि राजनीतिक दलों को सब छूट है तो ये गलत है। जो लोग खुलकर भ्रष्टाचार और काले धन का समर्थन नहीं कर पाते, वे सरकार की कमियां ढूंढने में लगे रहते हैं।

पीएम ने बताया कि बार-बार नियम बदलने के मामले में सरकार जनता से फीडबैक लेती है और नियम उन्हीं के आधार पर बदलते हैं। पीएम के अनुसार, छापेमारी में पकड़े गए लोगों पर हुई कार्रवाई का रहस्य देश के जागरूक नागरिकों द्वारा दी जा रही जानकारी है। पीएम ने कहा कि भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई की तो अभी शुरुआत है। ये पूर्णविराम नहीं है।

बेईमानी और भ्रष्टाचार के काले कारोबार में लिप्त लोगों के खिलाफ कठोर कदम उठाना जारी रखने का संकल्प व्यक्त करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पूर्ववर्ती कांग्रेस नीत सरकार पर बेनामी संपत्ति से जुड़े कानून को कई दशकों तक ठंडे बस्ते में डालने का आरोप लगाते हुए कहा कि वर्तमान सरकार ने बेनामी संपत्ति कानून को धारदार बनाया है और आने वाले दिनों में यह कानून अपना काम करेगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि आपको मालूम होगा हमारे देश में बेनामी संपत्ति का एक कानून है। १९८८ में बना था, लेकिन कभी भी न उसके नियम बनें, उसको अधिसूचित नहीं किया। ऐसे ही वो ठंडे बस्ते में पड़ा रहा। हमने उसको निकाला है और बड़ा धारदार बेनामी संपत्ति का कानून हमने बनाया है। आने वाले दिनों में वो कानून भी अपना काम करेगा। देशहित के लिए, जनहित के लिए, जो भी करना पड़े, करेंगे। यह हमारी प्राथमिकता है। ■

योग है मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक वैश्विक विरासत

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के जरिये योग का प्रचार-प्रसार करने के बाद अब भारत ने दुनिया भर में प्रतिष्ठित अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरों की सूची में भी योग को शामिल करवाने में सफलता हासिल की है। संयुक्त राष्ट्र के शैक्षणिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन यूनेस्को की इस सूची में योग के शामिल होने की घोषणा संगठन में भारत की प्रतिनिधि रुचिरा कांबोज ने १ दिसम्बर को की। इथोपिया के अदिस अबाबा में आयोजित यूनेस्को की अंतर सरकारी समिति के ११वें सत्र में इस बात की औपचारिक घोषणा हुई।

यूनेस्को के अनुसार अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरों के दायरे में मौखिक परंपराओं और अभिव्यक्तियों, प्रदर्शन कला, सामाजिक रीति-रिवाज, उत्सव, ज्ञान आदि को रखा जाता है। चूंकि योग को खेल की विधा माना जाता था, इसलिए इसे इस लिस्ट में शामिल होने का मौका नहीं मिला था। भारत की ओर से इसे सूची में शामिल कराने के लिए विस्तृत प्रस्ताव भेजा गया था।

प्राचीन काल से लेकर अब तक भारत में योग की एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। योग एक ऐसी कला है जिसे कोई भी इंसान सीख ले तो उसके अंदर एक

अनोखी ऊर्जा, एक अनोखी शक्ति भर जाती है। साथ ही कोई भी इंसान अगर योग करता है तो वह कई तरह की बीमारियों से भी दूर रहता है और मानसिक तौर पर अपने आप को शांत एवं नियंत्रण में रख पाता है।

यूनेस्को, पेरिस में भारत के राजदूत रुचिरा कंबोज ने गर्व के साथ ट्वीट कर बताया कि 'आज तक पहले ऐसा कभी नहीं हुआ जब पूरे कॉन्फ्रेंस ने साथ मिलकर कोई योगासन किया हो, लेकिन आज सभी ने पहली बार योगिक शवासन किया।' उन्होंने बताया कि यूनेस्को की बैठक में सर्वसम्मति से योग को अमूर्त सांस्कृतिक वैश्विक विरासत घोषित किया गया। ऐसा करने के लिए प्रस्ताव को १०० प्रतिशत वोट मिले। ■

प्रधानमंत्री मोदी ने शिवाजी स्मारक का शिलान्यास किया

मुंबई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने २४ दिसम्बर को मुंबई के तट के पास शिवाजी महाराज स्मारक का शिलान्यास किया। १६२ मीटर के इस भव्य स्मारक की लागत ३६०० करोड़ रुपए आएगी। मोदी दक्षिणी मुंबई में गिरगाम चौपाटी बीच से होवरक्राफ्ट से स्मारक स्थल तक गए जो तट से करीब डेढ़ किलोमीटर दूर है। उनके साथ राज्यपाल विद्यासागर राव, मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे भी थे।

प्रधानमंत्री ने अरब सागर में भव्य स्मारक के निर्माण की सांकेतिक शुरूआत करते हुए विशिष्ट स्थल पर जलपूजन किया। राज्य सरकार के अनुसार यह स्मारक दुनिया में अपनी तरह का ऐसा सबसे ऊंचा ढांचा होगा। होवरक्राफ्ट पर शिवाजी के वंशज उदयनराजे भोसले और संभाजी राजे भी थे। ये दोनों सांसद हैं।

महाराष्ट्र के सीएम देवेन्द्र फडनवीस ने बताया कि ये समुद्र के अंदर दुनिया का सबसे बड़ा स्मारक होगा। जानकारी के अनुसार मुंबई के नरीमन प्वाइंट से ३ किमी अरब सागर के अंदर एक चट्टान पर ये स्मारक बनाया जाएगा। जिसका नाम छत्रपति शिवाजी मेमोरियल होगा। ■

प्रतियोगी परीक्षाओं में अनिवार्य हो सकता है आधार कार्ड

नई दिल्ली। संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जेईई) में आधार कार्ड को अनिवार्य बनाने के बाद सरकार अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में भी इसे अनिवार्य करने पर विचार कर रही है। मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावडेकर ने बताया कि फिलहाल, आईआईटी जेईई में आधार कार्ड को जरूरी कर दिया गया है। सरकार का यह कदम परीक्षा में होने वाली धांधली को रोक देगा।

सरकार प्रतियोगी परीक्षाओं में अन्य सुधार की योजना भी बना रही है। केंद्र योजना बना रहा है कि जिन परीक्षाओं को अब तक सीबीएसई करवाता आ रहा है, अब उन सभी परीक्षाओं को विशेष तौर पर एक अलग संस्था 'राष्ट्रीय परीक्षण संस्थान' करवाएगा। ■

अग्नि-५ मिसाइल का सफल परीक्षण

लंबी दूरी की सतह से सतह तक मार करने वाली बैलिस्टिक मिसाइल, अग्नि-५ का २७ दिसम्बर को सुबह ११ बजे डीआरडीओ द्वारा ओडिशा के ड अब्दुल कलाम द्वीप से सफल परीक्षण किया गया। मिसाइल की परीक्षण क्षमता ने देश की स्वदेशी मिसाइल क्षमताओं की प्रतिरोधक क्षमता का स्तर बढ़ा है। सभी रडार, ट्रैकिंग सिस्टम और रेंज स्टेशनों ने इसकी उड़ान प्रदर्शन पर नजर रखी और मिशन के सभी उद्देश्यों को सफलतापूर्वक हासिल किया गया। यह अग्नि-५ मिसाइल का चौथा परीक्षण था और रोड़ मोबाइल लांचर पर एक कैनिस्टर से यह दूसरा परीक्षण था। सभी चार मिशन सफल रहे हैं।

राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने रक्षा अनुसंधान विकास संगठन को इस सफलता परीक्षण पर बधाई दी है। उन्होंने कहा है कि इस मिसाइल से भारत की सामरिक क्षमता बढ़ेगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अग्नि-५ के सफल परीक्षण के लिए डीआरडीओ को बधाई देते हुए कहा कि यह डीआरडीओ और उसके वैज्ञानिकों की कड़ी मेहनत का नतीजा है जिस पर प्रत्येक भारतीय को गर्व है। इससे सामरिक रक्षा क्षमता में शानदार बढोत्तरी हुई है। रक्षा मंत्री श्री मनोहर पर्रिकर ने भी अग्नि-५ के सफल परीक्षण के लिए डीआरडीओ को बधाई दी। ■

कार्टून इज्जत के रखवाले -- मनोज कुरील

मोदी ने शुरू किया 'भीम' एप

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने डिजिटल लेन-देन को बढ़ावा देने के सरकार के १०० दिनों के कार्यक्रम डिजिधन मेला में खुद शिरकत की। पीएम मोदी (शेष पृष्ठ २५ पर)

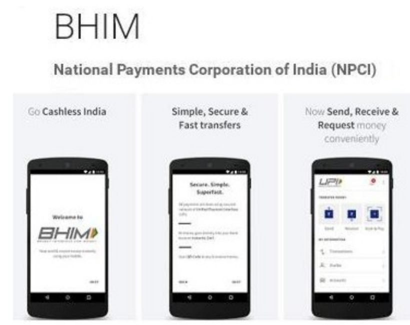

सुभाषित

लालयेत् पंचवर्षाणि दशवर्षाणि ताडयेत्।
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रं मित्रवदाचरेत्।। (चाणक्य नीति)

अर्थ- पाँच वर्ष तक पुत्र को लाड़-प्यार दें। पाँच वर्ष के बाद दस वर्षों तक डाँट फटकार के रखें। सोलह वर्ष का होने के बाद पुत्र के साथ मित्र जैसा व्यवहार करें।

पद्यार्थ- पाँच वर्ष लालन करें, ताड़न दस तक जान।
हो सुत सोलह वर्ष का, मित्र उसे ले मान।।

(आचार्य स्वदेश)

सम्पादकीय

पटरी पर अर्थव्यवस्था

८ नवम्बर नोटबंदी की घोषणा के बाद प्रधानमंत्री मोदी द्वारा दिया गया ५० दिन का समय समाप्त हुआ और जैसा कि उन्होंने आश्वासन दिया था अर्थव्यवस्था पटरी पर लौटने लगी है। नोटबंदी के प्रारम्भ में अचानक नकदी की कमी हो जाने से आम जनता को काफी कष्ट हुआ और उन्हें नोट पाने के लिए बैंकों की लाइनों में भी लगना पड़ा। अब वह समय बीत गया है और बैंकों में ही नहीं एटीएमों में भी मनचाहे नोट पर्याप्त मात्रा में मिल रहे हैं।

हालांकि लाइनों में लगना हमारे देश की जनता के लिए कोई नई बात नहीं है। दशकों से ही वह राशन की दुकानों से लेकर सिनेमा घरों की टिकटों की लाइनों में बिना किसी शिकायत के खड़ी रही है। लेकिन इस बार नोटों के लिए लाइन में खड़े होने को बिकी हुई मीडिया ने इस तरह प्रचारित किया जैसे उन पर कोई आसमान टूट पड़ा हो। हमें धन्यवाद देना होगा देश की जनता को कि उसने प्रधानमंत्री के इस फैसले का महत्व समझते हुए धैर्यपूर्वक लाइनों में खड़े रहना उचित समझा बजाय सड़कों पर आकर हुड़दंग करने के। भले ही इसके लिए मीडिया और विरोधी दलों ने उनको बहुत भड़काया, परन्तु वे उनके बहकावे में नहीं आये।

जनता ने विरोधी दलों को उचित जबाब तो देश के विभिन्न भागों में हुए उपचुनावों और स्थानीय निकायों के चुनावों में दिया, जिनमें लगभग सभी जगह विरोधी दलों को मुँह की खानी पड़ी और भाजपा के उम्मीदवार जीते।

मीडिया और विरोधी दलों के साथ उन स्वयंभू अर्थशास्त्रियों को भी धूल चाटनी पड़ी है जो नोटबंदी के कारण देश की अर्थव्यवस्था पर आसमान टूट पड़ने की भविष्यवाणियां कर रहे थे। उनके अनुमानों के विपरीत इस समय भी देश की अर्थव्यवस्था ७.२ प्रतिशत की गति से आगे बढ़ रही है, जबकि दुनिया के अनेक बड़े देशों की अर्थव्यवस्था घिसट रही हैं। अब उन अर्थशास्त्रियों को अपने ज्ञान पर पुनः विचार करना चाहिए और मोदी जी से क्षमा मांगनी चाहिए।

भारत सरकार के नोटबंदी के साहसिक निर्णय की चर्चा देश में ही नहीं विदेशों में भी खूब हुई है। कुछ देशों में इसकी नकल की भी कोशिश की गयी, परन्तु जैसी दृढ़ता और योजना भारत सरकार ने दिखायी वैसी उनमें नहीं रही। इस कारण वहां नोटबंदी असफल रही। वेनेजुएला नामक देश ने बड़े नोट बंद करने का साहस दिखाया परन्तु वहां की जनता ने उसे स्वीकार नहीं किया और बड़े पैमाने पर लूटपाट और दंगे किये, जिससे बाध्य होकर वहां की सरकार को दो दिन बाद ही नोटबंदी वापस लेनी पड़ी। हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान में भी भारत की तरह बड़े नोट बंद करने पर विचार हुआ और वहां के बुद्धिजीवियों के एक समूह ने इसके लिए पाकिस्तान सरकार को सलाह भी दी, परन्तु सरकार ने उसको स्वीकार नहीं किया। स्पष्ट है कि या तो उनमें ऐसा करने का साहस नहीं था, या वे स्वयं भ्रष्टाचार और कालेधन के समुद्र में नाक तक डूबे हुए हैं, जिससे वे उबरना ही नहीं चाहते।

हमारे सौभाग्य से हमारे पास नरेन्द्र मोदी जैसे प्रधानमंत्री हैं, जो भ्रष्टाचार की बुराई से कोसों दूर हैं और जिनकी सदाशयता तथा ईमानदारी पर देश की जनता को कोई सन्देह नहीं है। मोदी जी सफल हों, यह अब हमारा दायित्व है।

-- विजय कुमार सिंघल

आपके पत्र

एक और सफल अंक के संपादन हेतु हार्दिक बधाई एवं प्रेषण हेतु हार्दिक आभार। **- पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'**

जय- विजय दिसम्बर अंक मिला. सभी स्तम्भ सहज, पठनीय और प्रेरक हैं. आपका धन्यवाद. विश्व, देश के नए रचनाकारों से मैं जुड़ी. आभार. **- मंजु गुप्ता**

जय विजय का अंक प्राप्त हुआ। हर बार की तरह बेहद खूबसूरत अंक, मेरी कविता को स्थान देने हेतु आपका बहुत बहुत आभार।

- अमित कुमार अम्बष्ट 'आमिली'

पत्रिका के लिए धन्यवाद। - **प्रदीप कुमार तिवारी, अभिषेक शर्मा, दयानन्द सालुंके, दीपक गुप्ता, महेश कुमार कुलदीप 'माही'**

(सभी कृपालु पत्र-लेखकों का हार्दिक आभार! - सम्पादक)

आप अद्वितीय हैं!

शालिनी तिवारी

अद्वितीय यानी जिसके जैसा दूसरा न हो। इसे ही अंग्रेजी में यूनिक (Unique) भी कहा जाता है। खैर यह बिल्कुल सच भी है कि दुनिया का प्रत्येक प्राणी अद्वितीय है। यकीन मानिए आप जैसा न कोई इस दुनिया में हुआ है और आने वाले वक्त में न होगा ही। जरा गौर कीजिए, क्या इस दुनिया के सम्पूर्ण जड़ चेतन में कभी भी दो चीजें पूर्णतः एक जैसी दिखाई दी हैं? शायद नहीं। परमात्मा ने प्रत्येक को एक अद्वितीय सामर्थ्य देकर अलग-अलग कार्य के लिए भेजा है। कुल मिलाकर जीवन के मर्मों को समझने के लिए हमें अपनी अन्तःचेतना को केन्द्रित करना ही होगा। शायद यही वजह है कि सदियों से आज तक योग साधना में ध्यान को विशेष महत्व दिया गया है। अर्थात जब हम स्वयं से रूबरू हो जाएंगे, तो हमें जीवन में भौतिक लक्ष्य तलाशने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। हम स्वतः जीवन के मूल उद्देश्य को समझकर सन्मार्ग की ओर अग्रसर हो जाएगें।

गौरतलब है कि आज अत्याधुनिकता के दौर में हम सारी दुनिया को जानने समझने की बात करते हैं और उसके लिए हर सम्भव प्रयास भी करते हैं। इतना ही नहीं, सच यह भी है कि समूची दुनिया गूगल-मय हो गयी है। मानो गूगल नाम के परिन्दे ने समूचे जड़-चेतन को अपने आप में समेट लिया है। यकीनन हम सब गूगल उपयोग करने में बड़ा गर्व महसूस करते हैं, परन्तु उसके मूल को जानने की कभी कोशिश ही नहीं करते, जिसने ऐसे अनोखे गूगल का आविष्कार किया। निश्चित रूप से वह भी हम जैसा मानव ही होगा। परन्तु उसमें और हममें विशेष अन्तर यह है कि उसने स्वयं की क्षमता और ऊर्जा को समझा। न जाने आज हम लोग क्यूँ दिन प्रतिदिन वास्तविकता से परे होकर काल्पनिक और क्षणिक भौतिकता में मशगूल होते जा रहे हैं।

एक हास्यास्पद बात यह है कि जो स्वयं को नहीं समझ सकता, वो दुनिया को कितना समझ पाएगा? असल में हमारे जीवन यात्रा की शुरूआत स्वयं को समझने से होनी चाहिए। कई बार हमने देखा है कि जब लोग झगड़ते है तो कहते हैं कि तू मुझे नही जानता कि मै कौन हूँ और क्या कर सकता हूँ? इसके जवाब में सामने वाला भी यही कहता है। वास्तविकता तो यह है कि वो दोनों स्वयं को नहीं जानते और न ही जानने की कोशिश करते हैं।

जरा दिमाग की रील को पीछे चलाइए। कुछ वर्ष पहले आप एक पराक्रमी योद्धा थे और आपने अपने पराक्रम से वह युद्ध जीता भी था। वो भी आपकी जिन्दगी का एक पल था, जब आप स्वयं को चौतरफा मुसीबतों से घिरा पा रहे थे। उस वक्त आपके सारे मौकापरस्त हमदर्दियों ने आपसे दूरी बना ली थी। इन सबके बावजूद आप रण में अकेले खड़े थे। यह वही पल था, जिस वक्त आप खुद को क्षण मात्र के लिए समझ पाए थे। नतीजा भी साफ रहा कि आप विजयी हुए। घबराइए नहीं, अड़िग रहिए, कुछ नया सीखते हुए आगे बढ़ते जाइए, मुसीबतें जीवन में अन्तःशक्तियों को

(शेष पृष्ठ २६ पर)

काला धन्+धा

मनोज पाण्डेय 'होश'

भला हो हमारी मौजूदा सरकार का कि वो हमें आये दिन ऐसे मुद्दे देती रहती है जिस पर राष्ट्रीय स्तर पर बहस आवश्यक है, जैसे असहिष्णुता, राष्ट्रीयता, देशद्रोह बनाम देशभक्ति, सर्जिकल स्ट्राइक, विदेशी संबंध, राजनैतिक चरित्र, सब्सिडी का हक, शिक्षण संस्थान, कला से जुड़े लोगों की सुचिता, शहादत, मान-अपमान आदि आदि। इस बार काला धन का मुद्दा प्रस्तुत है जो विमुद्रीकरण की कोख से जन्मा है।

काले धन पर चर्चा-परिचर्चा का दौर चल रहा है। स्थिति इतनी विकट है कि रिश्तों के पार्टीशन दरकने लग गये हैं। कई बार यह भी देखने में आया है कि काले का 'क्या और क्यों' समझे बगैर लोग तोपें तान लेते हैं। यह सब देखते हुए मैंने सोचा कि बहस में कूदने से पहले इस काले की करतूत ठीक से समझ ली जाय तो अच्छा है। काला धन क्या है? संयुक्त राष्ट्र संघ की एक व्याख्या के अनुसार वह धन जो कानूनी या गैर कानूनी तरीके से कमाया गया है लेकिन उस पर कर अदा नहीं किया गया है, काला धन कहलाता है।

इस व्याख्या से यह तो जाहिर है कि इसे भी कमाने में आपकी मेहनत लगती है और इसीलिए आप इसको सीने से लगाकर रखते हैं। कर क्या है? यह आपकी गाढ़ी कमायी का वो हिस्सा है जो आप अपने सामाजिक दायित्व के लिए और अपनी मूलभूत सुविधाओं की रचना, उनके रखरखाव और कई प्रकार की सेवाओं के लिए सरकार को अदा करते हैं। यह उचित भी है पर सब लोग उदार चरित्र नहीं होते। बहुत से लोग सिर्फ अपने लिए ही जीते हैं और कर देना उन्हें गुंडे के हफ्ते जैसा लगता है। ऐसे लोग आय छिपाने के तरह तरह के तरीके अपनाकर करमुक्त रहने का प्रयास करते हैं। ऐसे बचाये गये धन को काला धन कहते हैं।

इस पूँजी का रंग रूप तो सामान्य ही होता है, बस इस पर करचोरी की काली छाया होती है। समझदार ऐसे धन को छद्म पूँजी में निवेश करके रखते हैं और कम अक्ल रुपये के रूप में अपनी तिजोरी में या सोफे, दीवार आदि में छुपा लेते हैं। ऐसा नहीं है कि यह पैसा चलन से बाहर रहता हो। दो नंबर की सारी लेन-देन में, क्रय-विक्रय में इसी का भुगतान होता है और एक चूहे की तरह यह इस बिल से उस बिल में टहलता रहता है। हमारे देश में इस नंबर दो के अर्थ तंत्र का आकार लगभग असली अर्थ तंत्र के बराबर माना जा रहा है।

अनुमानतः यह हमारे सकल घरेलू उत्पाद का लगभग २६% है। हालाँकि, यह कई एशियाई, अफ्रीकी और दक्षिण अमरीकी देशों के मुकाबले काफी कम है पर हमारे विकासशील अर्थ व्यवस्था के लिए चिंता का विषय अवश्य है। यूँ तो कुछ एक अर्थशास्त्रियों का मानना है की गाहे बगाहे आने वाली आर्थिक मंदी के दौर से जहाँ दूसरे देश पस्त हो जाते हैं भारतीय अर्थ तंत्र इस काले धन की वजह से बच जाता है। मगर जब बात सकल घरेलू उत्पाद और प्रति व्यक्ति आय की गणना करने की आती है तो यह काला धन सारी गणित बिगाड़ देता है। सकल घरेलू उत्पाद कुल सेवा और उत्पादन का योग होता है पर जिस उत्पादन या दी गयी सेवा को छुपा लिया गया हो वह होते हुए भी गणना में नहीं आ पाता।

इसका सीधा सा उदाहरण है अपनी खरीद या ली गयी सेवा का पक्का बिल न लेना, और ऐसा कर की राशि से बचने के लिए लोग जाने-अनजाने करते रहते हैं। इसी प्रकार अपनी कमाई पर कर न देकर उस आय को आप छुपा लेना प्रति व्यक्ति आय के औसत को कम कर देता है। इतना समझने के बाद इस तथ्य को समझना आसान हो जाता है कि सरकारें जब तब इसको उजागर करने का प्रयास क्यों करती रहती हैं। एक तरफ तो सरकार की आय कम होती है तो दूसरी तरफ तमाम योजनाओं की गणना गलत हो जाती है। न चाहते हुए भी योजनाओं की आपूर्ति के लिए नया पैसा छापना पड़ता है या महँगा ऋण उठाना पड़ता है। आम तौर से जो उपाय सरकारें अपनाती हैं उनमें कर की छूट या अन्य प्रलोभन या दंड आदि का प्रयोग किया जाता है।

विमुद्रीकरण भी इसका एक तरीका है, पर कई अर्थशास्त्री इसे बहुत कारगर तरीका नहीं मानते। उनके हिसाब से इस प्रक्रिया में एक तरफ तो जन मानस को परेशानियाँ होती हैं और लागत भी बहुत आती है, जैसा कि हम देख ही रहे हैं, तो दूसरी तरफ बहुत काला धन बाहर नहीं आ पाता है। बड़े चोर नकदी से दूर रहते हैं और विदेशी मुद्रा, विदेशी या छद्म कंपनियों में निवेश या विदेशी खातों में धन को रखते हैं इसीलिए उन पर विमुद्रीकरण का कोई असर नहीं पड़ता। छोटे चोर पहले तो नकदी को सोने आदि में बदलने की कोशिश करते हैं और अगर न कर पाये तो दंड और बदनामी से बचने के लिए उसे नष्ट कर देते हैं। मुश्किल से १ या २% लोग ही टैक्स देकर कुछ न कुछ बचाने की सोचते हैं।

काला धन किसके पास होता है? वह व्यापारी जो अपने उत्पादन या बिक्री का एक हिस्सा छुपा लेता है, वह विक्रेता जो बिक्री का सही मूल्य नहीं बताता जैसे जमीन या मकान आदि की बिक्री, वह सरकारी अधिकारी या सेवादार जो अपनी सेवा के बदले गैर कानूनी कमीशन या घूस लेता है जिसे वो उजागर नहीं कर सकता, वह राजनीतिक व्यक्ति या दल जो अपने कोष में छद्म अनुदान की स्वीकृति देता है और वह पूँजीपति जो अपनी वास्तविक आय के बड़े हिस्से को अवास्तविक खर्च दिखाकर छुपा लेता है। इसको रोकने के बहुत प्रयास किये जाते रहे हैं पर, क्योंकि इंसान मूलतः लालची होता है तथा और-और की उसकी भूख नहीं मरती, वह धन कमाने के नित्य नये सही या गलत आयाम रचा करता है। स्वभावतः उसे बाँटकर खाने की भी आदत नहीं है, इसीलिए कर की चोरी करता है।

इसका एक तरीका यह है कि कराधान को हटा लिया जाय तो काले धन की समस्या भी समाप्त हो जाएगी। फिर प्रश्न यह उठता है कि तमाम सामाजिक सुविधाओं को कैसे पोषित किया जाय क्योंकि इसके बगैर तो सारा अर्थ तंत्र ही समाप्त हो जाएगा जो समाज के काम काज पर ही टिका हुआ है। दूसरा यह कि मनुष्य को कर चोरी करने का मौका ही न दिया जाय। मनुष्य अपने आप तो सरकार को अनुदान देगा नहीं इसलिए उसे किसी न किसी प्रकार साझाकोष के लिए बाध्य करना ही पड़ेगा। यहाँ हम कुछ ऐसे तरीकों पर चर्चा करते हैं जो कई अर्थशास्त्रियों के हिसाब से कारगर होते हुए भी राजनैतिक कारणों से सरकारें अपनाने से हिचकती रही हैं।

एक तरीका है आयकर को पूरी तरह से हटाना। इसके स्थान पर खर्च को निशाना बनाया जाय। लोगों को कमाने की पूरी छूट होने से आर्थिक कारोबार का भी खूब विकास होगा पर, क्योंकि अब लोग कम कर देने के चक्कर में खर्च को कम करने की कोशिश करेंगे तो जरूरत से ज्यादा उत्पादन होना स्वतः ही मर्यादित हो जाएगा। व्यापारियों के टर्नओवर पर कराधान करने से वे अपनी आय नहीं छुपा पाएँगे। राजनीतिक दलों और एनजीओ के नकद अनुदान को समाप्त कर देने से वे छद्म अनुदान नहीं जुटा पाएँगे। योजनाओं के ठेके ऑनलाइन करने से पारदर्शिता बढ़ेगी और कमीशन-खोरी स्वतः समाप्त हो जाएगी। जमीन व मकान की नकद रजिस्ट्री समाप्त करने से काले धन पर नकेल लग जाएगी। खर्च पर कराधान से घूस द्वारा एकत्रित राशि

(शेष पृष्ठ २९ पर)

सामान्य ज्ञान

प्रश्न

१. 'पंजाब' शब्द किस भाषा से निकला है?
२. शिव के शरीर की राख से कौन-सा राक्षस उत्पन्न हुआ था?
३. 'चरित्रहीन' उपन्यास के लेखक कौन हैं?
४. फिल्म 'नाचे मयूरी' में कृत्रिम टाँग के साथ नर्तकी का रोल किसने किया था?
५. पेंसिल सेल का वोल्टेज कितना होता है?
६. स्वतंत्रता सेनानी रामचन्द्र पांडुरंग को हम किस नाम से जानते हैं?
७. महाभारत के अनुसार माद्री किसकी पत्नी थी?
८. रामायण में जटायु के भाई का नाम क्या था?
९. १९७७ में किसके नेतृत्व में जनता पार्टी की सरकार बनी थी?
१०. 'विनायक' और 'लम्बोदर' किस देवता के नाम हैं?

उत्तर : १. फारसी; २. भस्मासुर; ३. शरत चन्द्र चटर्जी; ४. सुधाचन्द्रन; ५. १.५ वाट; ६. तात्या टोपे; ७. पांडु; ८. सम्पाती; ९. मोरारजी देसाई; १०. गणेश।

विद्यार्थी को पतन की ओर ले जाती माता-पिता की महत्वाकांक्षा

पंकज 'प्रखर'

यह लेख स्वर्गीय हरिवंश राय बच्चन की पंक्तियों से शुरू कर रहा हूँ- 'असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो, क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो। जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम, संघर्ष का मैदान छोड़ कर मत भागो तुम। कुछ किए बिना ही जय-जयकार नहीं होती, कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।'

आज का विद्यार्थी बहुत सहमा और तनावग्रस्त है वह असमंजस की स्थिति में है कि एक ओर तो उसके माता-पिता की उससे आकांक्षाएं है और दूसरी ओर उसका सीमित बुद्धिकौशल। इन दोनों के बीच फंसा विद्यार्थी बहुत अकेला और अपने प्रति हीनभावना से ग्रस्त है। इन दोनों ही दोषों के कारण विद्यार्थी या तो आत्महत्या कर रहे है या फिर लक्ष्य प्राप्ति का शॉर्टकट अपना रहे हैं। ये बड़े दुख का विषय है। जीवनस्तर बढ़ने के साथ-साथ भौतिक प्रतिस्पर्धा भी अपने चरम पर है, जिसका दुष्प्रभाव तनावयुक्त जीवनशैली से आत्महत्या के बढ़ते चलन तक देखने में आ रहा है।

समाज में आत्महत्या जैसा कदम अभिशाप बन गया है। आजकल अभिभावक भी स्वयं विद्यार्थियों पर पढ़ाई और करियर का अनावश्यक दबाव बनाते हैं। वे ये समझना ही नहीं चाहते कि प्रत्येक विद्यार्थी की बौद्धिक क्षमता भिन्न होती है और जिसके चलते हर छात्र कक्षा में प्रथम नहीं आ सकता। बाल्यकाल से ही विद्यार्थियों को यह शिक्षा दी जानी चाहिए कि असफलता ही सफलता की सबसे बड़ी कुंजी है। यदि बच्चा किसी वजह से असफल होता है तो वह पारिवारिक एवं सामाजिक उलाहने के भय से आत्महत्या को सुलभ मान लेता है। जिसके बाद वे अपने परिवार और समाज पर प्रश्नचिह्न लगा जाते हैं। विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की कमी भी इसका एक बहुत बड़ा कारक है।

आज खुशहाली के मायने बदल रहे हैं। अभिभावक अपने बच्चे को हर क्षेत्र में अव्वल देखने व सामाजिक दिखावे के चलते उन्हें मार्ग से भटका रहे है। एक प्रतिशत के लिए यह मान लिया जाए कि वे विद्यार्थी कुंठाग्रस्त होते है जिन परिवारों में शिक्षा का अभाव होता है किन्तु वास्तविकता यह है कि गरीब विद्यार्थी फिर भी संघर्षपूर्ण जीवन में मेहनत व हौसले के बलबूते अपनी मंजिल पा लेते हैं, किन्तु अक्सर धन वैभव से भरे घरों में अधिक तनाव का माहौल होता है और एक दूसरे से अधिक अपेक्षाएं रखी जाती हैं। साधन सम्पन्न होने के बावजूद युवा पीढ़ी में आत्महत्या के आंकड़े बढ़ते जा रहे हैं। वास्तव में खुदखुशी कोई मानसिक बीमारी नहीं मानसिक तनाव व दबाव का परिणाम होता है। असंतोष इसका मुख्य कारण है। कुछ वर्षों से १४ से १७ वर्ष के विद्यार्थी आत्महत्या को अपना रहे हैं। परीक्षाओं का दबाव सहपाठियों द्वारा अपमान का भय, अध्यापकों की लताड़ या व्यंग्य बर्दाश्त न करने की क्षमता उन्हें इस मार्ग की ओर धकेल रही है।

शहरों की भागदौड़ भरी जिंदगी और पाश्चात्य प्रभाव के कारण विद्यार्थी समय से पहले ही परिपक्व हो रहे हैं जिसके फलस्वरूप वे अपने निर्णय स्वयं लेना चाहते हैं और अपने द्वारा लिए गए निर्णयों के अनुसार आशातीत परिणाम प्राप्त न होने पर आत्महत्या का निर्णय ले लेते हैं। यही नहीं माता पिता की आकांक्षाओं की पूर्ति का दबाव वे अपनी जिंदगी पर न सह पाने और सही निर्णय न लेने की स्थिति में उन्हें यह मार्ग सुगम दिखता है। इस संदर्भ में दोष उन अभिभावकों का है जो अपनी विद्यार्थियों की प्रदर्शनी लगाना चाहते हैं मानो वह भी आज की उपभोक्तावादी संस्कृति के चलते एक वस्तु हो और उन्हें जीवन के हर क्षेत्र के लिए अधिक से अधिक मूल्यवान बनाया जा सके। यही कारण है कि आज परिवार अपने मौलिक स्वरूप से भटककर एक प्रकार की होड़ में लगे हुए हैं।

अभिभावक को समझना होगा की विद्यार्थी मशीन या रोबोट नहीं है। विद्यार्थियों को बचपन से अच्छे संस्कार दिये जाने चाहिए ताकि वे अपनी मंजिल खुद चुनें, किन्तु आत्मविश्वास न खोएं। विद्यार्थियों को सहनशील, धैर्यवान, निर्भीक, निर्मल, निश्चल बनना है तो स्वतः अपने स्वभाव को परिवर्तित करें। शिक्षा का अंतिम लक्ष्य सुंदर चरित्र है, यह मनुष्य के व्यक्तित्व के सभी पहलुओं का संतुलित विकास करता है। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों जैसे सत्य, प्रेम, धन, अहिंसा और शांति का विकास होता है। आज की शिक्षा विद्यार्थियों को कुशल विद्वान एवं कुशल डॉक्टर, इंजीनियर या अफसर तो बना देती है, परंतु वह अच्छा चरित्रवान इंसान बने यह उसके संस्कारों पर निर्भर करता है।

मनुष्य को अपने जीवन के उच्च लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दो प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता होती है जो बच्चों को अवश्य दें। सांसारिक शिक्षा उसे जीविका और आध्यात्मिक शिक्षा उसके जीवन को मूल्यवान बनाएगी। बच्चों को भी ध्यान रखना होगा कि जिंदगी बहुत कीमती है और वे जिस समाज में रहते है उसके प्रति उनकी भी नैतिक जिम्मेदारी है, जिसका निर्वहन करना उनका फर्ज है। वे जिस समाज में रहते हैं, उसका सम्मान करें क्योंकि उस समाज ने उनके लिए बहुत कुछ किया है और सामाजिक प्राणी होने के नाते आप अपनी जिम्मेदारी निभाए बिना कैसे इस दुनिया से चले जाना चाहते हैं? सिर्फ इसलिए कि आप चुनौतियों से घबरा गए हैं। जीवन को चुनौती समझकर दृढ़ता से परीक्षा की तैयारी करें और कठिनाई के समय अपने शिक्षक-अभिभावक को अपना मित्र समझ अपनी परेशानी उन्हें बताए और स्वयं पर हीनता के भाव कदापि न आने दें। आत्मविश्वासी विद्यार्थी ही ऊँचे जीवन लक्ष्यों को प्राप्त कर पाते हैं। ■

स्नान की सही विधि

विजय कुमार सिंघल

अधिकांश लोग स्नान को एक फालतू कर्मकांड की तरह निबटाते हैं, जबकि इसे स्वास्थ्य प्राप्ति और उसके रखरखाव के एक अनिवार्य साधन की तरह किया जाना चाहिए। नित्य स्नान करना स्वास्थ्य की कुंजी है। जिस दिन हम स्नान नहीं करते, उस दिन पूरा शरीर शिथिल रहता है। इसी से पता चलता है कि स्नान कितना महत्वपूर्ण और आवश्यक है। यहाँ मैं स्नान की सही विधि बता रहा हूँ, जिसका पालन मैं स्वयं अनेक वर्षों से कर रहा हूं।

स्नान के लिए जल

सबसे पहली बात तो यह है कि नहाने के लिए जो जल लिया जाये, वह शरीर के तापमान से थोड़ा ठंडा होना चाहिए। किसी भी मौसम में अधिक गर्म और अधिक ठंडे जल से स्नान करना हानिकारक है। सर्दी के मौसम में पानी बहुत ठंडा होता है। उसमें उतना ही गर्म पानी मिलाना चाहिए कि पानी का तापमान शरीर के लगभग बराबर हो जाय अर्थात् हाथ डुबोने पर ठंडा और गर्म न लगे। गर्म जल से स्नान करना मुख्य रूप से त्वचा और सम्पूर्ण स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक होता है। ऐसा करने वाले व्यक्तियों को सिर के बाल झड़ने की शिकायत नहीं करनी चाहिए, क्योंकि इसका कारण वे स्वयं हैं।

स्नान के लिए जल लगभग १२ से १५ लीटर की मात्रा में एक टब या बाल्टी में भर लेना चाहिए। उसमें से किसी लोटे या मग से जल निकालकर शरीर पर डालना चाहिए। कई लोग पाइप या फव्वारे से स्नान करते हैं। इससे भले ही उनको कुछ खुशी मिलती हो, पर स्वास्थ्य की दृष्टि से इससे स्नान का पूरा लाभ नहीं मिलता। दूसरी ओर इससे बहुमूल्य जल भी नष्ट होता है। अतः हमेशा बाल्टी में पानी लेकर स्नान करना चाहिए।

शरीर को गर्म करना

यदि स्नान से पूर्व शरीर को खाली हाथों से या किसी रूमाल जैसे सूखे कपडे से ५ मिनट तक हल्के हल्के रगड़कर गर्म कर लिया जाये, तो स्नान का लाभ अनेक गुना बढ़ जाता है।

रगड़कर शरीर को गर्म करने के बाद स्नान के लिए बैठ जाइए। पहले गले के अन्दर अँगूठा या दो

(शेष पृष्ठ २६ पर)

बेचैन आँखों को तलाश है/तुम्हारी एक झलक पाने की
निहार रही हूँ राहें कब से/तुम्हारे लौट आने की
दूर जाकर टिकी हैं निगाहें/तुम्हें ढूँढ रही
क्या देखूँ कुछ और कि
तुम्हारे सिवा कुछ और
नजर आता नहीं
बहुत हो गया इन्तजार
आँखें भी है बुझी बुझी
आ जाओ अब पास मेरे
कि तन्हा अब जिया जाता नहीं!

-- बबली सिन्हा

बहुत मोहतबर और सूझवानों की महफिल से आई थी
बहुत कुछ सुना/विचारशील, तर्कशील, तर्कयोग्य
मेरे तर्कों को भी तो सराहा गया
खुश थी सुधीजनों की संगत कर
परन्तु रात मुझे यह स्वप्न क्यों कर आया
कि मैं एक सरोवर में से
नहा कर निकली हूँ
और मेरे तन से
चिपकी हैं कई जोंक
मुझे लिजलिजा सा लग रहा है
मुझे डर लग रहा है!

-- रितु शर्मा

जिन्दगी की रात में लिखा है मैंने/एक आखिरी प्रेम गीत
अगर सुनाई दे तुम्हें/तो सुन लेना !
इसे सुन ने की भी/एक शर्त है मगर !
किसी के कहने-सुनने से नहीं
अगर मन से सुनो तो ही सुनना/यह मेरा प्रेम गीत
नहीं सुनाई देगा/किसी हृदय हीन को
हृदय तल के/आखिरी तल से उभरी टीस से निकला
यह गीत तुम्हें सुनाई दे तो ही सुनना
जिंदगी की रात है
अब भोर का क्या मालूम
हो भी या नहीं
भोर के तारे में मेरा गीत
सुनाई दे तो सुन लेना

-- उपासना सियाग

मेरी बेटी सबसे निराली है
कभी खामोश तो कभी/पानी की कलकल बन जाती है
गयी है शायद बाप के ऊपर
तभी दिल से नरम/पर दिखावे की पत्थर बन जाती है
पर जब न रह पाए अपने आप में
तो कहते हैं माँ पे चली गयी
क्योंकि अक्सर वो चाहकर भी
रोक नही पाती आंसुओं को
पल में पत्थर से मोम बन जाती है
मेरी बेटी सच में निराली है
कभी शांत सरोवर/तो कभी हलचल बन जाती है
कभी खामोश तो कभी/पानी की कलकल बन जाती है

-- महेश कुमार माटा

आओ लौट चलें गांव की ओर
जहां न हो कोई भारी भरकम सड़क
हो जहां सड़क के किनारे, नत्थू चाचा के हरे भरे खेत
मधुर सुखद हवा का झोंका हो,
हो प्यार मुहब्बत, न कहीं धोखा हो
श्वेत सुगंधित मीठा सरस पेय हो,
दृष्टिकोण समान हो, न कोई हेय हो
घने वृक्षों की शीतल मंद छाया हो,
सब अपने हों, न कोई पराया हो
आओ लौट चलें गांव की ओर
जहां प्रेम से लिखा गया हो हर हरफ
अम्मा की खटिया और बिछौना हो,
गुड़ की डली, मिट्टी का खिलौना हो
चिंता फिक्र से दूर खुली सांसें हों
ईमानदारी का काम हो न कहीं झांसे हों
गुल्ली-डंडा और कबड्डी का खेल हो,
मनसुख, अमन और आमिर में मेल हो
सरसों का साग, मक्के की रोटी हो,
चैन की नींद हो दुनिया बहुत छोटी हो
आ लौट चलें अपने सपनों की तरफ,
जहां प्यार से पिघल जाती हो बरफ
मेहनत की मीठी फसल हो, न खटास हो
दिल में नजदिकयों का गर्म अहसास हो
आओ लौट चलें अपने गांव की तरफ
दुनिया से न्यारे स्वर्ग की तरफ

-- निशा गुप्ता

प्रशंसा सुनकर/लोग फूलकर कुप्पा होजाते हैं
एक क्षण में अपनी औकात भूल जाते हैं
चलते हैं जमीन पर/सोचते हैं आकाश की
पल से पल में ही/क्या से क्या हो जाते हैं
प्रशंसा एक बला है,पर/अपने आप में एक कला है
प्रशंसा ने बड़े-बड़े गुल खिलाए/दिन में ही तारे दिखाए
मूर्ख को पंडित बनाती प्रशंसा/पंडित को उल्लू बनाती प्रशंसा
दिल की कली खिलाती प्रशंसा/पल में आँसू सूखाती प्रशंसा
तुम भी प्रशंसा का बाण चलाओ
प्रशंसक बन निशाना लगाओ
कांटे हटाकर गुलाब खिलाओ
दुनिया में आए तो कर कुछ दिखाओ!

-- सुधा भार्गव

जिन्दगी का यह कैसा खेल/कभी खुशी रहती है
कभी आता है गम/अन्तर्मन में अन्तर्द्वन्द्व
दे जाता है एक ऐसी पीड़ा/जो असहनीय
हृदय तल पर उपस्थित/एक समय की सीमा में
आबद्ध हो जाता है
जीवन में विद्यमान
बिखरीं हुई घटनाओं को
एक सूत्र में क्रमबद्ध करते हैं
पृथक विछिन्नता चित्र उपस्थित
कर जाती है यह जिन्दगी!

-- रमेश कुमार सिंह

प्रेम अथाह छुपा दिल में दिखाना न आए ये आदत है
रिश्ता तुमसे जुड़ा रूह से नहीं हो मेरे शिकायत है
तुम बिन जीना लगे मुश्किल
धड़कनों ने की शरारत है
ये झुकी पलकें शरमाते नयन
कहें सजना इजाजत है
महका दो साँसें खुशबू से अपनी
ये जिंदगी तेरी अमानत है

-- अंजु गुप्ता

ओस बैठी है दूब की भूजा पर
वो ठिठुरती नहीं सबल खड़ी है फिर भी
सीना ताने वह डरती नहीं हिमखंडों से
रहती है जुड़कर जमीन से/उसका शक्तिपुंज है एकता में
वह फैली है मैदानों में सुदूर
सहती है सारी ऋतुओं का बदलाव
रवि के सामने रहती है सीना ताने
दूब है, यह दूब कभी डरती नहीं
कंधे मजबूत हो जाते हैं सुना है
दूब से, देखा भी है शरद में
कुछ इसी तरह से आना जाना रहता है
परिस्थितियों का जीवन में
मगर जो रहता है सबल खड़ा दूब सा
वो देता है जीवन को सार्थकता
मजबूरियों की ठिठुरन और मुसीबतों की तपन से
नहीं डरता है वो मानव जो रहता है दूब सा
और इसी तरह फैल जाती है/कीर्ति चारों दिशाओं में
जो देता है प्रेरणा आने वाली पीढ़ियों को/सदियों तक

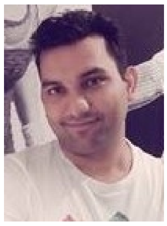

-- परवीन माटी

छू गयी दिल को मेरे/तेरी यही दिल लुभाने की अदाएं
कितना नेह है भरा दिल में तेरे/क्या मैं इतनी मीठी हूँ
या फिर ये सिर्फ एक वहम है मीठा सा
गर ये सच है तो क्यों दुखाते हो दिल मेरा
क्या मेरे दु:ख से तुम्हें तनिक भी पीर नहीं होती
छूना चाहती थी मैं भी आस्मां जैसे दिल को तेरे
भागना चाहती थी मैं भी कभी तेरी हंसी के साथ
शायद कुछ तो कमी थी मेरी आराधना में
जो अधूरी ही रही मेरी पूजा
पत्थर थे तुम पाषाण ही तो थे
जो कभी समझ ही न पाए मेरी व्यथा को
कोई गम नहीं ये तो प्रकृति है तुम्हारी
कभी तो नम हो ही जाएंगी आँखें तुम्हारी
जब अंधेरों में कोई दीप झिलमिलायेगा
झलक मेरी पाकर एक बूंद पानी की
आँखों से निकल कर जब पूछेगी
बताओ न क्या गलती थी मेरी
जो फेंक दिया तुमने मुझे
बारिश की एक बूंद समझकर
मैं मात्र एक बूंद ही तो नहीं थी
'वर्षा' हूँ आज भी सिर्फ तुम्हारी

-- वर्षा वार्ष्णेय

(पहली किस्त)

सीख

नीतू सिंह

'अगर आपका सेलेक्शन हो जाता है तो आपको यहाँ मुंबई आना पड़ेगा। तब आप अपनी फैमली लाइफ कैसे मैनेज करेंगे, मिस्टर सैनी?'

'सॉरी सर, मैं कुछ समझा नहीं!'

'आई मीन टू से, कि आपकी वाइफ तो दिल्ली में पढ़ाती हैं, तो क्या आप उनकी नौकरी छुड़वाकर अपने साथ यहाँ लाएंगे या, फिर...? क्या, कैसे करेंगे?'

'ओह, नहीं सर। उसे नौकरी छोड़ने के लिए तो मैं हरगिज नहीं कहूँगा। मगर हम दोनों...'

'भला क्यों? उनकी नौकरी में रखा क्या है? टेम्परी टीचर की तनख्वाह तो कुछ भी नहीं होती और आपकी अच्छी-खासी सैलरी होगी और घर के साथ-साथ आपको आने जाने की व्यवस्था दी जाएगी। वह तो आराम से आपके साथ रह सकती हैं। फिर...?'

'सॉरी सर! लेकिन बात मेरे कमाने की, मेरी वाइफ के कमाने की, अच्छी तनख्वाह या सुविधा-आराम की है ही नहीं। बात यह है कि शी इज एन इंटेलेक्चुअल। उसने भी उतनी ही मेहनत से पढ़ाई-लिखाई की है जितनी मैंने या और किसी ने भी की है। इस स्तर पर आने के बाद इंसान की कुछ इंटेलेक्चुअल नीड्स होती हैं, बौद्धिक आवश्यकताएं। ये न मिलें तो आदमी को फ्रस्टेशन होती है और मैं नहीं चाहता कि वो फ्रस्टेट हो।'

मैं यह जवाब पाकर स्तब्ध रह गया। उसका इंटरव्यू तो कुछ देर और चला। मगर मैंने सवाल पूछना छोड़ दिया था। पैनल के अन्य मेम्बर उससे सवाल पूछ रहे थे। मैं तो बस उसकी बातों की गहराई में डूबा हुआ था।

शाम का समय था। मैं बालकनी में बैठा आज का अखबार पढ़ रहा था। अक्सर ऐसा ही होता है। मैं क्या करूँ? दिन में चाहकर भी पढ़ नहीं पाता। यहाँ तक कि सोचता हूँ कार में ही ऑफिस आते-जाते पढ़ लूँ, तो सड़क के गड्ढे मन उचाट कर देते हैं। और आजकल के जीवन में तो अपने आस-पास की जानकारी इकठ्ठी करने की ऐसी होड़ लगी है, ऐसी होड़ लगी है कि जिसे यह जानकारी न हो वह निरा-निपट मूर्ख है। अरे पढ़े-लिखे होने का मतलब ही है देश-जहान की जानकारी होना।

खैर, मैं तो अखबार पढ़ रहा हूँ। बालकनी में ठंडी हवा चल रही है और उस हवा में उस चमेली की सुगंध बह रही है जो पत्नी जी ने लगाए थे। अहा हा! मुझे ऑफिस के स्ट्रेस से पूरी तरह मुक्त कर रहे हैं। उन्हें बागबानी का बड़ा शौक है। जहाँ गया हूँ खूबसूरत पेड़-पौधे की छोटी-मोटी बगिया तो उन्होंने उगा ही दी।

यह लो। मेरी पत्नी जी चाय लेकर हाजिर हुईं। वाह! क्या बात है, लगा जैसे इसी की तो जरूरत थी। माहौल और खुशनुमा हो गया। मैंने चाय लेते हुए पत्नी जी का चिंतित चेहरा देखा।

चाय की पहली ही चुस्की में सुबह का इंटरव्यू दिमाग में फ्लैश हुआ। बौद्धिक आवश्यकताएं। मेरी पत्नी भी तो पढ़ी-लिखी है, उसकी भी तो बौद्धिक आवश्यकताएं हो सकती हैं?

मैंने कभी सोचा ही नहीं। सोचना तो दूर, मैंने तो उसकी अच्छी-खासी बैंक की नौकरी छुड़वा दी, यह कहकर कि प्राइवेट नौकरी को कौन पूछता है आजकल? हालाँकि इसके पीछे मेरा अपना ही अहम छुपा था। नौजवान था, बस किसी ने समझा दिया और मैंने समझ भी लिया कि मेरे आदमी होने का क्या फायदा अगर बीवी को बाहर जाना पड़े। किसी ने समझा दिया और मैंने समझ लिया कि घर के बाहर की मेरी और घर के अंदर की उसकी जिम्मेदारी है। यह नहीं कि बाहर और अंदर की बराबर जिम्मेदारी दोनों की हो सकती थी। और इसलिए मैंने देखा कि उसे बाहर न जाना पड़े।

मैं दुःखी हुआ, इतना कि चाय की चुस्की का स्वाद मिट गया। अपना दुःख कम करने के इरादे से मैंने पत्नी से पूछा- 'क्या बात है? कुछ टेंशन में लग रही हो?'

यह एहसान कर मैं बड़ा खुश हुआ। मैंने यह अहसान पहले भी किए हैं क्योंकि अब तक यह अहसान करते समय ऐसी भावना आती थी कि जैसे उसकी टेंशन मेरी टेंशन नहीं है क्योंकि मेरी टेंशन तो घर के बाहर वाले कामों की होती है, जिसमें उसका कोई सहयोग नहीं होता। घर की किसी टेंशन में हाथ बंटाना तो दूर, पूछ भी रहा हूँ, तो एहसान ही तो कर रहा हूँ।

'पिंकी स्कूल की पिकनिक जाने की जिद कर रही है। अकेले कैसे उसे छोड़ दूँ? आज-कल कहीं किसी का भरोसा कहाँ रह गया है...?'

पत्नी ने आज्ञाकारी चारक की तरह मेरी प्रजा की सूचना मुझ तक पहुँचाई। मैं पहले तो खुश हुआ। चाय की चुस्की का स्वाद लौट आया, जैसे मुझे प्रायश्चित का कोई छोटा सा मौका मिला हो। अभी चुस्की पूरी नहीं की थी कि पत्नी ने अपनी बात पूरी की '...मगर मान ही नहीं रही है।'

मुझे फिर सुबह का इंटरव्यू याद आया। उस इंटरव्यू को याद करने के साथ ही मेरे दिमाग की कल्पना शक्ति ने ऐसी ऐड़ लगाई कि मैं दिल्ली में बैठी मिसेस सैनी की कल्पना तक कर गया, जो किसी प्राइवेट स्कूल में टीचर होंगी और जिनमें इतनी कूवत है कि वे बिना पति, बिना सहारे के (हाँ, तो पति से बड़ा सहारा कोई सहारा थोड़े ही होता है) वहाँ अपना करियर बना सके और इस, जैसा कि अभी-अभी पत्नी जी ने कहा, बिना भरोसे की दुनिया में अकेले रह सकें।

मिसेस सैनी के खयाल के साथ ही कल्पना शक्ति ने फिर ऐड़ लगाई और मैं दिमाग के धागे बुनने लगा कि पिंकी की आदर्श पढ़ाई पर हम अपना सर्वस्व त्याग रहे हैं। पैसे से लेकर मियां-बीवी का श्रम तक। फिर बड़े होकर पिंकी का किसी बड़े पद के लिए सलेक्शन होना कोई दीगर बात नहीं। ऐसे में अगर उसे दौरों और निरीक्षणों पर शहर-दर-शहर जाना पड़ा तो? हर समय तो हम मियां-बीवी उसके साथ न रहेंगे। उसे आज से ही बाहर की दुनिया में न ढकेलेंगे, तो भला आगे के लिए रास्ता कैसे तैयार होगा?

यकीन मानिए यह सब सोचने में मुझे कोई मिली सेकेंड भी न लगे होंगे और मैंने पत्नी की बात पूरी होते-होते ही, अपनी बात मुँह से टपका दी।

'क्लास के और बच्चे भी तो जा रहे होंगे न?'

'हाँ, मगर पिंकी को कभी अकेले कहीं भेजा नहीं।'

'जाने दो उसे पिकनिक पर। कभी अकेले कहीं भेजा नहीं है, तो कभी नहीं भेजेंगे क्या? कभी न कभी तो भेजना ही पड़ेगा? अभी से क्यों नहीं?'

इतना कहकर मैं अपने आपको पापमुक्त समझने लगा। मुझे लगा, अपने पुरुषत्व के नीचे अपनी पत्नी को कुचलने के पाप से मुझे इसी क्षण मुक्ति मिल गई और अपनी बेटी को आजादी देकर, मैं भी आजाद हो लिया।

मैं अपनी इस सोच के लिए मन ही मन अपनी पीठ थपथपा रहा था। अपने आप को मैं इस समय मि सैनी से भी बड़ा महसूस कर रहा था। हाँ, सोच में बड़ा, और बहुत बड़ा।

पत्नी जी ने मुझे आश्चर्य से देखा। उनके आश्चर्य ने मुझे बहुत बड़े से बहुत छोटा बना दिया, बहुत ही छोटा, आस-पास के संसार के सारे लोगों से भी छोटा। उनका आश्चर्य बहुत सरल था। मैंने ही उसे क्लिष्ट बना लिया।

उन्हें तो सिर्फ इतना आश्चर्य था कि मैंने भला पिंकी को इस भरोसे के नाकाबिल संसार में जाने के लिए कैसे छोड़ दिया?

मगर मैं उनकी आँखों के आश्चर्य के पार भी कुछ पढ़ रहा था। मैं पढ़ रहा था मेरे दोगले होने की गाली। यह भला दोहरा मापदंड कैसा? अपनी बेटी के लिए तुमने संसार के सारे पिंजरे खोल दिए। मगर किसी और की बेटी, जिसे तुम ब्याह कर लाए थे, जो तुम्हारी जिम्मेदारी थी, उसे तुमने कितने पिंजरों में कैद रखा? एक के अंदर एक, एक अंदर एक पिंजरा, जाने कितने पिंजरे?

इस एक सोच ने मुझे एकदम छोटा कर दिया, इतना छोटा जितना कि मि सैनी के पैर का अंगूठा भी न होगा। चाय की चुस्की का स्वाद फिर खतम हो गया, और चाय भी।

(अगले अंक में जारी)

कुर्बानियों की सफ में नया नाम लिख गया
दुनिया के वास्ते कोई पैगाम लिख गया
हिन्दू हूँ या कि मैं हूँ मुसलमाँ पता नहीं
था ध्यान में खुदा के मगर राम लिख गया
ये जीत प्यार की है कि नफरत की हार है
होठों से अपने आज वो इक जाम लिख गया
खूँ से चिराग मैंने जलाया था एक बार
हिस्से में मेरे तब से यही काम लिख गया
वो भ्रम था मेरे मन का 'शान्त' या कि और कुछ
यादों के जिस धुँधलके को मैं शाम लिख गया

-- देवकी नन्दन 'शान्त'

ऐसा कौन है दुनिया में जिसको गम नहीं होता
वक्त के पास भी हर जख्म का मरहम नहीं होता
चले आते हैं ये बेसाख्ता गम हों या खुशियां हों
अश्कों के बरसने का कोई मौसम नहीं होता
रजा में यार की खुद को मिटाकर रहते हैं राजी
बस्ती-ए-आशिकी में साया-ए-मातम नहीं होता
राह-ए-जिंदगी में लोग मिलते हैं बिछड़ते हैं
घड़ी भर साथ चलने से कोई हमदम नहीं होता
रोज उगता हुआ सूरज हमें पैगाम देता है
उजाला बाँट देने से उजाला कम नहीं होता

-- भरत मल्होत्रा

चाह नहीं तो आना क्या? मिलना है तो बहाना क्या?
दिल में जो है कह दो ना, ये शमआ-परवाना क्या?
कुछ ना कुछ तो बोलेगी, दुनिया से घबराना क्या?
गंध न दे जो उस गुल का, खिलना क्या मुरझाना क्या?
मेरी बात न माना पर तेरी बात वो माना क्या?
सोच रहा हूँ कौन था वो जो बोला- 'पहचाना क्या?'
गजलें अच्छी कहता है तू भी है दीवाना क्या?

-- डॉ. कमलेश द्विवेदी

कमजोर जो हैं तुम उन्हें बिलकुल सताया ना करो
खेलो हँसो तुम तो किसी को भी रुलाया ना करो
दो चार दिन यह जिंदगी है मौज मस्ती से रहो
वधु भी किसी की बेटी है उसको जलाया ना करो
चाहत की ज्वाला प्रेम है इस ज्योत को जलने ही दो
लौ उठना दीपक का शगुन उसको बुझाया ना करो
अच्छी लगी हर बात जब बोली मधुर वाणी सदा
कड़वी नहीं अच्छी कभी, कड़वी बताया ना करो
हम मान लेते हैं सभी बातें तुम्हारी किन्तु तुम
आगे अभी ज्यादा कभी मुझको नचाया ना करो

-- कालीपद 'प्रसाद'

मुस्कान देख मेरी, है मुसकुराता मौसम
तुम आ रहे हो मिलने, यह जान जाता मौसम
आती बहार अचानक, खिल जातीं सुर्ख कलियाँ
स्वागत में खुशबुओं की जाजम बिछाता मौसम
लेकर तुम्हारी पाती, चल देती जब चमन को
धुन प्रेम की बजाकर, सँग गुनगुनाता मौसम
रंगत बदलती मुख की, नटखट ये भाँप लेता
आकर निकट रँगीला, मुख चूम जाता मौसम
प्यारा ये मेरा साथी, कभी झूलना झुलाता
कभी बन परिंदा मुझको, नभ में उड़ाता मौसम
खुश देखता तो खुश हो, जी भर के खिलखिलाता
पर देख उदास मुझको, हर विधि रिझाता मौसम
अब आ भी जाओ प्रिय तुम, कहीं लौट ही न जाए
यह 'कल्पना' पुलक से, पलकें बिछाता मौसम

-- कल्पना रामानी

लाख होगीं कोशिशें ईमान को मत बेचना
आदमीयत की यही पहचान को मत बेचना
थालियों में आपकी रूखे निवाले ही सही
आप दौलत के लिये सम्मान को मत बेचना
देश ने हमको दिये है अन्न जल औ प्राण भी
देश का गौरव बचाना शान को मत बेचना
प्यार जीवन के लिये वरदान है भगवान का
है यही विनती कभी वरदान को मत बेचना
सर झुके गर तो झुके केवल खुदा के सामने
बुत परस्ती कर के अपने मान को मत बेचना
धर्म की लौ में खुदा का नूर ये कायम रहे
नूर ये हरगिज कभी शैतान को मत बेचना
हिन्द के है लाल सिख हिन्दू मुसलमां हम सभी
चाहे जो हो आप इस पहचान को मत बेचना

-- सतीश बंसल

जमाने भर की अब सुनता नहीं मैं
मुझे मालूम है, अच्छा नहीं मैं
बदल जाना नहीं फितरत हमारी
तुम्हें मालूम है, तुझ सा नहीं मैं
मुझे क्यूँ चाहते हो हद से ज्यादा
तेरी तकदीर में, लिक्खा नहीं मैं
समझता हूँ सियासत आजकल की
भले दिखता हूँ, पर बच्चा नहीं मैं
मिरी फितरत भले ही आइना हो
कभी पर टूटकर, बिखरा नहीं मैं
मुझे हर शाम तुम बदला करोगे
तुम्हारी जुल्फ का, गजरा नहीं मैं
कभी गुजरा अगर रंगीनियों से
खुदा का शुक्र है, भटका नहीं मैं

-- धर्म पाण्डेय

वो समंदर है तो होने दीजिए
सीप ही काफी है मोती के लिए
इन हवाओं का भरोसा है कोई
रुख दिशाओं का किधर है देखिये
छोड़िये माजी के सब रस्मो रिवाज
वक्त के हमराह चलना सीखिए
कौन पीतल और सोना कौन है
गर न वाकिफ जौहरी फिर किसलिए
मत गलत तालीम दो बच्चों को इन
मत सिखाओ, झूठ की जय बोलिए
जंगलों में रोशनी करने चले
जुगनुओं का हौसला भी देखिए

-- डॉ डी.एम. मिश्र

उसको उतनी शबनम मिलती जिसकी जितनी प्यास है
और उड़ानें तय करतीं कितना किसका आकाश है
ऊँचाई पर जाने की तो जंग छिड़ी है आपस में
जीत वही पाता जो रखता अपने पर विश्वास हैं
कितने लोग कलम से लिखते गीत-गजल-कवितायें पर
जो दिल से लिखता है वो ही रच पाता इतिहास है
बिन मंदिर-मस्जिद जाये भी उसकी इबादत हो जाती
हर कोशिश को हिम्मत देकर जो कहता 'शाबाश' है
उसको पाने की खातिर जो खुद को भुला देता है वो
मीरा बनता सूरा बनता कोई तुलसीदास है

-- अर्चना पांडा

गया है हार उस जालिम से अब फरियाद करके दिल
न जाने क्यूँ तड़पता फिर उसी को याद करके दिल
कि जिसके नाम हमने तो सभी अपनी खुशी लिख दी
मगर वो अश्किया मेरा गया नाशाद करके दिल
नजर साया चुराने अब लगा खुद का ही खुद से क्यूँ
वो अपने अक्स से ऐसे गया आबाद करके दिल
हमें बुत की तरह जो था मिला हमने मुहब्बत से
उसे हँसना सिखा डाला सुनो ईजाद करके दिल
न हटतीं हैं निगाहें वो गया जिस राह पर 'गुंजन'
नमी आँखों गया है दर्द को आजाद करके दिल

-- गुंजन अग्रवाल 'गूँज'

भ्रष्टता के आचरण का अंत हो
अभ्युदय की वांछना, अत्यंत हो
सत्यमेव जयते, जय जयकार हो
अतिथि देवोभव प्रथा विजयंत हो
धर्म की भी हो अब, पुनर्स्थापना
न्याय सर्वोपरि मरण पर्यन्त हो
आज पीढ़ी हो रही है, मार्ग-च्युत
सन्मति हवन करें पीढ़ी पंत हो
ले अब इस धरा पर, जनम युगंधर
'आकुल' अब सदैव यहाँ बसंत हो

-- डॉ. गोपाल कृष्ण भट्ट 'आकुल'

आभासी रिश्तों का दर्द

'ये आपकी सोच नहीं हो सकती, जितना मैंने आपको पढा है, आप नकारात्मक सोच वाली रचनाकार नहीं हो।'

नव्या ने जैसे ही फेसबुक कविता ग्रुप में कविता पोस्ट की तो त्वरित टिप्पणी देख सकपकाई, पूछने पर मालूम हुआ वो नव्या की पिछली रचनाओं को पढता आ रहा है। अब तो लगातार मैसेज कर नव्या से उसकी रचनाएँ मांग पढने की जिद पर अड गया हारकर नव्या ने विचार कर मेल से अपनी एक रचना भेजी कि हो सकता है, वो रचनाओं को पढकर आवश्यक सुधार बता मार्गदर्शन कर सके, लेकिन नव्या का यह भ्रम बहुत जल्दी ही टूट गया, रचना की तारीफ करना तो दूर जवाब में लिखा, 'मुझे आपसे आत्मिक लगाव हो गया है, मैं आपसे निजी मित्रता चाहता हूँ।'

इतना सुनते ही नव्या अचकचा गई और सीधे लफ्जों में प्रतिक्रिया देते हुए लिखा, 'बहुत दुख हुआ कमल जी आपकी बात से, आपने रचना पढने के लिए माँगी थी या निजी मित्रता करने के लिए? सुना था कि एक मछली सारे तालाब को दूषित करती है,आज देख भी लिया ..तभी आप जैसे किरदारों की वजह से इस आभासी रंगमंच पर कोई भी महिला किसी पुरुष से मित्रता तो दूर, बात तक करने से कतराती है।'

इतना लिख नव्या ने आभासीय रंगमंच पर होने वाले नाटक में अपना किरदार निभाने से पहले ही पर्दा गिरा दिया।

-- संयोगिता शर्मा

शांत मन

सर्दी की एक रात को समीरा शांति से अपना काम निपटाकर शांति से सोई थी. सुबह चार बजे, न जाने क्या हुआ, उसे कुछ पता ही नहीं चला. उसके पति ने करवट बदली, तो उसे हिलता हुआ पाकर कुछ आशंकित हो गए. तुरंत डॉ विनोद, जो उनके पड़ोसी भी थे, उनको फोन लगाया. डॉक्टर आए, बी.पी. चेक किया और उसे तुरंत अस्पताल में भर्ती करवाने की सलाह दी. सरकारी पैनल पर उनका अस्पताल ही सबसे पास का अस्पताल था. तुरंत ऐम्बुलैंस को फोन करके खुद भी तैयार होने के लिए चल दिए.

ठीक होकर वह घर आ गई. एक दिन सुबह सैर करते हुए उसे डॉ विनोद मिल गए. समीरा ने उनसे पूछा- 'डॉक्टर साहब, एक बात बताइए, क्या मैं इतनी बीमार थी कि मुझे पांच दिन आइ.सी.यू. में रहना पड़ा?' डॉ विनोद बोले- 'दो दिन मरीज के होते हैं, तीन दिन डॉक्टर के. आपको तो कोई फर्क नहीं पड़ा, सरकारी पैनल का अस्पताल था.'

समीरा यह सुनकर अवाक रह गई. समय अपनी गति से चलता गया. डॉक्टर के ऐसे ही धन से उनका अपना अस्पताल बन गया. उनके जैसी मानसिकता वाले डॉक्टर्स उसमें नियुक्त किए गए. एक बार डॉ विनोद विदेश गए हुए थे. उनका बेटा भी समीरा जैसी हालत में उनके अपने अस्पताल में भर्ती किया गया. 'दो दिन मरीज के होते हैं, तीन दिन डॉक्टर के' जैसी मानसिकता वाले डॉक्टरों ने पानी की तरह पैसा बहाकर उसका इलाज किया, पर कामयाब नहीं हुए. डॉ विनोद का डॉक्टर बेटा बचाया नहीं जा सका.

डॉ विनोद ने खिन्न होकर बाकी डॉक्टरों को ऐसी मानसिकता छोड़ने के लिए कहा. डॉक्टर ऐसी मानसिकता को तो क्या छोड़ते, वे डॉ विनोद का अस्पताल ही छोड़कर चले गए. कर्ज में डूबा हुआ अस्पताल भी धीरे-धीरे डॉ विनोद के हाथ से फिसल गया. अब वे घर में ही प्रैक्टिस करते हैं.

नोटबंदी के चलते जहां सभी डॉक्टर अनाप-शनाप कैश से घबराए हुए थे, डॉ विनोद शांत मन से अपनी प्रैक्टिस चालू रखे हुए थे. कई साल से उनके प्रैक्टिस कैशलेस जो चल रही थी!

-- लीला तिवानी

निश्चय

'मां! ओ मां!! मुझे बताओ आखिर हम लोग वहां से क्यों चले आये'

'नहीं बेटा जिद नहीं करते। भूल जाओ हमारे साथ जो कुछ हुआ।' मंजू दिनेश को समझाते हुए बोली।

'नहीं मां आज शान्त नहीं होऊँगा ये तो रोज का चक्कर है। आखिर हम लोगों में क्या कमी है। क्या हम लोग जानवर हैं। चोर डकैत शराबी भी नहीं।' आवेश में दिनेश न जाने क्या-क्या कह गया।

'नहीं मानते हो तो सुनो- हम नीची जाति के हैं। उनके बराबर के नहीं इसलिए हमारी कोई इज्जत नहीं।'

'हम सब इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं। फिर इतना भेदभाव कैसा आखिर कब तक सहेगी।'

'बेटा तुम कब समझोगे? यह सदी परिवर्तन हमारे समाज तक नहीं पहुंचे हैं। हमारा समाज तो आज भी वहीं है, जहां वर्षों पहले था।'

अपनी मां की बात सुनकर दिनेश ने मन ही मन निश्चय कर लिया। कुछ भी हो वह अपना जीवन समाज से भेदभाव मिटाने में लगा देगा।

-- शशांक मिश्र भारती

तरीका

'क्या हुआ बड़े उदास दिख रहे हो। दूकान से भी इतनी जल्दी वापस आ गये?' कहते-कहते रसोई में चली गयी।

पानी देते हुए बोली -'आजकल हो क्या गया है तुम्हें? त्यौहार में तो खूब बिक्री हो रही होगी, फिर भी यह मायूसी क्यों चेहरे पर?'

'कुछ नहीं संजू, लुट गया मैं।'

'अरे! कैसे? बदमाश पीछे पड़ गए थे क्या?'

'नहीं संजू, ये साले समाजसुधारक रोजी-रोटी डुबाने पर तुले हुए हैं।'

'क्या कह रहे हो जी, ऐसा क्या कर दिया उन लोगों ने, जो आपकी दूकान बन्द होने पर आ गयी।'

'हर गली, हर मुहल्ले में चायनीज सामान के खिलाफ लोगों के दिमाग में चिंगारी लगा दी इन नासपीटों ने। वह चिंगारी ऐसी भड़की कि इस त्यौहार में रोटी के भी लाले पड़ने के आसार दिख रहे हैं।'

'चायनीज!! चायनीज सामान के तो आप भी विरोधी थे। रखे ही क्यों?'

'क्या बताऊ संजू, ज्यादा मुनाफा कमाने के चक्कर में कहीं का न रहा। सोचा था उस मुनाफे से दीपावली में एक फ्लैट खरीदूंगा। परन्तु अब तो न घर का रहा न घाट का। वह साला राजेश, जो अपनी दूकान में रखे हुए तिरंगे का अपमान करता है, वह भी पीठ पीछे मुझे देशद्रोही कह रहा है।'

'अच्छा! कल के अखबार को पढ़ वही राजेश, सबके सामने आपको देशभक्त और दयालु व्यक्ति कहेगा!' कहकर कुछ सोचते हुए वह एक नामचीन एनजीओ का नम्बर घुमा के बात करने लगी।

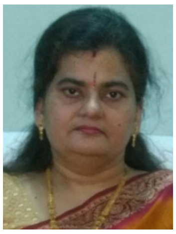

-- सविता मिश्रा

खरी बात

किसी काम से एक ग्रामीण अपने विधायक के पास गया। उसने कहा, 'बड़ी उम्मीद लेकर आया हूं कि आप मेरा काम करा देंगे। मैं आपकी ही जाति का हूं।'

यह सुनना था कि विधायक महोदय फट पड़े। वे वहां बैठे लोगों को सुनाते हुए बोले, 'मेरे लिए क्षेत्र के सभी लोग समान हैं। जो जाति-बिरादरी की बात करता है, उससे मुझे सख्त नफरत है। आप जा सकते हैं।'

'चला जाऊंगा, महोदय, लेकिन एक बात कह कर। चुनाव के वक्त तो बिरादर ही आपके लिए भगवान थे। तब आप जाति-बिरादरी की संकीर्णता से ऊपर क्यों नहीं उठे थे?'

उस मुंहफट की खरी बात से विधायक जी रह गए चोट खाए सांप की तरह तिलमिला कर।

-- राजकुमार धर द्विवेदी

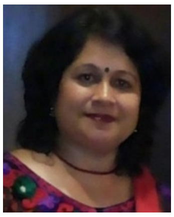

जब आसमान सो जाता है
और पृथ्वी भी हो जाती है खामोश
दिल के सभी दरवाजे हो जाते हैं बंद
रास्ते हो जाते हैं सुनसान
मंजिलें खो जाती हैं कोहरे में
रात हो जाती है और भी स्याह
तो कहीं दूर, बहुत दूर सुनाई देती है आहट
सुबह की रोशनी की/दिखने लगते हैं नए रास्ते!

-- नमिता राकेश

हर हाल में गुजरते रहे, कारवाँ यहाँ
मायूस मन हुए भी हो क्यों, माजरा है क्या!
तारे सितारे चलते रहे, मंजिलें कहाँ
नाचें निहारिकाएँ कहाँ, जाने ना जहान!
सब शून्य में टिके हैं, मिले अंध-कूप उर
सुर मिलाए चले हैं, नियन्ता पै रख नजर!
खेले सभी से वे हैं रहे, सूक्ष्म रूप रख
रचना किए विराट
भुवन, भास्वरी हृदय!
आसान है विलय होना,
प्रलय लय को बिन तके
'मधु' मर्म समझ उनका,
तैर तरना सीख ले!

-- गोपाल बघेल 'मधु'

बीते दिनों को अब दो विदाई, नव वर्ष को अब दो बधाई
लम्हे गुजर गये हैं जो बीते, क्या वो कभी आते हैं भाई
मंगल घड़ी आई है रे भाई, छोड़ो सभी झगड़े ये लड़ाई
मन से मिटा दो शिकवे सारे, मत रखो अब कोई रुसवाई
भूलो बदी अपनाओ अच्छाई, काहे नहीं समझे तू भाई
बेकार के इन धंधों में देखो
तुमने अपनी है उम्र गंवाई
जागो उठो अब भी रे भाई
शुभ मंगल बेला है यह आई
मन के अपने दीपक जगाओ
दूर करो ये काली परछाई

-- डॉ सोनिया गुप्ता

आज गली वीरान सी क्यों है, सब यहाँ खामोश क्यों हैं
सूना सूना लगे सब द्वार, घर में ही सब कैद क्यों हैं
बच्चों की टोली भी, अब यहाँ नहीं दिखती है
बूढ़ों की पंचायती भी, लगता है अब नहीं होती है
खुद खुशी का जश्न मनाते, खुद ही दुख को झेलते हैं
सब अपने-अपने में मग्न, नहीं किसी से मतलब है
बदल गया वो जमाना, बदल गयी सब रीतियाँ
खुद से ही अब संभालनी है
अपनी सारी जिम्मेदारियाँ
निकल पड़े हैं अब अकेले
नहीं किसी का साथ है
ढूँढ़ लेंगे खुद मंजिल
चाहे रास्ता कितना भी कठिन हो

-- निवेदिता चतुर्वेदी 'निव्या'

है मन चौराहे सा/विचारों के कई अनगिनत रास्ते
भटकन सी मन के भीतर/द्वन्द्व विचरता है क्षुब्ध
फिर भी सही गलत की पशोपेश
निरन्तर चलती मैं
इन वैचारिक राहों से
निकल पाना चाहूँ
पर है पथरीली राहें
कदम दर कदम
दूर होती मंजिलों को पाने की होड़ में
चौराहे पर भटकती/अन्तर्मन की चाह!

-- अल्पना हर्ष

साथी चलो चले/खुले गगन के तले
भटके बिना वजह/सबको लगा गले
घर बार छोड़कर/ममता को तोड़कर
ले खेल खिलौने/दु:ख चौखटे रोककर
माँ रोकेगी दिन में/छुपके निकलेंगे सांझ में
चलेंगी मस्तीयां अपनी,
खिले जब चांद गगन में
गेंद फेंके चलो गगन,
माँ से अनुमति ले मगन
चलेगें साथ मिलकर हम,
देखने चाँद का चमन

-- प्रदीप कुमार तिवारी

मुक्तक गीत

क्यारियाँ केसर की रक्तिम हो गयी
संवेदनायें मानव हृदय की सो गयी
थी घाटी जो कभी जन्नत सी सुन्दर
आतंक के कारण जहां से खो गयी

धरा लाल चौक की खून से सनी है
सरकार फिर भी मूकदर्शक बनी है
आम-जन के बारे में सोचें भी कैसे
दरबारों की अभी आपस में ठनी है

उन्हें हमारी पैलेट गन से एतराज है
तभी हरेक बच्चा वहाँ पत्थरबाज है
है सैनिकों की जान की चिन्ता किसे
मूर्ख बना जनता को बचाना ताज है

जो हर समय दुश्मन के गुण गाते हैं
पाक आतंकियों में आस्था जताते हैं
उठा फैंकते क्यों नहीं भारत से बाहर
भौंकते देश पर जो तिरंगा जलाते हैं

कार्यवाही को इतना क्यों टालते हो
गद्दारों को मार क्यों नहीं डालते हो
कर दो सिर को धड़ से जुदा उनकी
कुत्तों को बिरयानी खिला पालते हो

लेना होगा बदला सैन्य कुर्बानी का
देश पर फना हुई हरेक जवानी का
काट शीश ले जाते वे कैसे हर बार
रूप लिया है क्या खून ने पानी का

-- सुधीर मलिक

सूखा मुरझाया फूल/पुरानी किताब में मिला
खुशबू न थी फूल में/रंग भी बदल चुका था मेरी तरह
बदले हुए से तुम भी/सामने थे टीवी में मशगूल
पर मुझे याद था अब भी
वो प्यारा सा एक लड़का
भर के फूल में इश्क देता हुआ
वो झेंपती सी एक लड़की
थाम के फूल
अपनी गली को दौड़ती हुई

-- डॉ हेमलता यादव

गीत

गाँव-गली, नुक्कड़-चौराहे, सब के सब बदनाम हो गये
कामी-कपटी और मवाली, रावण सारे राम हो गये
रामराज का सपना टूटा, बिखर गया हर पत्ता-बूटा
जिसको मौका मिला उसी ने, खेत-बाग-वन जमकर लूटा
हत्या और बलात् कर्म अब, जन-जीवन में आम हो गये
कामी-कपटी और मवाली, रावण सारे राम हो गये
असरदार सरदार मिले हैं, लुटे-पिटे घर-बार मिले हैं
भोली-भाली जनता को बस, भाषण लच्छेदार मिले हैं
लोकतन्त्र के मन्दिर में अब, राजतन्त्र के काम हो गये
कामी-कपटी और मवाली, रावण सारे राम हो गये
जनसेवक मनमानी करते, केवल अपनी झोली भरते
कूटनीति दम तोड़ रही है, सीमाओं पर सैनिक मरते
सोनचिरैया के सब गहने, पलपभर में नीलाम हो गये
कामी-कपटी और मवाली, रावण सारे राम हो गये
गंगा रोती, गइया रोती, पण्डित जी की पूजा रोती
देख सपूतों की करतूतें,
घर में बैठी मइया रोती
'रूप' देखकर चरवाहों का,
कंस आज घनश्याम हो गये
कामी-कपटी और मवाली,
रावण सारे राम हो गये

-- डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

लघुकथा

जोड़ की तोड़

'पंखुरी! तुम्हारे घर से ऐसी आवाजें किस चीज से आ रही है?' पंखुरी बगल के फ्लैट में अपनी सहेली के संग खेल रही थी तो उसकी माँ ने उससे पूछा।

'कैसी आवाजें आपको सुनाई दे रही है चाची?'

'धम-धम की आवाजें! जैसे कुछ कुटाई हो रही हो। चुड़ा-चावल बनाने के लिए धान कूटते हैं वैसा?'

'हाँ चाची! माँ और मेरी चाची मिलकर कुटाई कर रही हैं।'

'क्या कूट रही हैं?'

'लुगदी है चाची।'

'लुगदी! उसका क्या करेंगी तुम्हारी माँ व चाची?'

'लुगदी कूटकर दउरा बनाया जायेगा चाची।'

(शेष पृष्ठ १२ पर)

(तीसरी और अंतिम किस्त)

आई हेट यू, पापा!

आनन्द विश्वास

'क्या हुआ, बताओ तो?' देवम ने फिर से पूछा।

'आज दादी गाँव से आ गईं हैं और उन्होंने पापा के ऊपर कोर्ट में केस कर दिया है। अब हमें मकान खाली करके कहीं और जाना पड़ेगा।' गजल ने कहा।

'पर दुःखी होने से समस्या हल थोड़े ना हो जाती है। बोल्ड होकर हर मुश्किल का सामना करो। अच्छा चलो, अब नाश्ता करो सब ठीक हो जायेगा।' देवम ने गजल को समझाते हुए कहा।

'नहीं आज तो खाने को भी मन नहीं कर रहा है। पता नहीं, कुछ डर सा लग रहा है।' गजल ने दुःखी मन से कहा।

'फिर भी थोड़ा बहुत तो खा ले। कुछ खायेगी नहीं तो क्या भूखी रहेगी?' सांत्वना देते हुए छाया और सेजल ने कहा।

देवम के मन में एक शंका जगी कि गजल की दादी ही कहीं वृद्धाश्रम वाली दादी तो नहीं हैं? केस कर दिया, मकान खाली करना, गाँव से आना, कुछ-कुछ तो मेल खाता है, दोनों में।

'तुम्हारी दादी का नाम क्या है?' अपनी शंका को दूर करने के लिये देवम ने गजल से पूछ ही लिया।

'सावित्री देवी' गजल ने बताया। शंका में कुछ तो दम दिखाई दिया।

'और तुम्हारे दादा जी का?' देवम ने पूछा।

'शिवराज सिंह, फौज में अफसर थे पर अब वे नहीं हैं।' गजल ने बताया।

'पर ये सब तू क्यों पूछ रहा है, देवम?' गजल ने उत्सुकता पूर्वक पूछा।

'बताता हूँ, तुम अपने पापा का नाम तो बताओ?' देवम को दोनों में मेल खाता हुआ दिखाई दिया।

'मेरे पापा का नाम कल्पेश है।' गजल ने बताया।

'और मम्मी का?' देवम ने पूछा।

'मम्मी का नाम शिल्पा है।' गजल ने बताया तो पर कारण जानने की इच्छा उसमें अभी भी थी।

'पर सच-सच बता देवम, ये सब कुछ तू क्यों पूछ रहा है?' गजल ने आग्रह पूर्वक देवम से पूछा।

'नहीं, कोई बात नहीं, बस वैसे ही पूछ लिया।' देवम ने बात को टालना ही उचित समझा। पर देवम का शक सही था इसमें तनिक भी सन्देह नहीं था। देवम की वृद्धाश्रम वाली बुढ़िया ही गजल की दादी थीं।

इतने में घण्टी बज गई, सब अपनी-अपनी कक्षा में चले गये। पर देवम और गजल दोनों के मन में सवाल ही सवाल थे। गजल के मन में था कि देवम ने इतने सारे सवाल क्यों पूछे हैं? और देवम के मन में था कि गजल के पापा ने ऐसा सब कुछ क्यों किया?

घर पहुँच कर देवम ने मम्मी को बताया कि वृद्धाश्रम में रहने वाली बुढ़िया तो मेरे साथ में पढ़ने वाली लड़की गजल की सगी दादी हैं। देवम ने मम्मी से पूछा-'मम्मी, अगर इस सब के बारे में गजल पूछे तो?'

'हाँ, बता देना, ऐसी बातें कोई छुपने वाली थोड़े ना होती हैं। आज नहीं तो कल, पता तो चलना ही है। पता चलता है तो चलने दो, इसमें क्या?' मम्मी ने गम्भीरता के साथ कहा।

देवम इस बात को जानता था कि उसने कोई गलत काम नहीं किया है। उसने जो कुछ भी किया है उससे उसका समाज में सम्मान बढ़ने वाला ही है। उसके इस काम से उसके माता-पिता का मस्तक गर्व से ऊँचा ही होगा। और ना ही कोई डरने की बात है। फिर भी उसने मम्मी की राय लेना उचित समझा।

दूसरे दिन गजल देवम से पूछ ही बैठी-'बताओ न देवम, क्या बात है, जो तुम मुझसे छुपा रहे हो?'

'गजल, अगर तुम्हें नहीं मालूम है तो तुम्हारे पापा ने तुमसे इस बात को छुपाया है। पर बात बहुत दुखदायी है।' देवम ने गम्भीरता पूर्वक कहा।

'फिर भी बताओ, मैं सुनने के लिये तैयार हूँ।' गजल ने पूरे साहस के साथ कहा।

'तो सुनो गजल, तुम्हारी दादी गाँव से नहीं आईं थीं। तुम्हारे गाँव तो मैं गया था, भावेश अंकल के साथ। अब तुम्हारे गाँव में, तुम्हारा कुछ भी नहीं है। न तो मकान और न ही जमीन। मैं और भावेश अंकल गाँव के पटवारी से मिले थे। उसने बताया कि कल्पेश जी ने मकान और जमीन दोनों किसी को बेच दिये हैं। जमीन और मकान अब उसके नाम पर है, तुम्हारे पापा या दादा जी के नाम पर नहीं।' देवम ने बताया।

गजल के पैरों के नीचे से तो जैसे जमीन ही खिसक गई हो। अब उसको काटो तो खून नहीं। उसकी आँखें डबडबा गईं आँसू छलक पड़े। आश्चर्य और मन में प्रश्न 'आखिर पापा ने ऐसा क्यों किया?'

'इतना ही नहीं गजल, तुम्हारे पापा और मम्मी ने तो दादी जी को धक्के मार-मार कर घर से बाहर निकाल दिया था। बेचारी गाँव भी गई थीं, पर वहाँ भी सहारा न मिला। और अब पिछले दो सालों से वृद्धाश्रम में रह रही थीं। मैंने तुम्हारी दादी को रोते हुए देखा है। बेचारी दादी इन दो सालों में कितना रोई होगीं, वृद्धाश्रम में? एक-एक दिन कैसे कटा होगा उनका, इसका अन्दाज लगाना मेरे लिये तो बेहद मुश्किल है। ये तो उनकी रोती हुई आँखें और बिलखता हुआ मन ही बता सकेगा।' देवम बहुत भावुक हो गया।

'पर पापा तो कहते थे कि दादी को गाँव में अच्छा लगता है, उनका मन यहाँ नहीं लगता है इसलिए वे गाँव के घर में रहतीं हैं।' गजल ने कहा।

'झूठ बोलते हैं, तुम्हारे पापा। तुम्हारी दादी पिछले दो सालों से वृद्धाश्रम में रह रहीं थीं। चलो मेरे साथ, मैं पुछवाऊँगा तुम्हें वहाँ के लोगों से।' देवम ने कहा।

देवम ने आगे कहा- 'और तुम्हारे पापा पर भ्रष्टाचार के गम्भीर आरोप भी लगे हैं। पिछले दिनों में तुम्हारे घर पर सी.बी.आई. और आयकर विभाग का छापा भी पड़ा था। काफी कैश भी बरामद हुआ था। मुझे नहीं मालूम, तुम्हें पता है या नहीं। पर सच तो यह है।'

देवम के सामने गजल एक बुत जैसी खड़ी की खड़ी रह गई थी, उसे कुछ नहीं सूझ रहा था आखिर वह करे तो क्या करे? काश ये धरती ही फट जाती तो वह उसमें ही समा जाती! सब कुछ जैसे शून्य हो गया था उसके लिए। बोलने को उसके पास शब्द ही कहाँ थे? और वैसे भी कहने को बचा ही क्या था?

बच्चे जब कोई गलती करते हैं तो बड़े उन्हें सजा भी देते हैं और मारते भी हैं। और जब बड़े अक्षम्य गलती ही नहीं अपराध भी करें तो?

घर पर गजल, न तो मम्मी से बोली और ना ही पापा से। उसने खाना भी नहीं खाया। रोती रही और बस रोती ही रही, सारी रात। नींद कब आई पता नहीं, पर सुबह उसकी आँखें सूजी हुईं थीं और नम थीं।

सुबह पापा ने मनाने की लाख कोशिश की, पर सब बेकार। गजल ने साफ कह दिया- 'पापा, आपने अच्छा नहीं किया है। मेरे जिन्दा रहते हुए दादी जी को वृद्धाश्रम में रहना पड़ा, कितनी शर्म की बात है मेरे लिए। अब मैं कैसे मुँह दिखाऊँगी स्कूल में, अपने साथियों को, देवम को। दादी जी के साथ इतना बड़ा अत्याचार? आपने मुझसे झूठ बोला है, पापा। यू आर ए लायर, पापा! आई हेट यू, पापा! आई हेट यू।' और काफी देर तक गजल रोती रही।

उसने सोच लिया था कि अब उसे पापा-मम्मी के साथ तो नहीं ही रहना है, चाहे कुछ भी क्यों न हो जाये। अब तो वह दादी जी के साथ ही रहेगी और उनकी सेवा करेगी। बस और कुछ नहीं।

कानून की सारी जंजीरों को तोड़कर गजल, दादी जी से जा चिपकी। गले से लगा लिया था अपनी प्यारी बेटी को दादी ने। दो आँखों से गंगा और दो आँखों से जमुना का अविरल प्रवाह बह निकला था और फिर तो पावन-प्रयाग बनना ही था। जिव्हा पर माँ सरस्वती आये बिना कैसे रह सकतीं थीं। त्रिवेणी संगम! कैसा पुनीत पावन, मंगल-मन-मिलन का दिव्य, अलौकिक संगम।

कैसा विहंगम दिव्य-दृश्य था दादी-पोती के मिलन का। माँ की ममता पिघली या नहीं, यह तो पता नहीं, पर ब्याज ने तो अपना रंग दिखा ही दिया था।

अपने प्रिय भक्त प्रह्लाद को अपने आँचल में समेटे हुए क्रोधित नृसिंह भगवान, मौन पलों के स्पन्दन की अनुभूति कर रहे थे। भक्त प्रहलाद ने तो नृसिंह भगवान से वरदान माँग कर हिरण्यकश्यप को मोक्ष दिला दिया, पर गजल ने अपने पापा को क्षमा के लायक भी नहीं समझा, तो नहीं ही समझा।

और माँ की ममता भी नहीं पिघली और ना ही मन पसीजा। कल्पेश और शिल्पा को मकान छोड़कर

(शेष पृष्ठ २६ पर)

हम तो ठहरे आम आदमी, अर्थ नीति का ज्ञान नहीं
मिल जाए दो वक्त रोटियां, और अधिक अरमान नहीं
बंद हुए जो नोट पुराने, थोड़े से घबराये हैं
माना अच्छे दिन से पहले, कष्ट भरे दिन आये हैं
लेकिन हमने इन कष्टों में, हल्ला होते देखा है
घोटालों के सरदारों का धीरज खोते देखा है
जिस पंजे की पांचों उंगली, डूबी भ्रष्टाचारों में
वो ही आखिर क्यों चीखा है, टीवी में अखबारों में
देखा है, 'पत्थर की देवी' कैसे छाती फाड़े है
देखा है 'बंगलादेशी दीदी' किस तरह दहाड़े है
देखा है 'गुलाम' दहशत का, जनहित की करता बातें
जिनके खुद परिवार में झगड़ा, बाँट रहे हैं सौगातें
उनको ज्यादा दर्द हुआ है, जिनके ज्यादा पाप रहे
अरबों खरबों खूब उड़ाये, घोटालों के बाप रहे
भली-बुरी इस बंदी में, चलिये इतना तो काम हुआ
जमाखोर नेताओं का, थोड़ा तो काम तमाम हुआ
लाइन में लगती जनता में, ये नारे पुरजोर लगे
संसद को अवरुद्ध कराते, सारे नेता चोर लगे
उन चोरों की सरदारिन का पप्पू भी बौराया है
मोदी खुद भ्रष्टाचारी है, ये आरोप लगाया है
यूं लगता है, चोर सुनाये, गीत आज रखवाली का
गंगा जल को डांट रहा है, कीडा गन्दी नाली का
यूं लगता है त्याग तपों को, गाली दी अय्याशी ने
भारत माँ पर कीचड़ फेंका, इटली की बदमाशी ने
जिस मोदी की सगी भतीजी, बिन इलाज मर जाती हो
जिस मोदी की माता खुद चलकर ऑटो से जाती हो
जिस मोदी के भाई अब भी सादा जीवन जीते हों
जिस मोदी के पास नहीं कुछ खाते सारे रीते हों
जो मोदी अवकाश लिए बिन अपना फर्ज निभाता है
जो मोदी दीवाली भी सेना के साथ मनाता है
जो मोदी अट्ठारह घंटे, काम धुनी में रहता हो
जो मोदी हर भाषण में भारत माँ की जय कहता हो
वो मोदी हरगिज भी पैसा खोर नहीं हो सकता है
भारत माँ का सच्चा सेवक चोर नहीं हो सकता है
मैं हूँ भक्त, निडर कहता हूँ, नहीं डरूं बेशर्मों से
मैं मोदी का भक्त बना हूँ, मोदी जी के कर्मों से
मोदी जी भी चोर अगर हैं, उनका नंबर आने दो
सारे परदे हट जाएंगे, तीस दिसंबर आने दो
दो कौड़ी का पप्पू बोले, इतना बड़ा बवाल नहीं
हमको उत्तर नहीं मिलेगा, ऐसा कहीं सवाल नहीं
कवि 'गौरव चौहान' कहे, यह आर पार की बेला है
मध्य, अमरता और मृत्यु के, मोदी खड़ा अकेला है
अगर नोट बंदी साजिश है, हम भी वचन सुधारेंगे
सवा अरब की जनता के संग, हम भी जूते मारेंगे

-- गौरव चौहान

अगर घुटाले नहीं किये तो संसद का सम्मान करो
चलने दो निर्बाध इसे मत कोई भी व्यवधान करो
अब तक जो भी कृत्य किये उनका जवाब देना होगा
जहां जहां पर खेल किये सबका हिसाब देना होगा
क्यों कर रहे प्रदर्शन धरना जनता धन का ध्यान करो
अगर घुटाले नहीं किये तो संसद का सम्मान करो
पप्पू बोले मैं बोला तो मोदी गुब्बारा फूटेगा
और सदन गुबारे वाली मस्त टाफियां लूटेगा
देश हमारा सर्वोपरि तुम भी तो उसका मान करो
अगर घुटाले नहीं किये तो संसद का सम्मान करो
दीखता क्यों आपात काल क्यों जनता को भरमाते हो
सत्य सामने आना ही है क्यों उससे घबराते हो
सच का खुलकर करो सामना अपने पद का मान करो
अगर घुटाले नहीं किये तो संसद का सम्मान करो
सदियों से सुन रहे न्याय का पलड़ा अक्सर भारी है
अलग दूध और पानी होगा बस इसकी तैयारी है
सत्ता मद किये गये सारे कृत्यों का ध्यान करो
अगर घुटाले नहीं किये तो संसद का सम्मान करो

-- मनोज श्रीवास्तव

सिंहासन का साथ निभाना, माना कवि का ये कर्म नहीं
लेकिन क्या सच्चाई लिखना, कह दो कवि का ये धर्म नहीं
मुझे तालियां नहीं चाहिये, ना ही पैसों पर बिकता हूँ
कोई दाद नहीं दे तो क्या, मैं तो सच्चाई लिखता हूँ
अभिमन्यू ना बनने देंगे, माटी देंगे शोणित से सींच
अरिवध को नर इंद्र चलो तुम, हम सब बन जाएंगे दधीच
हे भारत भू के रखवारे, तुम आम जनों के हो प्यारे
ये निर्णय अद्भुत लिया गया, हैं साथ तुम्हारे हम सारे
ये कदम सही है मोदी जी, जो सख्त लगे तो सख्त सही
हम तो खुश हैं तुमसे सारे, अब भक्त कहें तो भक्त सही
वोट बैंक की खातिर हमने, होते देखा है दंगा भी
इस कारण आधा भारत है, अब भी तो भूखा नंगा भी
कोई जातों में बाँट रहा, कोई बांटे है पंथों में
हर कोई खोट निकाल रहा है, हर धर्मों के ग्रंथों में
मंदिर के भजनों ने बोला, मस्जिद से गुरुद्वारों से
आओ मिलकर देश बचा लें, इन चोरों से गद्दारों से
है देश बदलने वाला अब, आओ सब मिलकर जश्न करें
सब साथ निभाओ तो पहले, फिर चाहे खुलकर प्रश्न करें
सत्तर सालों से भारत को, लूटा है कुछ गद्दारों ने
अब देश बदलने की खातिर, हम खड़े हुए हैं कतारों में
इक और क्रान्ति होगी पर, इसमें बहना कोई रक्त नहीं
हम तो खुश हैं तुम से सारे, अब भक्त कहें तो भक्त सही

-- मनोज डागा 'मोजू'

(पृष्ठ १० का शेष) **लघुकथा : जोड़ की तोड़**

'इतनी मेहनत! और इस जमाने में? अपार्टमेंट में रहने वाले के लिए दउरा का प्रयोजन!' पड़ोसन होने का धर्म उनके दिलो दिमाग में खलबली मचाये हुए था।

दोनों घरों में एक ही जासूस सहायिका थी। उससे उन्हें खबर मिली कि ५००-१००० के नोट को खपाया जा रहा है। मिक्सी में पीसकर कब तक बहाते रहते!

-- विभारानी श्रीवास्तव

नमो नमो जय मोदी जी

हर दर्जे हर पर्चे में है अब खबर गर्म बस मोदी जी
बड़े बड़े दिग्गज की काया जिसने पल में धो दी जी
उजले कपड़े भीतर दाबी काली करतूतें जिसने भी
घूम रहे बौराये से वो सुधबुध जैसे सब खो दी जी
मोदी जी मोदी जी नमो नमो जय मोदी जी
मंत्री संत्री एक समान हों यह तुमने कर दिखलाया
कोई त्रिशंकु लटक उल्टा गंगा में लार गिरा आया
लहर क्रांति, जनमन आतुर अब क्या होगा आगे जी
भ्रष्ट आचरण करने वालों पे गाज गिरेगी सुन लो जी
मोदी जी मोदी जी नमो नमो जय मोदी जी
काले धन के अय्याशों सन्यासी बनने की अब बारी
माया छोड़ राम को जप लो चार धाम की हो तैयारी
नोट वोट की नीति धुर्र आँख चंगू मंगू की रो दी जी
जंगल राज फुर्र मानो जब अलख सिंह ने भर दी जी
मोदी जी मोदी जी नमो नमो जय मोदी जी
नेक राह है कठिन मगर नामुमकिन कोई काम नही
त्याग समर्पण और स्वदेश से बढ़कर कोई धाम नही
समझो गीदड़ उसे कि जिस ने लुकछिप हेरा फेरी की
ऊँगली सीधी बात न मानी लो अब टेढ़ी कर दी जी
मोदी जी मोदी जी नमो नमो जय मोदी जी

-- प्रियंवदा अवस्थी

ओ सेक्युलर, भारत की तुम ऐसी कुछ तस्वीर बना दो
पूरा देश एक रंग कर दो, केरल को कश्मीर बना दो
याद नहीं तुमको जब ईमांवाल जी दिल्ली पाये थे?
भगवा दिया निकाल गुब्बारे हरे व श्वेत लगाये थे?
राष्ट्रीय ध्वज को भी तुम इन रंगों की तामीर बना दो
पूरा देश एक रंग कर दो, केरल को कश्मीर बना दो
आज मालदा जलता है और लुटता जब बंगाल है
कोई सहिष्णु कुछ न बोले गैंडे जैसी खाल है
हर बेटी को दुःशासन का हरने वाला चीर बना दो
पूरा देश एक रंग कर दो, केरल को कश्मीर बना दो
नेता, अभिनेता, लेखक सब मुंह घुमाकर बैठे हैं
सुर्ख लालिये चैनल मुंह में दही जमा कर बैठे हैं?
कलम को अपनी हमें काटने वाली ही शमशीर बना दो
पूरा देश एक रंग कर दो, केरल को कश्मीर बना दो
पता नहीं ये बैठे हैं किन गुमताड़ों के गुमान में
खतम हो गया बांग्लादेश में हिन्दू पाकिस्तान में
हिंदुस्तान में ही हिन्दू को सदा के लिए तुम दफना दो
पूरा देश एक रंग कर दो, केरल को कश्मीर बना दो

-- पुनीत गुप्ता

पृष्ठ २१ की पहेलियों के उत्तर-

(१) मच्छरदानी और चूहेदानी (२) इनवर्टर की बैटरी (३) कलम और पेंसिल (४) बैंक कैशियर (५) मालगाड़ी

शान्तिदूत

(सातवीं कड़ी)

विजय कुमार सिंघल

सम्भवतः वह किसी क्षत्रिय कन्या की कुमारावस्था की सन्तान है, जिसको उसकी मां ने लोकलाज के कारण त्याग दिया होगा और सुरक्षा का उचित प्रबंध करके गंगा नदी में बहा दिया होगा। निश्चय ही जन्म से वह क्षत्रिय ही होगा, परन्तु उसका लालन-पालन अधिरथ की पत्नी राधा ने अपने पुत्र के रूप में किया है और कर्ण भी स्वयं को गर्व से 'राधेय' कहता है। किन्तु सूतपुत्र माने जाने के कारण उसके मन में बचपन से ही एक हीनभावना घर करके बैठ गयी है।

कृष्ण ने सुना था कि कर्ण प्रारम्भ से ही बहुत महत्वाकांक्षी रहा है। सूतपुत्र होने के कारण उसे गुरु द्रोणाचार्य की पाठशाला में प्रवेश नहीं मिला, तो वह अपना वेश और नाम बदलकर ब्राह्मण बनकर महर्षि परशुराम से शिक्षा लेने चला गया। एक दिन वहां उसकी वास्तविकता खुल गयी, तो महर्षि का शाप लेकर चला आया। कौरव-पांडवों के दीक्षांत प्रदर्शन के समय वह अर्जुन के विलक्षण प्रदर्शन को सहन नहीं कर सका और उसने उससे भी श्रेष्ठ प्रदर्शन करने की घोषणा की। द्रोणाचार्य ने उसकी वीरता का सम्मान करते हुए उसे प्रदर्शन की अनुमति दे दी। उसमें प्रशंसा पाने पर उसका अहंकार इतना बढ़ गया कि वह अर्जुन को द्वन्द्वयुद्ध करने की चुनौती दे बैठा। जब उसको बताया गया कि द्वंद्वयुद्ध केवल समान स्तर वालों में हो सकता है और उसका कुल-गोत्र पूछा गया, तो वह लज्जित हो गया।

लेकिन दुर्योधन ने इस अवसर को लपक लिया। उसने उसी समय कर्ण को अंग देश का राजा घोषित कर दिया और तत्काल वहीं उसका अभिषेक करके मुकुट भी उसके सिर पर रख दिया। कृष्ण सोचने लगे कि क्या दुर्योधन को वैसा करने का अधिकार था? वह न तो राजा था, न युवराज। साम्राज्य का कोई भाग किसी और को भेंट में देने का उसे क्या अधिकार था? वहाँ उस समय पितामह भीष्म, महाराज धृतराष्ट्र, आचार्य द्रोण, आचार्य कृप, महात्मा विदुर आदि अनेक वरिष्ठ जन उपस्थित थे, परन्तु किसी ने भी दुर्योधन के इस कार्य में हस्तक्षेप नहीं किया। इसका कारण क्या है? क्या उसने इसके लिए महाराज धृतराष्ट्र की स्वीकृति ले ली थी?

जो भी हो, राजा बन जाने पर भी अर्जुन के साथ द्वंद्वयुद्ध करने की कर्ण की इच्छा पूरी नहीं हुई, क्योंकि तब तक उसका पालक पिता अधिरथ उस स्थल पर आ गया और सबको पता चल गया कि कर्ण वास्तव में सूतपुत्र है। इसके साथ ही सूर्य अस्त हो गया और कृपाचार्य ने समारोह समाप्त होने की घोषणा कर दी। कृष्ण ने सोचा कि उस दिन के बाद कर्ण के मन में पांडवों के प्रति द्वेष उत्पन्न हो गया। वह मान-सम्मान का इतना भूखा था कि दुर्योधन द्वारा दिये गये राजपद के बदले उसने अपना समस्त सम्मान, धर्म, विवेक और जीवन तक दुर्योधन के पास रहन रख दिया। उसने आजीवन हर परिस्थिति में दुर्योधन का साथ देने का वचन दे दिया और एक प्रकार से उसका क्रीत दास बन चुका था, जिसे 'मित्रता' का नाम दिया गया था।

कर्ण ने यह नहीं सोचा कि दुर्योधन उसके प्रति जो उदारता दिखा रहा है, वह अकारण नहीं है, बल्कि उसके पीछे उसका घोर स्वार्थ छिपा हुआ है। दुर्योधन जानता था कि कर्ण बहुत वीर है और युद्ध में पांडवों, विशेषकर अर्जुन, का सामना यदि कोई कर सकता है, वह केवल कर्ण ही है। इसीलिए उसने कर्ण को अपने पक्ष में करने के लिए उसको राजमुकुट का चारा डाला था, जिसके जाल में कर्ण फंस गया। अंगदेश का 'स्वतंत्र' राजा बन जाने पर भी उसने कभी अपने राज्य के राजकार्य में रुचि नहीं ली और हस्तिनापुर में ही दुर्योधन के पास के भवन में रहता रहा।

घनिष्ट मित्र होने के कारण कर्ण दुर्योधन की अंतरंग मंडली का सदस्य बन गया। दुर्योधन, दुःशासन, शकुनि और कर्ण की यह चौकड़ी हस्तिनापुर राज्य की भाग्यविधाता बन गयी और सभी कुरुओं को अपनी मनमर्जी से हांकने लगी। दुर्योधन की उद्दंडता से त्रस्त होकर राजमाता सत्यवती अपनी दोनों बहुओं अम्बिका और अम्बालिका को लेकर पहले ही वन को प्रस्थान कर चुकी थीं। कुरुओं में सबसे वरिष्ठ पितामह भीष्म भी शायद ऐसा ही करते, परन्तु वे अपनी तथाकथित प्रतिज्ञा से बंधे हुए थे और अपने जीवन की अन्तिम सांस तक हस्तिनापुर के राज सिंहासन की रक्षा करने को बाध्य थे। इस चौकड़ी ने उनको भी केवल सेनापति और शोभा की वस्तु बनाकर छोड़ दिया था।

अंधे महाराज धृतराष्ट्र अपने बुद्धिहीन पुत्रमोह के कारण दुर्योधन के हर हठ को पूरा करते थे। शकुनि भी तरह-तरह की बातें करके उनके विवेक को नष्ट करता रहता था। विवश माता गांधारी भली प्रकार समझती थीं कि शकुनि और दुर्योधन विनाश के मार्ग पर चल रहे हैं, लेकिन उनके समझाने का दुर्योधन पर लेशमात्र भी प्रभाव नहीं होता था। यही हाल विदुर की सलाह का होता था। अतः सबने एक प्रकार से दुर्योधन के सामने हथियार डाल दिये थे और धृतराष्ट्र बस नाममात्र के महाराज रह गये थे।

इस स्थिति का पूरा लाभ दुर्योधन ने उठाया और पांडवों को माता सहित वारणावत जाने का आदेश दिलवा दिया, जहाँ भयंकर अग्नि के रूप में मृत्यु उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह तो महामंत्री विदुर सतर्क थे, जिसके कारण पांडवों को संकट की पूर्व सूचना पर्याप्त समय रहते ही मिल गयी और वे अपने प्राण बचाने का उद्योग कर सके, नहीं तो पांडवों की कहानी वहीं समाप्त हो गयी होती।

कृष्ण ने सोचा कि क्या दुर्योधन को किंचित् भी सन्देह नहीं हुआ था कि पांडव जीवित बच गये हैं? सन्देह के तीन कारण तो पूरी तरह स्पष्ट थे। एक, आग अमावस्या के दिन लगायी जाने वाली थी, परन्तु एक दिन पहले चतुर्दशी को ही लगा दी गयी थी। षड्यंत्र की योजना में ऐसा परिवर्तन साधारण बात नहीं होती। दो, जिस विरोचन को उसने आग लगाने का कार्य सौंपा था, वह लौटकर नहीं आया था, अर्थात् वह स्वयं भी जलकर मर गया था। ये दोनों कारण ही सन्देह करने के लिए पर्याप्त थे। लेकिन संदेह का तीसरा और सबसे बड़ा कारण यह था कि जले हुए भवन में जो ६-७ मानव कंकाल मिले थे उनमें एक भी भीम के शरीर के आकार का नहीं था। यह कैसे हो सकता है कि जलने पर किसी व्यक्ति का कंकाल उसके आकार से छोटा हो जाये?

कृष्ण को लगता था कि दुर्योधन को भी कुछ सन्देह हो गया होगा। परन्तु वह अपने सन्देह को स्पष्ट प्रकट नहीं कर सकता था, इसलिए उसने अपने गुप्तचर छोड़ रखे थे कि अगर कहीं पांडवों की लेश मात्र भी गंध मिले, तो पता लगाकर उनको वहीं समाप्त कर दिया जाए। परन्तु अत्यन्त बुद्धिमान और चतुर महामंत्री विदुर ने इस संभावना पर भी पहले ही विचार कर लिया था, इसलिए उन्होंने पांडवों को राक्षसों के ऐसे क्षेत्र में छिपने की सलाह दी थी, जहां पर कौरवों के गुप्तचर पहुंच ही नहीं सकते थे। बहुत दिनों बाद जब गुप्तचर शिथिल हो गये थे, तो पांडवों को बाहर आने का परामर्श दिया गया था, ताकि वे उचित समय पर प्रकट हो जायें।

द्रोपदी के स्वयंवर में अर्जुन द्वारा लक्ष्य भेद करते ही दुर्योधन को पता चल गया कि पांडवों को जीवित जलाकर मार डालने का उसका षड्यंत्र पूरी तरह विफल हो गया है, क्योंकि कठिन लक्ष्य भेद का वह कार्य कर्ण और अर्जुन के अलावा कोई अन्य व्यक्ति कर ही नहीं सकता था। लक्ष्य भेद के बाद वेष बदले हुए अर्जुन को पहचानने में उसे तनिक भी देर नहीं लगी। रहा सहा सन्देह भीम के सामने आने के बाद दूर हो गया। कृष्ण को याद है कि उस समय दुर्योधन की व्यग्रता देखने योग्य थी। उसने और उसके साथियों कर्ण, शिशुपाल, दुःशासन आदि ने प्रतियोगिता स्थल पर उपद्रव करने की पूरी कोशिश की, कुछ युद्ध भी किया, लेकिन उसमें कर्ण के पुत्र सुदात्मन के मारे जाने के बाद उनका विरोध शिथिल हो गया और वे अपने प्राण बचाने की चिन्ता करने लगे। कर्ण भी लड़ना छोड़कर अपने पुत्र के मृत्यु-शोक में डूब गया और फिर वे सब विवश होकर हस्तिनापुर को प्रस्थान कर गये।

(अगले अंक में जारी)

(दूसरी किस्त)

नहीं, नहीं, नहीं

मनमोहन भाटिया

इतवार की छुट्टी थी। आसिफ ने कहा- 'वसीम घर बैठे रहोगे, दम घुटेगा। बाहर की हवा में तन और मन दोनों को सकून मिलेगा। चल कोई फिल्म देखने चलते है। डिनर बाहर करते हैं।' दोनों भाई फिल्म देखने मूवी हॉल पहुंचे। रिहाना भी अपने ऑफिस की दो दोस्तों के साथ फिल्म देखने पहुंची थी। रिहाना को देख वसीम ने रिहाना को आवाज दी- 'रिहाना सुनो।'

रिहाना ने मुड़ कर देखा पर वसीम को अनदेखा कर दिया और अपनी दोस्त से कहा- 'स्नेहा, जल्दी चलो, फिल्म स्टार्ट न हो जाए।'

रिहाना की दोनों दोस्तों स्नेहा और सलमा ने देख कर कहा- 'रिहाना, वसीम है न?'

रिहाना- 'मेरा उससे कोई मतलब नहीं। वो जो भी हो, मैंने क्या करना है।' रिहाना ने तेज स्वर में कहा, क्योंकि वह वसीम को सुनाना चाहती थी।

रिहाना की बात सुन कर वसीम चुप रह गया। वसीम का दिल और दिमाग दोनों रिहाना में उलझे रहे। फिल्म भी नहीं देख सका। फिल्म देखने के बाद वसीम और आसिफ रेस्टॉरेंट में डिनर कर रहे थे। वसीम का दिमाग रिहाना को देखने के बाद उलझा हुआ था। उलझे वसीम को देख कर आसिफ ने पूछा- 'रिहाना थी?'

वसीम- 'हूं।'

आसिफ- 'एक बात पूछूं। हूर जैसी रिहाना को छोड़ क्यों दिया?'

वसीम- 'मां की बातों में आकर पैरों पर कुल्हाड़ी मार दी। अब क्या कर सकता हूं। रिहाना को देखा कैसे मुझे नजर अंदाज कर दिया।'

आसिफ- 'क्या उसने फिर से निकाह किया है?'

वसीम- 'शायद नहीं।'

आसिफ- 'अगर उसने दूसरी शादी नहीं की, तो एक बार बात करके देखो। दुबारा शादी कर लो।'

वसीम- 'रिहाना ने मुझे नजर अंदाज कैसे किया, तुमने देखा। कौन रिश्ता लेकर जायेगा।'

आसिफ- 'मैं अपने अब्बू अम्मी से बात करता हूं। कोई रास्ता जरूर निकलेगा।'

अगले दिन सुबह जब इस विषय पर चर्चा हुई तो वसीम के फूफा, आसिफ के अब्बू ने इनकार कर दिया- 'तुम दोनों जितना आसान समझ रहे हो, यह उतना ही पेचीदा मसला है। तलाक के बाद उसी बीवी से दुबारा निकाह एक ही सूरत में हो सकता है।'

आसिफ- 'कौन सी सूरत, अब्बू?'

वसीम के फूफा- 'पहले रिहाना का निकाह किसी और से होगा, उसका शौहर उसे तलाक दे, फिर इद्दत के बाद रिहाना और वसीम का निकाह हो सकता है।'

कुछ देर सोच कर आसिफ ने कहा- 'अब्बू फिल्मों में भी नकली निकाह होता है। किसी से रिहाना का निकाह करवाके तलाक दिलवा देते हैं। आज निकाह, कल तलाक। फिर वसीम भाई का निकाह रिहाना से करवा देते हैं।'

फूफा- 'यह फिल्म नहीं है, हकीकत है। तुम इसे बच्चों का खेल मत समझो। रिहाना के परिवार वालों को भी विश्वास में लेना होगा, साथ में वो आदमी भी विश्वासपात्र होना चाहिए, जो निकाह करके तलाक भी दे दे। अगर उसने तलाक नहीं दिया तब मुसीबत समझो।'

कुछ देर की चुप्पी के बाद विचार-विमर्श हुआ और यह फैसला लिया गया कि आसिफ की शादी रिहाना से करवा देते हैं। आसिफ अगले दिन रिहाना को तलाक दे देगा, फिर इद्दत के बाद वसीम से निकाह हो जायेगा।

वसीम के फूफा जब इस बात के साथ रिहाना के परिवार से मिले, तब सबने इनकार कर दिया। फूफा ने यकीन दिलाया कि आसिफ उसका लड़का है। निकाह के अगले दिन तलाक देकर दुबई चला जायेगा। निकाह के बाद वसीम और रिहाना अगल मकान में रहेंगे, जहां वसीम की मां का कोई दखल नहीं होगा। दोनों सकून के साथ रहेंगे।

आज भी भारत में तलाक के बाद लड़की के दूसरे निकाह में अड़चनें हजार आती हैं। हर किसी को एक साथी की आवश्यकता होती है। यही सोच कर रिहाना का परिवार मान गया और रिहाना को भी राजी कर लिया। फूफा ने निकाह के अगले दिन आसिफ की दुबई का टिकट भी बनवा लिया।

आसिफ और रिहाना का निकाह हो गया। दुल्हन के लिबास में रिहाना कयामत ढा रही थी। आसिफ की नजर रिहाना के चेहरे से हट नहीं रही थी। निकाह के बाद कमरे में घूंघट हटा कर आसिफ ने कहा- माशा अल्लाह, एक कयामत का जिक्र सुना था कि आएगी, खुदा, आज वो मेरे सामने है।

रिहाना आसिफ को देखती रही। आज पहली बार बहुत गौर से देखा। उस दिन फिल्म हॉल में सरसरी निगाह डाली थी। आसिफ किसी फिल्मी हीरो से काम नहीं था। लंबा कद, गोरा रंग, बलिष्ठ शरीर, तीखे नैन नक्श। किसी भी लड़की को मदहोश कर दे। रिहाना आसिफ को देखकर अपना आपा खो रही थी। उधर आसिफ रिहाना को देख मदहोश था। दोनों मन्त्र मुग्ध एक दूसरे को देख रहे थे। रिहाना के मुखड़े को हाथों में लेकर आसिफ ने धीरे से कहा- 'जन्नत का सुना था, अगर कुछ और भी मांगता, तो शायद खुदा वो भी दे देता। जिसकी उम्मीद नहीं थी। खुदा ने झोली में अपने आप डाल दी। जन्नत की हूर मुझे दे दी और घर को जन्नत बना दिया।'

रिहाना- 'शायरी सूझ रही है जनाब को।'

आसिफ- 'हकीकत बता रहा हूं। तुम शायरी समझो, मेरा तो सच है।'

रिहाना- 'मैं तो कुछ भी नहीं, तुमको हसीन क्यों लग रही हूं?'

आसिफ- 'मेरी नजरों से देखो, जन्नत की हूर जमीन पर उतर आई है।'

रिहाना- 'वसीम ने तो कभी ऐसा नहीं कहा।'

आसिफ- 'उस निष्ठुर की बात मत करो। आदमी परखने की तमीज नहीं है उसमें। वरना फूल सी शहजादी, हुस्न परी को तलाक नहीं देता।'

रिहाना- 'किस्मत भी एक चीज होती है, तलाक दिया, पछता रहा है, इसलिए तो फिर से निकाह कर रहा है।'

आसिफ- 'कल तक तो मैं भी यही सोचता था, परंतु आज इस हूर का साथ पाकर सोच रहा हूं कि किस्मत का लिखा कोई नहीं बदल सकता।'

रिहाना- 'हां, यह शत प्रतिशत सत्य है। किस्मत का लेखा जोखा हमें नहीं पता। हमारी डोर ऊपर वाले के हाथ में है। जो उसकी इच्छा होती है, हम करते रहते हैं।'

आसिफ- 'आज भी किस्मत एक खेल खेलने जा रही है। मुझे अहसास है कि तुम न नहीं बोलोगी। मैं जबरदस्ती नहीं करूंगा।'

रिहाना- 'मैं समझी नहीं? आश्चर्यचकित हो उठी रिहाना।'

आसिफ- 'खेल के नियम तय हुए कि मैं कल सुबह तुम्हें तलाक दे दूं, मगर मैं नियम तोड़ रहा हूं। कल सुबह मैं तुम्हें तलाक नहीं दूंगा। तुम्हारी रजामंदी चाहिए, कोई जबरदस्ती नहीं। तुम अपना समय लो। सोचो फिर बताना, तब तक तलाक नहीं होगा।'

आसिफ की बात सुन रिहाना स्थिति का अवलोकन करने लगी। धीरे से आसिफ ने रिहाना का हाथ पकड़ा और चूम लिया। नजदीक आकर अपनी बाहों में भर लिया। रिहाना सुध-बुध खोने लगी। गर्म सांसे दोनों की घुलने लगी। पूरी रात दोनों की आंखों में नींद न थी।

सुबह तड़के वसीम आसिफ के घर रिश्तेदारों को लेकर पहुंच गया। उतावलापन था, पूरी रात वसीम भी नहीं सो सका था। उसने शोर मचाना शुरू किया- 'आसिफ भाई, जल्दी आओ। अपना वायदा पूरा करो।'

वसीम के शोरगुल से आसिफ और रिहाना मदहोशी से होश में आये।

आसिफ- 'चलो रिहाना, सब आ गए हैं। बाहर चलते हैं। जब सब तलाक की बात करेंगे, मैं तुम्हारी आंखें देखूंगा, अगर झुकी आंखें मिली, मैं इशारा समझ जाऊंगा। तलाक को मना कर दूंगा।'

रिहाना- 'मेरा दिल धड़क रहा है। तुम बस टाल दो। मुझे वक्त दो।'

(अगले अंक में समाप्त)

तन्हाईयों में अक्सर खुद में खुद को ढूंढ़ा करते हैं
सुन अपना पता हम अपने दिल से पूछा करते हैं
जाने क्या करता है मन आसमान की सरहद पर
खामोश निगाहों से हम इस मन को देखा करते हैं
उड़ता जाता है मन ये मंजिल का कोई पता नहीं
किस मोड़ पे ठहरेगा पागल यह हर पल सोचा करते हैं
देखा है हमने चाँद हसीं ख्वाबों के दरीचे से आकर
जगती आँखों में ख्वाब कई अब मेरा पीछा करते हैं
कहीं डगर भटक न जाए मन ये दुनिया तो है बेगानी
अपनाकर भी अक्सर लोग
अपनों से धोखा करते हैं
कोई साथ नहीं देता है
क्या अपना क्या बेगाना
हंसकर मत मिलना 'जानिब'
इस दिल को रोका करते हैं

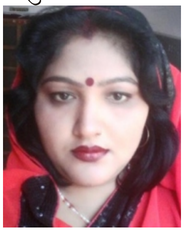

-- पावनी दीक्षित 'जानिब'

बातें दिल की अनसुनी रख लेती हूँ
आस्तीनों में नमी रख लेती हूँ
अब चलो जिद पे तुम्हारी फिर से मैं
आँखों में सपने कई रख लेती हूँ
ऐसे खुल के मिलना भी वाजिब नहीं
खुद को थोडा अजनबी रख लेती हूँ
सब बड़े ही फासले से मिलते हैं
दिल में अपने तुमको ही रख लेती हूँ
इन खलाओं में जली एक लौ सी
रंग उससे केसरी रख लेती हूँ
अब बजा लगती नहीं खामोशियाँ
हादसों की खलबली रख लेती हूँ
जा रही हो तुम 'शरर' लौटोगी कब
इतने दिन लब पे हँसी रख लेती हूँ

-- अल्का जैन 'शरर'

कोई क्यों तुम, एहसान करते हो
बड़ी मुश्किल में जान करते हो
खौफ से उस खुदा के भी तो डरो
मिला सभी कुछ, अभिमान करते हो
साथ ले जाओगे क्या ये धन-दौलत
क्यों नहीं कुछ तुम, दान करते हो
चंद रुपये कमाने के लालच में
क्यों भ्रष्ट अपना ईमान करते हो
पूछती हूँ मैं आज इस जमाने से
क्यों बेईमानी का सम्मान करते हो
वो चाहे या कि न चाहे, लेकिन
खुद ही तुम छिड़का जान करते हो
ठोकरें खाकर तो सम्भल नहीं पाते
और फिर मुझ पर कमान करते हो
मैं परेशां हूँ, तुम्हारी इस आदत से
जरा-सी बात पर तूफान करते हो
आग लगाकर दिलों में नफरत की
मौत का इकट्ठा सामान करते हो
वक्त पर खामोश बनी रहकर यूँ
क्यों न 'रश्मि' आला जबान करते हो

-- रवि रश्मि 'अनुभूति'

किसी गुरू की नहीं और किसी न चेले की
गजल नहीं है बपौती किसी अकेले की
चला रहे हैं वतन आज हुक्मरां ऐसे
नहीं है जिनमें कोई अक्ल एक धेले की
ये सोच को भी गिरा देगी एक दिन तेरी
खरीदने से बचो चीज कोई ठेले की
बता क्या है मुहब्बत तो सुन लो बस इतना
ये चीज काम की है पर बड़े झमेले की
वो भीड़ में तेरी नजरों से नजरें टकराना
मुझे हैं आज तलक
याद बात मेले की
बहुत है दूर करेले
सी बात करना तो
न खाई चीज तलक
भी कभी करेले की

-- महेश कुमार कुलदीप 'माही'

किस तरह तुमने भला दिल को सँभाला होगा
जब मुझे अपने खयालों से निकाला होगा
दूर वो मुझसे रहे खुश हो ये मुमकिन ही नहीं
दर्द को मान लो मुस्कान में ढाला होगा
हुक्म है एक सितारे को फना होने का
अब तो सूरज का तेरे घर में उजाला होगा
मैं इसी ख्याल में डूबा हूँ हुआ क्या है जो
बीच बाजार मुहब्बत
को उछाला होगा
रौंद इस दिल को अगर
तुमने बढ़ाये हैं कदम
रास्ता फिर वो यकीनन
कोई आला होगा

-- प्रवीण श्रीवास्तव 'प्रसून'

कहीं अँधेरा कहीं हुआ उजाला होगा
कब तलक मौत को अपनी टाला होगा
है सलाम तुम्हें शहीदो शत-शत नमन
कायरों से वतन को संभाला होगा
आखिरी सांस तक लड़ते रहे तुम यूं
सांसों को अपनी फिर खंगाला होगा
परवाह ना अपने जख्मों की जरा भी
तुमसे बड़ा कोई न दिलवाला होगा
लहू की आखिरी बूंद तक लड़ते रहे
यूं दुश्मन को वतन से निकाला होगा

-- कामनी गुप्ता

एक टुकड़ा धूप का डूबा अगर
एक टुकड़ा रात काली हो गयी
बादलों ने तान दी चादर घनेरी
चाँद की रंगत रूहानी हो गयी
शाम के साये बढ़े दो चार पग
झींगुरों के शोर में डूबा शहर
बेरियों के झुरमुटों के बीच फिर
जुगनुओं की हुक्मरानी हो गयी
मरमरी एहसास देती चाँदनी
मखमली दूब की चादर नयी
रातरानी की महक में डूबकर
झूमती पुरवा सुहानी हो गयी

-- शिप्रा खरे

बहुत मनाया, वो न माने, चले गये
तोड़ के सारे ताने बाने चले गये
दादी के किस्सों मे सच्चे लगते थे
बचपन के वो राजघराने चले गये
जात-पाँत धन-दौलत शोहरत का अन्तर
बचपन के सब मीत पुराने चले गये
जिनके खातिर खोले दिल के दरवाजे
वो स्वप्नों के महल ढहाने चले गये
नीड़ बनायी, मेहनत से पाला पोसा
पंख उगे, हो गये सयाने चले गये

-- दिवाकर दत्त त्रिपाठी

कभी रुलाकर, कभी हंसाकर जी लिये
शरारतें दिल से लगाकर जी लिये
उसकी पलकों को लबों से चूमकर
आँखों में इश्क सजाकर जी लिये
शरारों से खेलना किसे आता था
मुहब्बत की आग लगाकर जी लिये
पाबंदी बहुत थी जग के रिवाजों की
कई तोड़कर, कुछ निभाकर जी लिये
उसके आंसू तेरी पलकों पर रुके हैं 'दवे'
जिंदगी भर वे अश्क छिपाकर जी लिये

-- विनोद दवे

रोशनी की चाह में खुद-ब-खुद जलने लगे
कुर्बतें इतनी बढ़ी के फासले बढ़ने लगे
रेत की मानिंद हाथों से गिरा जाता है कुछ
इतना मत चाहो किसी की जान पर बनने लगे
जोड़ने की कशमकश में टूटता जाता हूँ मैं
साथ जीने की कशिश में जीते जी मरने लगे
मुनाफिकत की सोच जब अपना मुकद्दर हो गयी
सच्चे रिश्तों को तब हम
ताक पर रखने लगे
कुछ दिनों से है हमारा
हाले-दिल बेहतर सनम
सुनते हैं उन गेसुओं में
फिर से खम पड़ने लगे

-- अंकित शर्मा 'अजनबी'

सुनो ना प्रियतम नेह डोर अब बंधी है तुमसे
प्रीत हृदय की धड़कनों में ध्वनि छिड़ी है तुमसे
चांद तारे सजी बिंदिया चमके जैसे बिजुरी
पिया मेरी मांग सिंदूरी लाल सजी है तुमसे
शब्द संधि कर छन्द में सज लिखे नई गीत गजल
जिंदगी की सुर सरगम संगीत बनी है तुमसे
कंगन खनक खनक कर पुकारती हैं तुम्हें पिया
पायल की रूनझुन घुंघरू
भी छनकी है तुमसे
सुनो सूरज किरणें तेरे
पथ पर संग चली हैं
ज्यों ही तुम उगे गगन में
वे भी खिली हैं तुमसे

-- किरण सिंह

स्वाध्याय और ईश्वरोपासना

मनमोहन कुमार आर्य

क्या स्वाध्याय का ईश्वरोपासना से कोई सम्बन्ध है? प्रायः सभी मतों के लोग ईश्वरोपासना करते हैं परन्तु सद्ग्रन्थों के स्वाध्याय से दूर रहते हैं। उन्हें परिवार व अन्यत्र जो उपासना बता दी जाती है, उसी को वे अपना लेते हैं। इन बन्धुओं में अपनी कोई ऊहा व चिन्तन नहीं होता कि वे जो करते हैं वह उचित है या नहीं? नये-पुराने सभी मतों में कुछ पद्धतियां समान हैं और कुछ में परस्पर अन्तर भी हैं। सभी में यह परम्परा व मान्यता है कि उनके गुरु जी ने जो कह दिया अथवा दो चार पीढ़ी से जो होता आ रहा है, वही ठीक है, उसे बदला नहीं जा सकता। ऐसे बन्धुओं में अपना विवेक नहीं होता कि वे किसी विषय में अपनी कोई स्वतन्त्र राय निर्धारित कर सकें। ऐसे व्यक्तियों का सुधार होना कठिन है। यदि मूल में जाते हैं तो इसका कारण इन बन्धुओं की अविद्या तो सिद्ध होती ही है, इसके साथ ही इनके मतों के आचार्यों की अविद्या भी सिद्ध होती है। यदि सबकी अविद्या दूर हो जाये तो फिर एक उपासना पद्धति का निर्धारण करने में कठिनाई नहीं होगी। मुख्य प्रश्न यही है कि उपासना विषयक अविद्या को किस प्रकार दूर किया जाये?

अविद्या को सामान्यतः अज्ञान के नाम से भी जाना जाता है। अविद्या को दूर करने के लिए सबसे आवश्यक यह है कि मनुष्य को पूर्वाग्रहों से मुक्त होना चाहिये। जो व्यक्ति यह मान बैठा है कि वह जो कर रहा है वह ठीक है तो फिर ऐसे व्यक्ति को सुधारना कठिन है। अविद्या व अज्ञान दूर करने का सबसे सरल व सार्थक प्रभावशाली उपाय किसी वैदिक विद्वान सद्गुरू से उपदेश ग्रहण करना है एवं सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय करना है। अध्ययन करते हुए जिस बात को पढ़ा जाये उस पर पक्ष विपक्ष के रूप में स्वयं सम्भावित प्रश्न उत्पन्न कर उनका उत्तर जानने का प्रयास करना चाहिये। इस प्रकार से यदि स्वाध्याय वा अध्ययन करेंगे, तो धीरे धीरे मनुष्य को सत्य व असत्य का ज्ञान व स्वरूप स्पष्ट होता जायेगा।

उदाहरण के लिए हम 'सत्यार्थ प्रकाश' ग्रन्थ का अध्ययन करते हैं जिसमें सभी प्रकार की धार्मिक मान्यताओं को प्रस्तुत करते हुए वेदमत भी दिया गया है तथा इसकी पुष्टि में प्रमाण भी दिये गये हैं। इसी प्रकार इसके कुछ समुल्लासों में अन्य मत-मतान्तरों की मान्यताओं को प्रस्तुत कर उन पर विचार किया गया है और उनकी सत्यता वा असत्यता की परीक्षा निष्पक्ष भाव से, सत्य के निर्णयार्थ की गई है। इन सबको पढ़ते हुए हम अपने मन में सत्यार्थ प्रकाश में पुष्ट मान्यताओं पर विपक्षी बनकर भी विचार कर सकते हैं। यदि हम सफल होते हैं तो हमें अपने विचार व मान्यताओं को वैदिक व आर्य विद्वानों के सम्मुख रखकर अपने विचारों का मण्डन करना चाहिये और सत्यार्थप्रकाश समर्थित व स्वीकार्य विचारों का खण्डन करना चाहिये।

हमें यह ध्यान रखना चाहिये कि एक ही विषय में में दो परस्पर मान्यतायें कदापि सत्य नहीं हो सकतीं। जैसे यदि ईश्वर निराकार है तो इसका विरोधी विचार साकार सत्य नहीं हो सकता। इसी प्रकार यदि ईश्वर न्यायकारी है तो फिर वह नियमों को तोड़कर किसी के पाप क्षमा नहीं कर सकता। यदि क्षमा कर देता है तो वह न्यायकारी सिद्ध नहीं होगा। ईश्वर सर्वशक्तिमान है। उसने यह संसार बनाया है। संसार बनाने के लिए उसे अवतार लेने की आवश्यकता नहीं पड़ी तो संसार बनाने के बाद किसी दुष्ट को मारने व प्रताड़ित करने के लिए भी उसे अवतार की आवश्यकता नहीं है। वह अपने नियमों व सामर्थ्य के अनुसार उसका वध कर सकता है। एक दिन में लाखों करोड़ों मनुष्यों व प्राणियों को मारने वाले ईश्वर को किसी एक दुष्ट को मारने के लिए अवतार लेना पड़ता हो, यह बात सत्य सिद्ध नहीं होती।

ईश्वर की उपासना का अर्थ है कि ईश्वर के यथार्थ स्वरूप को जानकर मनुष्यों व सभी प्राणियों पर उसके अनेकानेक उपकारों को स्मरण कर कृतज्ञता व धन्यवाद व्यक्त करना। महर्षि दयानन्द ने ईश्वरोपासना के लिए 'सन्ध्या' नाम की पुस्तक लिखी है, जिसमें आचमन, इन्द्रियस्पर्श, मार्जन, प्राणायाम, अघमर्षण, मनसा परिक्रमा, उपस्थान, गायत्री, समर्पण और नमस्कार मन्त्रों का विधान कर सभी मन्त्रों के हिन्दी में अर्थों को भी प्रस्तुत किया है। मन्त्रों व इनके अर्थों को पढ़कर स्वाध्यायकर्त्ता व उपासक ईश्वरोपासना से पूर्णतः परिचित हो जाता है। योगदर्शन पर भी महात्मा नारायण स्वामी, आचार्य उदयवीर शास्त्री, पं. राजवीर शास्त्री, पं. आर्यमुनि आदि अनेक विद्वानों ने हिन्दी भाषा में टीकायें लिखी हैं जिनका अध्ययन करके उपासना के विषय में परिचित हुआ जा सकता है। इन सबके साथ वेदों का स्वाध्याय व वैदिक ग्रन्थ वेदमंजरी, ऋग्वेद ज्योति, अथर्ववेद ज्योति, वैदिक विनय, स्वाध्याय सन्दोह, श्रुति सौरभ, सोमसरोवर सहित सामवेद पर विश्वनाथ विद्यालंकार, आचार्य रामनाथ वेदालंकार आदि विद्वानों के ग्रन्थों का अध्ययन कर भी उपासना व भक्ति का पूर्ण ज्ञान व विधि जानी जा सकती है।

इनसे अर्जित ज्ञान से ईश्वर की उपासना करने से मनुष्य उपासना के फल ईश्वर से प्रीति, दुर्गुणों का छूटना, सद्गुणों का आधान, ईश्वर के ध्यान में लम्बे समय तक स्थिति आदि अनेक लाभ प्राप्त होते हैं। महर्षि दयानन्द ने उपासना का फल बताते हुए यह भी कहा है कि उपासना से अनेक लाभ होते हैं। यथा अग्नि के समीप जाने से जिस प्रकार से शीत की निवृत्ति होती है उसी प्रकार ईश्वरोपासना से मनुष्य के दुर्गुण, दुर्व्यसन आदि छूटकर उसके सद्गुणों में वृद्धि होती है। आत्मा का बल इतना बढ़ता है कि पहाड़ के समान दुःख प्राप्त होने पर भी वह घबराता नहीं है। उन्होंने यह भी बताया है कि जो ईश्वर की उपासना नहीं करता वह कृतघ्न और महामूर्ख होता है। ऐसा इसलिए कि मनुष्य द्वारा ईश्वर के उपकारों को भुला देने से वह कृतघ्न व महामूर्ख सिद्ध होता है। बिना स्वाध्याय व सत्योपदेश के उपासना का मर्म नहीं जाना जा सकता। इस दृष्टि से आर्यसमाज के अनुयायी भाग्यशाली हैं जिनके पास स्वाध्याय के अनेक ग्रन्थ उपलब्ध हैं। ■

अध्यात्म का अर्थ

प्रतिभा देशमुख

सर्व प्रथम हमें यह समझना है कि अध्यात्म क्या है? क्या भगवान की पूजा करना अध्यात्म है? क्या कीर्तन करना अध्यात्म है? क्या मंदिर में जाना अध्यात्म है? क्या किसी गुरु के प्रवचन सुनना अध्यात्म है? नहीं ये सभी कुछ अध्यात्म नहीं है तो फिर अध्यात्म क्या है? अध्यात्म यानी अध्य+आत्म. आत्म कहते हैं स्वयं को. तो स्वयं का अध्ययन करना ही अध्यात्म है.

अब आप स्वयं सोचें कि क्या स्वयं का अध्ययन करने के लिए किसी पूजा-पाठ की आवश्यकता है? क्या मंदिर जाने से स्वयं को जान जायेंगे? क्या किसी प्रवचन सुनने से स्वयं का ज्ञान हो जायेगा? नहीं, कदापि नहीं. स्वयं को जानने के लिए सबसे जरूरी है कि आपमें स्वयं को जानने की इच्छा पैदा हो जाये. इसी इच्छा को जिज्ञासा कहते हैं.

जब आपमें स्वयं को जानने की याने अध्यात्म की उत्कट इच्छा पैदा हो जाएगी तो आप निःसंदेह स्वयं को जान जायेंगे अर्थात आत्मज्ञान प्राप्त कर लेंगे. और स्वयं को जानने के लिए अंतर्मुख होना पड़ता है, आँखें बंद करके स्वयं के भीतर झांकना. और इस बात पर गौर करना कि हमने जो आज तक कर्म किए हैं, वो कितने सही थे कितने गलत, क्योंकि उन कर्मों का फल आपको मिल चुका है और आपको ज्ञात हो गया है कि जैसा कर्म, वैसा ही फल मिलता है. अतः स्वयं को विवेक की मथनी से मथोगे तब पता चलेगा कि मन में कितना न रखने योग्य सामान भरा पड़ा है. उसे बाहर निकालोगे तभी धीरे-धीरे आगे का रास्ता साफ नजर आयेगा. फिर आगे कैसा कर्म करना है आप सुनिश्चित कर पाओगे और आपका जीवन अध्यात्म की मंजिल की ओर अग्रसर होगा. जब तक मन स्वच्छ नहीं होगा तब तक आत्मिक उन्नति कभी नहीं होगी.

प्रार्थना करें, संगीत सुनें या कुछ देर मौन होकर बैठ जाएं. ये सभी अध्यात्म के अलग-अलग अभ्यास हैं, जिनसे रोजमर्रा के जीवन में होने वाले तनावों से मुक्ति

(शेष पृष्ठ २८ पर)

एक प्रतीक, एक फसाना

वीरेन्द्र परमार

सड़क के बीचोंबीच पीपल का एक पेड़ था। छोटा था तो लोगों को कोई परेशानी नहीं थी, लेकिन पेड़ जब विशाल और छतनार हो गया तो यातायात बाधित होने लगा। पेड़ के कारण दुर्घटनायें भी होने लगीं। इसलिए प्रशासन ने पीपल के पेड़ को काटने का फैसला किया। इस फैसले ने जनता को दो वर्गों में बांट दिया- वृक्ष समर्थक और वृक्ष विरोधी। इस एकमात्र फैसले ने जनता में उबाल पैदा कर दिया। लोग आंदोलित होकर सड़कों पर उतर आए। इस फैसले ने सदियों से साथ-साथ रह रहे पड़ोसियों के बीच दीवार खींच दी। एक वर्ग का कहना था कि किसी भी कीमत पर वृक्ष नहीं कटना चाहिए, जबकि दूसरा वर्ग शीघ्र इस वृक्ष का उन्मूलन चाहता था।

वृक्ष के पक्ष और विपक्ष में एक से बढ़कर एक तर्क दिए जाते, रामायण और महाभारत के दृष्टान्त प्रस्तुत किए जाते तथा ऋषि-मुनियों की सूक्तियां पेश की जातीं। वृक्ष समर्थकों का कहना था कि पीपल हमारी आस्था का जीवंत प्रतीक है। यह हमारी परंपरा और गौरवशाली संस्कृति का साक्षी है। यह जड़ वृक्ष नहीं बल्कि हमारा अनुभवी बुजुर्ग है, हमारा अभिभावक है जो हमें छाया तो देता ही है, हमारा दिशा-निर्देशन भी करता है। इसके हर पत्ते में देवताओं का निवास है। यह पीपल हमारे धर्म, ईमान और निष्ठा का पूंजीभूत रूप है। इसलिए भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि मैं सब वृक्षों में पीपल का वृक्ष हूँ- अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां।

पीपल कामनादायक वृक्ष है। यदि यह कट गया तो हमारा धर्म, विश्वास, परंपरा, संस्कृति और आश्रय सब कुछ नष्ट हो जाएगा। न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से बल्कि पर्यावरण की दृष्टि से भी इसकी उपयोगिता असंदिग्ध है। यह तो ऑक्सीजन का खजाना है। दूसरी ओर वृक्ष विरोधी वर्ग हर हाल में वृक्ष को उन्मूलित कर देना चाहता था। उनका कहना था कि वृक्ष के कारण प्रतिदिन दुर्घटनाएं होती हैं। अभी तक सौ से भी अधिक लोग वृक्ष के कारण असमय ही काल कवलित हो चुके हैं। यदि जल्द यह वृक्ष नहीं कटा तो हम आमरण अनशन शुरू करेंगे, हड़ताल करेंगे और यातायात को बाधित कर देंगे। अब वृक्ष वृक्ष ना रहा, एक अनुत्तरित प्रश्न बन गया- आस्था-अनास्था का प्रश्न, जीवन-मरण का प्रश्न, आस्तिकता-नास्तिकता का प्रश्न।

इन यक्ष प्रश्नों के सलीब पर दोनों वर्ग के लोग झूल रहे थे। विवाद ने विस्फोटक रूप धारण कर लिया था। पीपल ने समाज को बारूद के ढेर पर बिठा दिया था। इसका समाधान दिखाई नहीं दे रहा था। विवाद को हल करने के लिए शासन की ओर से पीपल कार्रवाई समिति का गठन किया गया। देखा-देखी वृक्ष समर्थकों ने 'पीपल रक्षा समिति' बना दी और उसके बैनर के नीचे गोलबंद होने लगे। वृक्ष विरोधी कैसे पीछे रहते? उन्होंने 'पीपल उन्मूलन समिति' का गठन कर दिया। दोनों पक्ष की तलवारें निकल चुकी थीं। जो समाज सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के नाम पर कभी संगठित नहीं हुआ, पीपल के नाम पर मरने-मारने के लिए आमादा था। वृक्ष समर्थकों के साथ पर्यावरणवादी भी मिल गए। इनका पक्ष और मजबूत हो गया।

शासन की ओर से एक वरिष्ठ मंत्री की अध्यक्षता में पीपल वृक्ष कार्रवाई समिति गठित की गई थी। इस समिति में अध्यक्ष के अतिरिक्त दस सदस्य थे जो विभिन्न पार्टियों के विधायक थे। इस समिति को छह माह में अपनी रिपोर्ट देनी थी, लेकिन छह महीने में वह रिपोर्ट नहीं दे सकी। फलस्वरूप छह महीने का अवधि विस्तार दिया गया। एक वर्ष के बाद समिति ने विधानसभा में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की, लेकिन इस रिपोर्ट ने मामले को और पेचीदा बना दिया। समिति के सदस्यों के बीच भारी मतभेद था। पांच सदस्यों का विचार था कि पीपल को यथास्थान रहने दिया जाए। वृक्ष की सुरक्षा के लिए चारदीवारी बना दी जाए और सड़क को मोड़ दिया जाए। संभव हो तो राज्य के खर्च पर वृक्ष की पूजा-अर्चना के लिए एक पुजारी नियुक्त कर दिया जाए। समिति के चार सदस्यों ने इसका विरोध करते हुए अपनी टिप्पणी दी कि इस वृक्ष को अविलम्ब काट दिया जाए। यह वृक्ष सामाजिक सद्भाव और धर्मनिरपेक्षता के लिए बहुत बड़ा खतरा बन गया है, अतः यथाशीघ्र इसका उन्मूलन ही समाज और देश के हित में है। अध्यक्ष सहित दो सदस्यों का मत था कि वृक्ष को दूसरी जगह स्थानांतरित कर दिया जाए। स्थानांतरण के लिए ऐसी वैज्ञानिक विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए कि वृक्ष की संवेदना आहत न हो। इसके लिए देश के उच्च स्तर के वैज्ञानिकों की एक परामर्श समिति बना दी जाए जो यह बताएगी कि वृक्ष को जड़ सहित उखाड़कर दूसरी जगह कैसे स्थापित किया जा सकता है।

इस रिपोर्ट के बाद तो सदन स्थायी हंगामे का केंद्र बन गया। सदन को बताया गया कि एक वर्ष में पीपल वृक्ष कार्रवाई समिति पर सत्तर लाख रुपए खर्च हो चुके हैं। विवादास्पद रिपोर्ट की समीक्षा के लिए एक समीक्षा समिति गठित की गई जिसे तीन माह में अपनी रिपोर्ट देनी थी। इस बीच कुछ पर्यावरणवादियों ने उच्च न्यायालय में मामला दायर कर दिया। मामला संवेदनशील था। इसलिए इसकी सुनवाई के लिए तीन वरिष्ठ न्यायाधीशों की एक खंडपीठ बना दी गई। खंडपीठ में मामले की सुनवाई चलती रही- तारीखें पड़ती रही, बहस होती रही। सुनवाई अब भी जारी है।

वृक्ष जड़ वृक्ष नहीं था, पात्र बन गया था- किसी के लिए नायक, किसी के लिए खलनायक। विधानसभा में वृक्ष चर्चा ही छायी रहती, इसको लेकर काम रोको प्रस्ताव पारित किए जाते, सदन की कार्यवाही बाधित होती और पक्ष-प्रतिपक्ष के बीच नोक-झोंक, तर्क-वितर्क-कुतर्क चलते रहते।

सदन ही नहीं बल्कि, आम और खास लोगों की बातचीत में भी वृक्ष की चर्चा छायी रहती। चुनाव के समय पीपल वृक्ष घोषणा पत्र बन गया। सभी दलों ने अपने-अपने घोषणा पत्रों के केंद्र में पीपल वृक्ष को रखा। वृक्ष समर्थक दलों ने मतदाताओं के बीच प्लास्टिक से बने पीपल के प्रतीक बांटे। एक दल ने तो अपना चुनाव चिह्न ही पीपल रख लिया। मतदाताओं में पीपल छाप कमीज बांटी गई। अब पीपल विज्ञापन बन गया था। वृक्ष समर्थकों और विरोधियों में अभी भी वाद-विवाद जारी है। न्यायालय में सुनवाई चल रही है और सदन में तर्क-वितर्क-कुतर्क बदस्तूर चालू है। ■

तू भी चर, मैं भी चरूं

अशोक मिश्र

थे तो वे दोनों गधे ही। उनकी मुलाकात अचानक हुई थी। अचानक हुई मुलाकात थोड़ी देर बाद मित्रता में बदल गई। बात यह थी कि मोहरीपुर के पास स्थित कालोनी के पार्क का खुला गेट देखकर एक गधा घुसा और जल्दी-जल्दी चरने लगा। थोड़ी देर बाद पता नहीं कहां से दूसरा गधा भी आ पहुंचा। पहले वाला गधा बाद में आने वाले गधे को देखकर भड़क उठा। उसने दुलत्ती झाड़ते हुए 'ढेंचू-ढेंचू' का गर्दभ राग अलापा और गुर्राया, 'अबे, तुझे कोई दूसरा पार्क या खेत नहीं मिला था चरने के लिए? इतना बड़ा देश पड़ा है चरने के लिए, तू वहीं क्यों आ गया जहां पहले से मैं चर रहा था?'

बाद में आने वाले गधे ने लपककर एक खूबसूरत फूल के पौधे को दांतों से पकड़कर उखाड़ा और चबाते हुए बोला, 'सचमुच, इन्सान अगर हिकारत से हमें गधा कहते हैं, तो कोई गलत नहीं कहते। हम गधे हैं, गधे थे और भविष्य में भी गधे ही रहेंगे। इतने बड़े पार्क में अगर एक दिन मैंने चर लिया, तो कहां का पहाड़ टूट पड़ा? इंसानों को देखो। वे जब देश, प्रदेश, जिला या तहसील को चारागाह समझकर चरते हैं, तो आपस में मिल बांटकर चरते हैं। 'थोड़ा तू चर, थोड़ा मैं चरता हूं' वाले सिद्धांत पर बड़ी ईमानदारी से अमल करते हैं। एक हम हैं कि मुट्ठी भर घास के लिए आपस में दुलत्ती झाड़ रहे हैं। लानत है हम गधों पर इस प्रवृत्ति पर।'

पहले वाला गधा उसका गर्दभ राग सुनकर थोड़ा शर्मिंदा हुआ और पहले की अपेक्षा थोड़ा नर्म आवाज में बोला, 'ठीक है...ठीक है, बहुत ज्यादा भाव मत खा। आज पेटभर चर ले और निकल ले।' पहले वाले गधे का

(शेष पृष्ठ २८ पर)

रुबिया

महातम मिश्र

रुबिया की आँखों में आंसू रुकने का नाम नहीं ले रहे थे। सुबक-सुबक कर रोये जा रही थी और आंसुओं की धार को अपने दुपट्टे में समेटते जा रही थी। कोई चारा भी तो नहीं था। अपना घर होता तो अबतक कइयों की पुचकार से अघा गई होती। कइयों के कंधे का सहारा मिल गया होता और उसके आंसू अकेलेपन के मोहताज न होते। पर यहाँ इस छात्रालय की अकेली कोठरी में दीवारों के अलावा उसका कौन था? जो अपना था जिसको वह नादानी में सबकुछ सौंपकर सुखी अरमानों का सपना देख रही थी, वही उसके उछलते हुए अरमानों का गला घोंट गया था।

निहायत अल्हड़ किस्म की गाँव की रहने वाली रुबिया अपने माँ-बाप की इकलौती संतान है। बड़े ही प्यार से मनोहर ने इसे अपना बेटा समझकर पाला है। खुद शिक्षक होने के नाते शिक्षा का मूल्य बखूबी समझते थे। रुबिया की माँ भी पढ़ी लिखी महिला हैं। २० वर्ष पहले जब रुबिया का जन्म आपरेशन से हुआ तो डाक्टर ने बताया कि पेट में गाँठ है जिसको निकालना पड़ेगा और साथ ही बच्चेदानी भी निकालनी पड़ेगी, अन्यथा जान का जोखिम है। यह सुनकर मनोहर भाई अर्धविक्षिप्त से हो गए और मजबूरी में ऑपरेशन के लिए यह मानकर सहमत हो गए कि यही बच्ची मेरे लिए बेटा और बेटी दोनों है। पति पत्नी दोनों ने उसे खूब ढंग से पढ़ाया लिखाया और रुबिया का दाखिला मेरिट बेस पर डाक्टरी में हो गया। गाँव घर के लिए यह बहुत बड़ी बात थी। माँ-बाप की खुशियों का कोई पारावार न था। तमाम खुशियाँ परिवार की झोली में एक साथ आ गई जिसे लेकर वह बड़े शहर के बड़े कालेज में बड़े ही उत्साह के साथ दाखिल हुई।

सब कुछ बदला हुआ सा लगा, गाँव के परिवेश में पली हुई रुबिया को। कुछ दिन तो गुमसुम सी कमरे से स्कूल तक सीमित हो गई थी, पर धीरे-धीरे अन्य बच्चियों के संपर्क में आई और दिन अपने गति से गुजरने लगे। अपनी जबाबदारी से वाकिफ रुबिया का पूरा ध्यान पढने में केंद्रित होता था और वह अपने उन्नत पथ पर व्यस्त हो गई थी। उसकी लगन और सादगी से कालेज में उसकी प्रशंसा होने लगी थी।

रुबिया खूबसूरत तो थी ही, गाने बजाने में भी कम न थी। कालेज के लड़के उसकी तरफ आकर्षित होने लगे तो लड़कियां कुछेक उससे जलन भी करने लगीं। गाँव के गंवारपन व पुराने विचार रहन सहन पर फब्तियाँ भी कसने लगीं। रुबिया लड़कों से बहुत कम बात करती थी, शायद उसे यह पसंद नहीं था। उसका यह फैसला आज के समय के अनुकूल न होने से, कई मौके पर बेवजह उसको तानों से गुजरना पड़ता था। जिससे साथ की सहेलियां उससे कटने लगी और रुबिया फिर अकेली हो गई। अकेलापन उसको खलने लगा, उसपर कुछ उम्र कुछ दिखावा दोनों का असर हुआ और वह लड़कों से बेहिचक मिलने के अवसर तलाशने लगी। इसी दौरान उसने गिरीश को अपने बहुत नजदीक पाया, जो उससे सीनियर था और वह भी गाँव का ही रहने वाला था। धीरे धीरे रुबिया गिरीश के आगोश में समाती गई और उससे दिखावे में ही सही, मर्यादा का उलंघन हो गया। बहुत पश्चाताप भी हुआ उसको, पर क्या करती, अपनी ही नजरों में गिर गई। उसने गिरीश से शादी के वादे को पूरा करने पर दबाव बढ़ाया तो उसे पता चला कि गिरीश किसी और से प्रेम करता है और उससे ही शादी करना चाहता है।

ठगी हुई रुबिया मन मसोसकर रह गई और अपनी नादानी को अपने पेट में लिए हुए अपने गांव वापस गई। मनोहर भाई को दूसरा बड़ा झटका लगा और परिवार पूरी तरह से टूट गया। कुछ दिनों बाद वह फिर कालेज में गई और अपने मुसीबत के भार से किसी तरह मुक्त हो गई। धीरे-धीरे पुरानी बातों को दफन करके वह अपने लक्ष्य पर चलने लगी। आज वह एक कुशल डाक्टर बनकर अपने गाँव पंहुची है, जिससे मनोहर भाई की आशा जीवंत हो गई है और गांव जिसे रुबिया के बारे में उसके बचपने के अलावा कुछ भी नहीं पता है, खुश होकर गले से लगा लिया।

मनोहर भाई ने अपनी पुश्तैनी जमीन पर एक अस्पताल बनवाने का फैसला किया और रुबिया का नाम इलाके में रोशन हो गया। लोगों को एक कुशल डॉक्टर मिल गया तो रुबिया को इज्जत का मुकाम। माँ-बाप ने बहुत समझाया पर शादी के लिए राजी न होने वाली रुबिया अपनी मर्जी के दृश्य को याद करके काँप गई और आज माँ के आगे हार गई। डॉ. नरेश जो उसके अस्पताल के एक अच्छे डाक्टर हैं उनको अपने जीवन साथी के रूप में वरण कर लिया।

मनोहर भाई उसके इस फैसले से अति प्रसन्न हैं रुबिया के साथ ही साथ उनका भी घर जो बस गया। रुबिया भी खुश है कि वह एक महिला डॉक्टर है और महिलाओं के साथ ही साथ वह पुरुषों का इलाज कर रही है। दु:ख केवल इतना है कि वह अपने उस बच्चे के साथ न्याय नहीं कर पाई जो उसके एक भूल का गवाह था, अब वह किसी को ऐसा नहीं करने देती है और कई अनाथ बच्चों को भरपूर मदद करती है जिसे वह अपना प्रायश्चित समझती है।

परवाह और जरूरत

नीतू शर्मा

'माँ आज तुम खिचड़ी बनाकर खा लेना, मैं और रश्मि फिल्म देखने जा रहे है। खाना बाहर ही खाएँगे।' राजेश के ये शब्द सुनकर सुजाता की आँखे नम हो गईं। अपने मुँह से कुछ कहने की हिम्मत नहीं जुटा पाई। बड़ी मुश्किल से आंसू रोकते हुए सुजाता ने अपना सिर हिलाकर 'हां' किया। राजेश और रश्मि बाहर चले गए।

पूरे घर में सन्नाटा पसरा है। सुजाता अकेले बैठी-बैठी यादों में खो जाती है। अब इन यादों के अलावा उसकी जिन्दगी में बचा ही क्या है? राजेश के पिता की मौत के बाद सुजाता एकदम अकेली हो गई। एक पोता है वह भी हॉस्टल में रहता है। घर में उसके मन की बात सुनने वाला कोई नहीं है। सुजाता को राजेश के बचपन की बातें याद आती हैं।

कभी सपने में भी नहीं सोचा कि बड़ा होकर मेरा बेटा इतना बदल जाएगा। सच है! हकीकत को आँखों के सामने बदलते देखते है तो यकीन ही नहीं होता है।

वह राजेश के पिता की तस्वीर से बातें करके अपना जी बहलाने लगती है। 'आपको याद है बचपन में राजेश मेरे बिना एक दिन भी नहीं रह सकता था। एक बार पिताजी बीमार हो गए थे। राजेश स्कूल गया हुआ था और मैं उसे यहीं छोड़कर मायके चली गई थी। जब वो घर आया और मैं नहीं मिली तो कितना रोया! और खूब समझाने पर भी चुप नहीं हुआ था, तब आपको तुरन्त उसे मेरे पास लाना पड़ा था। और आज वहीं राजेश मुझे घर में देखकर भी अनदेखा कर देता है।

मैं कभी बीमार पड़ जाती तो कैसे मेरे आगे पीछे घूमता था! अपने हाथों से मुझे खाना खिलाता था। घर के मंदिर में बैठकर प्रार्थना करता कि भगवान जी मेरी माँ को जल्दी ठीक कर दो, मैं कभी उन्हें परेशान नहीं करूंगा। अब तो जैसे मेरे जीने मरने से उसे कोई फर्क ही नहीं पड़ता।'

फिर खुद ही अपने आप को तसल्ली देती है कि वह भी क्या करे, फुर्सत ही कहां है उसे, जो मुझसे बात करेगा। दिन-भर तो ऑफिस में रहता है। थका-हारा घर आता है। और मेरे पास आकर बैठेगा तो आराम कब करेगा बेचारा। फिर मन में विचार आता है कि समय तो बस मेरे लिए नहीं है। छुट्टी वाले दिन भी कभी दस मिनट भी मेरे पास बैठकर मेरे मन का हाल जानने की कोशिश नहीं की उसने। सुजाता के मन में विचारो का युद्ध छिड़ गया। सुजाता का मन जोर-जोर से चीख कर कह रहा था- 'सुजाता! सच बहुत कड़वा होता है, किन्तु सच यही है। इस दुनिया में बिना स्वार्थ के कोई किसी की परवाह नहीं करता। जिसकी जितनी ज्यादा जरूरत होती है, इंसान उसकी उतनी ही ज्यादा परवाह करता है। राजेश को कभी तेरी परवाह थी ही नहीं। उसे बस तेरी जरूरत थी, जिसे तू परवाह समझ बैठी। अब तेरी जरूरत खतम हो गई है, तो परवाह भी खतम।'

(शेष पृष्ठ २८ पर)

स्वामी दयानंद और स्वामी विवेकानंद : तुलनात्मक अध्ययन

डॉ विवेक आर्य

मैंने स्वामी दयानंद और स्वामी विवेकानंद को लेकर एक शंका प्रस्तुत की थी। अनेक मित्रों ने अपने अपने विचार प्रकट किये। सभी का धन्यवाद। इस पर चर्चा करनी आवश्यक है। दोनों महापुरुषों के विचारों में भारी भेद हैं। इसलिए इस पर चिंतन की आवश्यकता है। मनुष्य जीवन का उद्देश्य सत्य को ग्रहण करना एवं असत्य का त्याग करना है। इसलिए हम भी उसी का अनुसरण करें। यही इस लेख का उद्देश्य है।

१. स्वामी दयानंद वेदों को ईश्वरीय वाणी होने के कारण सत्य मानते हैं। स्वामी दयानंद ने यह मान्यता वर्षों के अनुसन्धान, चिंतन, मनन एवं निधिध्यासन के पश्चात स्थापित की थी। एक अनुमान से स्वामी दयानंद ने ५००० धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन उस काल में किया था जिसमें से ३००० पुस्तकें उन्हें उपलब्ध थीं। स्वामी विवेकानंद का वेदों में प्रवेश नहीं था। वे अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस द्वारा मान्य मूर्तिपूजा पद्धति एवं काली पूजा और वेदांत के उपासक थे। इसलिए उनकी विचारधारा केवल पुराणों और वेदांत तक सीमित थी।

२. स्वामी दयानंद ने पुराणों को मनुष्यकृत सिद्ध किया। स्वामी जी ने बताया कि पुराण अनेक कालों में विभिन्न मनुष्यों द्वारा रचे गए। पुराणों के रचनाकारों ने अपना नाम न देकर व्यासकृत दिखाकर एक अन्य प्रपंच किया था। पुराणों में वेद विरुद्ध मान्यताएं, परस्पर विरोध, देवी-देवताओं के विषय में अपमानजनक बातें जैसे उन्हें कामुक, चरित्रहीन बताना, अज्ञानी बताना, परस्पर शत्रुता-भाव आदि देखकर कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति उन्हें धार्मिक ग्रन्थ नहीं मान सकता। स्वामी विवेकानंद ने इतना गंभीर चिंतन पुराणों में धर्म-अधर्म विषय को लेकर नहीं किया था।

३. स्वामी दयानंद ने अपने अनुसन्धान से यह सिद्ध किया कि वेदों में गोमांस भक्षण और यज्ञ में पशुबलि आदि का कोई उल्लेख नहीं है। मध्य काल में सायण-महीधर आदि ने वेदों के गलत अर्थ करके यह प्रपंच फैलाया। स्वामी विवेकानंद वेदों में गोमांस भक्षण और पशुबलि आदि स्वीकार करते है। वे यहाँ तक लिखते हैं कि प्राचीन काल में भारत देश इसलिए महान था क्योंकि यज्ञों में पशुबलि दी जाती थी और ब्राह्मण गोमांस भक्षण करते थे। संभवतः उनकी बंगाली पृष्ठभूमि उन्हें इस मान्यता को स्थापित करने में सहायता करती थी। गोरक्षा के मुद्दे पर आपको रा.स्व. संघ कभी स्वामी विवेकानंद का नाम लेते नहीं दिखेगा। स्वामी दयानंद का वेद और गोमांस के सम्बन्ध में चिंतन सभी को स्वीकार्य है।

४. स्वामी दयानंद ने अपने भागीरथ अनुसन्धान से यह सिद्ध किया कि वेदों के जो भाष्य पश्चिमी लेखक जैसे मैक्समूलर आदि कर रहे हैं, वे भ्रामक हैं। उनसे वेदों की प्रतिष्ठा की हानि होगी। स्वामी दयानंद मैक्समूलर को साधारण विद्वान् की श्रेणी का भी नहीं मानते। उन्होंने विदेशी लेखकों के विषय में एक लोकोक्ति के माध्यम से उनके ज्ञान के स्तर का समुचित आंकलन किया था। स्वामी दयानन्द लिखते हैं- जिस देश में कुछ भी पैदावार नहीं होती वहां पर अरंडी को भी वृक्ष समान समझा जाता है। वैसा ही स्तर विदेशी लेखकों का वेद सम्बन्ध में ज्ञान को लेकर है। विदेशों में संस्कृत एवं वेद विद्या के ज्ञान से कोई परिचित नहीं है, अतः मैक्समूलर आदि लेखक भी बड़े विद्वान् गिने जाते है। स्वामी विवेकानंद वेदों के भाष्यों के विषय में अनुसन्धान से परिचित नहीं थे। अन्यथा वे मैक्समूलर को आधुनिक सायण की उपाधि देकर महिमामंडन नहीं करते।

५. स्वामी दयानंद ने पाया कि हिन्दू समाज के पतन का मुख्य कारण मूर्ति पूजा और उससे सम्बंधित अन्धविश्वास है। उन्होंने मूर्तिपूजा को वेद विरुद्ध भी सिद्ध किया। स्वामी दयानंद ने ईश्वर के निराकार स्वरूप की स्तुति, प्रार्थना एवं उपासना करने का प्रावधान किया। यह मान्यता प्राचीन ऋषि परंपरा के अनुसार थी न कि कल्पित। स्वामी विवेकानंद जीवन भर मूर्तिपूजा का समर्थन करते रहे। उनके अलवर नरेश के संग वार्तालाप को अधिकाधिक प्रचारित भी इसी उद्देश्य से किया जाता है। उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस भी मूर्तिपूजक थे।

स्वामी दयानंद जिस अज्ञान रूपी खाई से हिन्दू समाज को निकालना चाहते थे हिन्दू समाज उसी खाई में और अधिक गहरे धसता चला गया। पहले राम और कृष्ण जी की मूर्तियां पूजी जाती थी। फिर कल्पित देव-देवियों जैसे काली, संतोषी माँ आदि को महत्व मिला। कालांतर में गुरुओं और मठाधीशों की मूर्तियां स्थापित हुई। सभी पिछली स्थापित मूर्तियों का त्याग कर साईं बाबा उर्फ चाँद मियां एक मस्जिद में रहने वाले मुस्लिम फकीर को चमत्कार की आशा से पूजना आरम्भ कर दिया। कर्म करने का जो सन्देश श्री कृष्ण ने गीता में दिया था उसकी धज्जियाँ स्वयं हिंदुओं ने उड़ा दी। संघ द्वारा कुछ दिन पहले मुस्लिम फकीर साईं बाबा की पूजा को हिन्दू दर्शन कहकर स्वीकार्य बताना दुर्भाग्यपूर्ण है।

६. स्वामी विवेकानंद मांसाहारी थे, धूम्रपान के व्यसनी थे। ३२ वर्ष की आयु में अस्थमा एवं मधुमेह से उनकी असमय मृत्यु हो गई। मांसाहार के इतने शौकीन थे कि जब अमरीका गए तब केवल मांस खाया। कुछ भक्तों ने पूछा कि आपके मांसाहारी होने से आपके देशवासी नाराज होंगे। स्वामी विवेकानंद बोले कि जो नाराज होते हों, तो मेरे लिए यहाँ पर शाकाहारी भोजन की व्यवस्था कर दें। स्वामी दयानंद ब्रह्मचर्य और प्राणायाम के बल पर बलिष्ठ शरीर के स्वामी, शाकाहारी होने के साथ साथ निरामिष भोजी भी थे। कोई व्यक्ति अपने नाम के समक्ष स्वामी शब्द लगाता है तो वह अपनी इन्द्रियों और मन का स्वामी होता है। स्वामी विवेकानंद की रूचि मांसभक्षण और धूम्रपान में देखकर उन्हें अपनी इन्द्रियों का स्वामी किसी भी आधार पर नहीं कहा जा सकता।

७. स्वामी विवेकानंद के विचारों में मुझे कहीं भी एकरूपता नहीं दिखती। एक ओर वे भारतीय दर्शन के ध्वजवाहक हैं, वहीं दूसरी ओर विदेशियों की भरपूर प्रशंसा करते दीखते हैं। कभी वे ईसाईयों की आलोचना करते हैं, तो कभी ईसा मसीह के गुणगान करते दीखते हैं। कभी इस्लाम की आलोचना करते हैं, तो कभी मुहम्मद साहिब के गुणगान करते दीखते हैं। कभी अंग्रेजों के भारतीयों को गुलाम बनाने पर निंदा करते हैं, तो कभी अंग्रेजों की प्रशंसा करते दीखते हैं। उनके विचारों में एकरूपता, सिद्धांत की स्थापना जैसा कुछ नहीं दीखता। उनके इसी चिंतन का असर रामकृष्ण मिशन पर भी स्पष्ट दीखता है। १९८० में इस मिशन ने 'हम हिन्दू नहीं हैं' के नाम से कोर्ट में याचिका दायर कर स्वयं को हिंदुओं से अलग दिखाने का प्रयास किया था।

८. स्वामी विवेकानंद के शिकागो भाषण का बड़ा महिमामंडन किया जाता है। कुछ लोग इस भाषण को दुनिया में परिवर्तन करने वाला भाषण करार देते हैं। मैंने १८९३ में विश्व धर्म समेल्लन में दिए गए अन्य वक्ताओं के भाषण को पढ़ा। स्वामी विवेकानंद की उपस्थिति में उसी मंच से अनेक ईसाई वक्ताओं ने वेदों में गोमांस भक्षण और यज्ञों में पशुबलि जैसे विषयों पर वेदों की प्रतिष्ठा को धूमिल करने वाले अनेक भाषणों को पढ़ा था। स्वामी विवेकानंद ने उनका किसी भी प्रकार से प्रतिकार नहीं किया। क्यों? क्योंकि स्वामी विवेकानंद आलोचना का शिकार नहीं बनना चाहते थे। स्वामी विवेकानंद ने ईसाई मिशनरियों का भी कोई प्रतिकार नहीं किया, जो हजारों-लाखों हिन्दुओं को ईसाई बनाने में लगे हुए थे।

स्वामी दयानंद द्वारा १८६९ में हुए सैकड़ों पंडितों उपस्थिति में किये गए काशी शास्त्रार्थ को इतिहास की सबसे बड़ी घटना क्यों नहीं माना जाता? स्वामी दयानंद ने शताब्दियों से प्रचलित धार्मिक अन्धविश्वास को मूल से नष्ट करने का संकल्प लिया था। वे पद, धन, प्रतिष्ठा आदि किसी भी प्रकार के प्रलोभन में नहीं आये। उन्हें प्राण हानि तक का खतरा था। काशी नरेश से लेकर सभी पंडित अपनी रोजी-रोटी के चलते उनके विरुद्ध थे। मगर सत्य के उपासक दयानंद ने को केवल ईश्वर विश्वास और वेदों के ज्ञान पर भरोसा था। इस घटना का महिमामंडन शिकागो भाषण के समान किया जाता तो आज हिंदुओं की संतान मुस्लिम पीरों और हमलावरों की कब्रों पर सर न पटक रही होती।

इतने भारी सैद्धांतिक मतभेद होने पर भी स्वामी दयानंद के स्थान पर स्वामी विवेकानंद का महिमामंडन करना हिन्दू समाज को शोभा नहीं देता। दयानंद केवल

(शेष पृष्ठ २८ पर)

तुम्हें दिल में ही नहीं, रूह में बसाया है
तुम्हें ही याद रखा खुद को भी भुलाया है
बड़ी ही बेकरारी रहती है अब सुबहो-सहर
दिल ने भी किस तरह के मोड़ पर फंसाया है
तुमसे हैं इतने गिले, तुमको पर सुनाऊं कैसे
कब कोई बात मेरी तुमको समझ आया है
जब भी सोचा, अब तुझसे दूर चले जायेंगे
दिल ने आँखों से अपनी मिन्नतें बरसाया है
एक दुआ की तरह होठों से तू निकलता है
और तुम्हें ताबीज सा सीने से फिर लगाया है
बस समझ लो कि तुमसे ही है रौशनी मुझमें
वरना स्याह रात मेरी
जिंदगी का सरमाया है
चलो फिर प्यार की
दुनिया में घर बनाते हैं
मैंने अरमानों की नींव
पहले ही बनाया है

-- साधना सिंह

दिल के दरवाजे पर नजरों से दस्तक दी थी कभी
दबे पैर आकर मेरी जिंदगी में आहट की थी कभी
कोरा कागज था जीवन मेरा तुमसे मिलने से पहले
कोरे कागज को भरने के लिए मोहब्बत की थी कभी
उन दिनों मेरी तन्हाई को आबाद किया तेरे साथ ने
बैठो पल दो पल तुम साथ मेरे, यूँ दावत दी थी कभी
इजहार ऐ मोहब्बत तुमने किया था नजरों से अपनी
दिल के पन्ने पर मोहब्बत की लिखावट दी थी कभी
कैसे भूल सकते हो तुम राजाओं सा स्वागत किया था
दिवाली नहीं थी पर दिवाली सी सजावट की थी कभी
मेरे दिल की सल्तनत पर आज भी तुम्हारा राज है
इसी सल्तनत को पाने के लिए बगावत की थी कभी
कैसे रहे तुम मेरे बिन, तुम्हारे बिना लाश बन गयी मैं
तेरे जाने के बाद खुदा से
तेरी शिकायत की थी कभी
यकीं था मोहब्बत और खुदा
पर लौट कर आओगे तुम
तुम्हें पाने को सुलक्षणा खुदा
की इबादत की थी कभी

-- डॉ सुलक्षणा अहलावत

चाँद से भी खूबसूरत, मुखड़ा तुम्हारा हमें लागे
हर बार तुम्हारा चेहरा, हर बार तुम्हारी आँखें
देखकर कुछ तुमको, हर कोई होता यहाँ हैरान
तराश रब इस कदर कि होता हर एक परेशान
बहुत कुछ है अनकहा, है बहुत कुछ अनसुना
याद रहे जरूरी नही, होता है सब कुछ सुनाना
महेफिल में सब के, सामने मुस्कुराते हम रहेंगे
दर्द दिल में भरकर, प्यार तुम्हीं से ही हम करेंगे
अब नही कुछ कहना, और नहीं कुछ सुनाना
बिना कहे अब समझेंगे, तुम्हें नहीं कुछ कहना
अब किसी को देखने की आस नहीं होती 'राज'
यहाँ के हर चेहरे पर, एक कविता लिखी है आज

-- राज मालपाणी

मुहब्बत की दिल में इबारत लिखी है
फकत प्यार की ही तो चाहत लिखी है
करेगा जिसे याद सारा जमाना
बड़ी खूबसूरत सी आदत लिखी है
उठी बीच रिश्तों के दीवार देखो
दिलों में ये कैसी सियासत लिखी है
मिली बेवफाई हमें तो सदा ही
मगर फिर भी हमने तो उल्फत लिखी है
उठी उँगलियाँ इस जमाने की हम पर
कलम ने कभी जो हकीकत लिखी है
भले नफरतें पाईं हमनें सभी से
मगर सबकी खातिर मुहब्बत लिखी है
फना होके करती जो औरों को रोशन
शमआ की भी क्या किस्मत लिखी है
वो है तन का उजला मगर मन का काला
कि नीयत में उसके बगावत लिखी है
शराफत हो दिल में भले ही हमारे
निगाहों में लेकिन शरारत लिखी है
अमन की हो बातें लबों पर सभी के
'रमा' एक छोटी सी हसरत लिखी है

-- रमा प्रवीर वर्मा

घेरे हुए थे मुझे चारों ओर से
पीड़ामय जग के सारे बादल काले
अपनी अँधेरी झोंपड़ी में/अकेले बैठा मैं
देख रहा था आशा में/अंबर की हर चमक
कि अब खुल जायेगा जीवन का रास्ता
निराशा की टप-टप बूँदें बदल गयीं
वर्षा की झड़ी में/भिगो गयी मुझे अंदर तक...
बहने लगी गली-गली में
नदी बनकर गंदा पानी
मल-मूत्र की बदबू फैलाता
नहीं कर पाता साहस
बाहर निकलने का
देने लगी निमंत्रण मौन की निशा
आओ, चुप्पी की गोद में सो जाओ,
मेरे अंदर की भूख और प्यास की जलन
बन गयी वेदना का गीत
सूख गए आँसू हृदय के रेगिस्तानी में
दीनता की गाथा ने आज स्याही बन
निकाला है गली में पहला कदम!

-- पी. रवींद्रनाथ

तेरी यादों के हर पल को/हर लम्हे को
हर अहसास को/हर ख्वाब को
अपने मुट्ठी में बंद करना चाहा
पर बंद मुट्ठी से रेत की भाँति
फिसल चला तेरी यादों का
सारा करवाँ
तेरी यादें भी/तेरी तरह बेवफा निकलीं

-- रीना मौर्य 'मुस्कान'

सोचता हूँ आपके नाम पर प्यार लिख दूँ
दिल के कोरे कागज पर इजहार लिख दूँ
हरपल आपके दीदार को तरसते ये नैना
बताओ मेरे इन नैनों में इंतजार लिख दूँ
धड़कनों में धड़कता है आप ही का नाम
आपकी चाह में अपने को बेकरार लिख दूँ
मेरी ख्वाइशें गर कबूल हो जाये आपको
हथेली पर आपके प्यारा आभार लिख दूँ
रूह को नहीं तन को चाहने लगे हैं लोग
ऐसी चाहत को मैं काला बाजार लिख दूँ

-- बेखबर देहलवी

मौत का जारी कोई फरमान कर
हो सके तो ऐ खुदा एहसान कर
जिंदगी तो काट दी मुश्किल में अब
रास्ता जन्नत का तो आसान कर
जी रहा है आदमी किस्तों में अब
धड़कनो की बन्द यह दूकान कर
टूट जाती हैं उमीदें सांस की
खत्म तू बाकी बचा अरमान कर
हसरतें सब बेवफा सी हो गईं
आसुओं के दौर से अनजान कर
हार जाता है यहां हर आदमी
क्या करूँगा मौत को पहचान कर
है गरीबी से मेरा रिश्ता बहुत
बेबसी का मत मेरी अपमान कर
फूट कर वो रात भर रोता रहा
क्यूँ बहुत खामोश है सब जानकर
जब अँधेरे ही मेरी किस्मत में हैं
रौशनी से मत खड़ा तूफान कर

-- नवीन मणि त्रिपाठी

ढूंढ़े से तो मिला है तू/वर्षों किया है जब इंतजार
तब पद्म बनकर खिला है तू
बढ़ आगे तू हिंद के शेर/पीछे खड़ा है देश तुम्हारे
ना कर अब तू जरा भी देर/देश को है समृद्ध बनाना
हर चेहरे पे है मुसकान सजाना
भारत को विश्वगुरू का आसन है दिलाना
निरंतर बढ़ते पग तेरे/आशा की किरण जगाते हैं
दिखाते हैं हमें नये सवेरे/सुन रुकना ना तू झुकना ना
साथ खड़े हैं सभी तेरे/अब तो डोल रहे हैं शत्रु के डेरे
गद्दारों के नैनों से आज नींद भी उड़ी हुई है
जाने कौन सा गुनाह छुपाया था उन्होंने
जो उनकी धड़कनें आज यूं बढ़ी हुई हैं
जनता आज हर्षित है/तुम्हारे कदम से कदम मिलाकर
देख तेरी जनता गर्वित है
डरना ना तू कभी एक पल को
तेरे संग चाहने को रैला है
कौन कहता है मोदी अकेला है
तुझसे तो इतना प्यार है सबको
हर दिल में तू बसता है
तेरे लिए हमारे मन से प्यार बरसता है

-- मुकेश सिंह

बाल लेख

क्रिसमस और नया साल मुबारक हो

प्रिय बच्चो, सदा खुश रहो,

२५ दिसम्बर को क्रिसमस है, जिसे हम बड़ा दिन भी कहते हैं. आज हम क्रिसमस के बारे में ही आपको कुछ खास बातें बताते हैं. क्रिसमस को सभी ईसाई लोग मनाते हैं और आजकल कई गैर ईसाई लोग भी इसे एक धर्मनिरपेक्ष, सांस्कृतिक उत्सव के रूप में मनाते हैं.

१. क्रिसमस ईसा मसीह या यीशु के जन्म की खुशी में मनाया जाने वाला पर्व है. ३५० एडी में पोप जूलिसिस १, बिशप ऑफ रोम ने आधिकारिक रूप से दिसम्बर २५ को क्राइस्ट का बर्थ डे घोषित किया था.

२. हर साल केवल यूएस में करीब ३ अरब क्रिसमस कार्डस भेजे जाते हैं. अमेरिका का राजकीय क्रिसमस-ट्री किंग्ज केन्यान नैशनल पार्क कैलिफोर्निया में स्थित है.

३. पहला क्रिसमस ट्री का प्लांट वर्ष १५५१ में न्यूयॉर्क में मार्क कार द्वारा बेचा गया.

४. गिनेस बुक के अनुसार सबसे ऊंचा क्रिसमस ट्री २२१ फुट का था. इसे १९५० में सिटेल, वॉशिंगटन के नॉर्थगेट शॉपिंग सेंटर में लगाया गया था.

५. क्रिसमस के तीन पारम्परिक रंग हैं हरा, लाल और सुनहरा। हरा रंग जीवन और रिबर्थ का प्रतीक है, जबकि लाल रंग ईसा मसीह के रक्त का और सुनहरा रंग रोशनी और दौलत का प्रतीक है.

६. विश्व में क्रिसमस आइलैंड नाम के दो द्वीप हैं- एक प्रशांत महासागर में और दूसरा हिंद महासागर में, जिसका क्षेत्रफल ५२ वर्गमील है.

७. अमेरिकी सर्वेक्षण टीम के अनुसार क्रिसमस शब्द वाले शहरों और नगरों की संख्या १४० है.

८. अमेरिका में ११ ऐसी जगहें हैं जिनका नाम सांता क्लॉज से शुरू होता है. सांता क्लॉज क्रिसमस से जुड़ी एक लोकप्रिय पौराणिक परंतु कल्पित शख्सियत हैं, जिसे क्रिसमस पर बच्चों के लिए तोहफे लाने के साथ जोड़ा जाता है.

९. सांता क्लॉज को लाल कपड़े पहनाने का विचार कोकाकोला कंपनी के दिमाग की उपज है.

१०. पूरे विश्व में ईस्टर पर २.५० लाख टन और क्रिसमस पर दो लाख टन चाकलेट खाई जाती है.

आज इतना ही, शेष फिर.
आपकी नानी-दादी जैसी,

-- लीला तिवानी

शिशु गीत

१. मकर संक्रांति

सर्दी अब काफी कम है, हुई धूप भी चम-चम है
चलो दही-चूड़ा खायें, सब्जी, तिलकुट भी लायें

२. गणतंत्र दिवस

लालकिले पर सजा तिरंगा, राष्ट्रपति जी ने फहराया
हमसब करते नमन देश को, है गणतंत्र दिवस जो आया

३. जलेबी

गरम जलेबी बहुत सुहाती, सब लोगों का जी ललचाती
हाँ ज्यादा मत खाना इसको, मोटा भी जल्दी करवाती

४. गाजर

गाजर का हलवा यम-यम, जब सर्दी का हो मौसम
इसे जरूर बनायें सब, खुशी-खुशी फिर खायें सब

५. कुहासा

भई कुहासे, छँट भी जाओ
बंद स्कूल को मत करवाओ
घर में बैठे बोर बहुत हम
बच्चों को इतना न सताओ

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

बाल कविताएं

सरदी आई सरदी आई, चलो खूब ओढे रजाई
तिलकुट, तिल और लाई, सरदी की हैं उत्तम मिठाई
माँ दादी मिलकर बनाती, खाते है हम सब भाई
धूप भी अब कम दिखती है, लगता सूरज भी छुट्टी पर है
जैसे ही कभी दिखाई देता, सबके सब धूप में दौड़ पडते
जब खत्म होती धूप, फिर लौट आते रजाई में
रंग बिरंग के स्वेटर से, हाट बजार भी सजा हुआ है
इन सबको देख देखकर
मन भी लुभाया हुआ है
बस पापा का इंतजार है
जैसे घर आ जाये पापा
फिर तो इस बार भी
नया स्वेटर होगा मेरे पास

-- निवेदिता चतुर्वेदी 'निव्या'

शेर मामा हो गए बीमार
बोले अब कैसे करूँ शिकार
सुन यह शेर की दशा
बोला उनसे चतुर सियार
शेर मामा तुम मत घबराओ
भालू डॉक्टर को बुलवाओ
दवाई देकर सुई लगेगी
बीमारी आपकी झट भागेगी

-- कल्पना भट्ट

नया वर्ष आया

नया वर्ष आया, सुहाना, नया वर्ष आया
खुशियां है लाया, सुहाना, खुशियां है लाया
नए वर्ष में नए तराने, गाएं-नाचें-धूम मचालें
नया वर्ष आया, सुहाना, नया वर्ष आया
खुशियां है लाया, सुहाना, खुशियां है लाया
मन में उमड़ी नई उमंगें, करें किलोलें नई तरंगें
नया वर्ष आया, सुहाना, नया वर्ष आया
खुशियां है लाया, सुहाना, खुशियां है लाया

-- लीला तिवानी

बाल कविता

ठंडी आई, ठंडी आई, ओढ़ो कम्बल और रजाई।
कोहरे ने जग लिया लपेट, गाड़ी नौ-नौ घण्टे लेट।
हवाई जहाज की शामत आई, ठंडी आई, ठंडी आई।
पानी छूने से डर लगता, हाथ तापने को मन करता।
आग जलाकर तापो भाई, ठंडी आई, ठंडी आई।
बंद हुई बच्चों की शाला, ठंडी ने क्या-क्या कर डाला।
घर पर लड़ते बहना भाई, ठंडी आई, ठंडी आई।
बात करो तो धुआँ निकलता, चुप रहने से काम न चलता।
कैसी ईश्वर की चतुराई, ठंडी आई, ठंडी आई।
देखो कैसा बना बगीचा, हरी घास पर श्वेत गलीचा।
फूलों की आभा मन भाई, ठंडी आई, ठंडी आई।
फसलों को पाले ने मारा, बेवश हुआ किसान बिचारा।
उसके घर तो आफत आई,
ठंडी आई, ठंडी आई।
और झोंपड़ी अकुलाती है,
दुख-सुख तो सब सह जाती है।
पर ठंडी वह सह ना पाई,
ठंडी आई, ठंडी आई।

-- आनन्द विश्वास

बाल पहेलियाँ

(१) नाममात्र के दोनों दानी, करते दूजे काम
हाँ इनका उपयोग जरूरी, चलो बताओ नाम
(२) तेजाबी पानी पीती है, बैठी रहती मौन
जैसे ही बिजली गुल होती, करती लाइट ऑन
(३) एक बात की थोड़ी कच्ची, दूजी पक्की पूरी
इन दोनों बहनों के बिना, पढ़ाई रहे अधूरी
(४) गिनता रोज करोडों है, फिर भी नहीं अमीर
सबसे कहता यही बात ये, होयें नहीं अधीर
(५) लोहे पर वह दौड़ती, बोझा लादे खूब
कितनी ताकत है उसे, कभी न होती ऊब

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

(इन पहेलियों के उत्तर पृष्ठ १२ पर देखिए।)

नोटबंदी कौ आल्हा (ब्रजभाषा में)

शीश नवाऊँ भारत माँ कूँ, नरेन्द्र मोदी जाकौ लाल।
कारे धनवारे चोरन कूँ, जो बनिकै आयौ है काल।।
बड़े नोट सब बंद कर दये, दो नम्बर वारे घबरायँ।
नोटन की गड्डी हैं इतनी, इनकूँ कहाँ खपावैं जाय?
लूट रहे सत्तर सालन ते, पाई टैक्स भरौ नहिं यार।
कच्चे बिल दै गिराहकन कूँ, सारौ खुद ही गये डकार।।
बुरौ होय जा चाय बारे कौ, सारौ रुपया लयौ निकार।
एक नम्बर ते काम चलै ना, ठप्प है गयौ सब व्यौपार।।
बैंक वारेन कूँ दयौ कमीशन, कारे धन कूँ करैं सफेद।
अब पकरे जाविंगे सारे, मोदी जी कूँ मिलिगौ भेद।।
कहाँ जायँ अब चोर बिचारे, रस्ता एक बच्यौ ना कोइ।
खीज निकारैं गारी दैकें, या घर बैठे रहवें रोइ।।
कैसें भुगतें जा मोदी कूँ, ना खावै ना खावन देइ।

(शेष पृष्ठ ३० पर)

खोखली व्यवस्था

स्थानांतरण पर जब निखिल अपने शहर वापस आया तो अपने बेटे कमल के दाखिले के लिए अपने पुराने स्कूल का चुनाव किया. छात्रों को संस्कार, मर्यादा एवं अनुशासन का पाठ पढ़ाना ही स्कूल का प्रमुख लक्ष्य था. शिक्षक छात्रों के विकास पर उसी प्रकार ध्यान देते थे जैसे माता पिता देते हैं. यही कारण था कि उसके जैसा औसत छात्र इस मुकाम तक पहुँच सका था.

कमल का स्कूल में दाखिला करा कर वह निश्चिंत था कि उसका बेटा सही हाथों में है. किंतु तिमाही परीक्षा का परिणाम देखकर वह बहुत निराश हुआ. कमल गणित में फेल था. निखिल ने उसे डांट लगाई 'तुम्हारा मन अब पढ़ने में नहीं लगता है.'

कमल सहमते हुए बोला 'मैं बहुत कोशिश करता हूँ. पर कुछ पाठ मेरी समझ नहीं आते.'

'तो टीचर से क्यों नहीं पूछते?'

'मैं पूंछता हूँ तो वह बताते नहीं हैं.' कमल ने अपनी बात रखी. निखिल को लगा कि वह झूठ बोल रहा है. उसे डांटते हुए बोला 'चुप करो. खुद की गल्ती मानने की बजाय टीचर को दोष दे रहे हो.' कमल चुप हो गया और अपने कमरे में चला गया.

अगले दिन निखिल स्कूल जाकर कमल के गणित के टीचर से मिला और उनसे कमल की समस्या बताई.

टीचर सफाई देते हुए बोले 'देखिए क्लास में इतने बच्चों पर ध्यान देना कठिन है.'

'मैंने तो आप लोगों के हवाले अपने बेटे को कर दिया है. अब आप उसे देखिए.' निखिल ने हाथ जोड़ते हुए कहा.

'ठीक है मैं देखता हूँ कि क्या हो सकता है.'

निखिल नमस्कार कर बाहर आ गया. तभी पीछे से गणित के टीचर की आवाज आई 'जरा ठहरिए.'

निखिल रुक गया. पास आकर गणित के टीचर ने कहा 'कमल पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है. यहाँ यह मुमकिन नहीं है.' अपनी जेब से एक कार्ड निकाल कर निखिल को पकड़ा दिया. 'कमजोर बच्चों के लिए मैं ट्यूशन क्लास चलाता हूँ. आप कमल को वहाँ भेज सकते हैं.' यह कहकर वह चले गए.

वहाँ खड़ा निखिल सोच रहा था. स्कूल का आदर्श कहीं खो गया था. अब केवल एक खोखली व्यवस्था रह गई थी.

-- आशीष कुमार त्रिवेदी

बाँझ

घर की सारी महिलायें सजी-धजी पूजन की तैयारी कर रही थीं। गीत गाये जा रहे थे। इंतजार हो रहा था पण्डितजी का।

बाबूजी ने अपने बड़े बेटे से कहा, 'पण्डितजी को फोन करके पूछो तो सही कितनी देर में आ रहे हैं?'

'जी बाबूजी।' बेटे ने बाबूजी को उत्तर दिया।

माँ ने बड़ी बहू को देखते हुए कहा, 'देखो बहू, मैं नहीं चाहती कि छोटी बहू इस पूजन में शामिल हो। उस बाँझ का साया भी पड़े मुझे बर्दाश्त न होगा।'

बाबूजी ने भी यह बात सुनी, और उन्होंने घोषणा की। सब कान खोलकर सुन लो, 'घर के सभी सदस्य इस पूजन में शामिल होंगे। हाँ, सिर्फ छोटे को छोड़कर। शक्ति पूजन में मैं नहीं चाहता कि कोई ऐसा सदस्य इसमें शामिल हो जिसने अपने स्वार्थ के चलते दूसरा घर बसा लिया हो और बहू पर लांछन लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ी हो।'

छोटी बहू ने अपने ससुरजी को ेतज्ञता पूर्वक देखकर उनको नमन किया।

-- कल्पना भट्ट

मैं बीपीएल

'नमस्कार।' अचानक घर आये सूटबूटधारी युवक ने उन्हें अभिवादन किया।

'जी, नमस्कार। आइए बैठिए।' उनका पहले से ही फूला हुआ सीना कुछ और फूल गया, वे इस योग्य हैं ही कि लोग उन्हें अभिवादन करें, उनकी तारीफ में गिर-गिर जायें।

'और क्या हाल है सर?' युवक ने बेहद विनम्रता से कहा।

'बस, सब चकाचक है।' वे मुस्कराये।

'लड़के-बच्चे?' 'पूछो मत। सभी सेट हैं। एक मास्टर है, एक बाबू है और एक...।'

'रुकिए सर, रुकिए। फिर तो आपकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी होगी। हजारों रुपये हर महीने आते होंगे।' 'हाँ, यह तो है।'

'खेती-पाती?'

'सौ बीघे की खेती है।'

'वाहन?'

'चौपहिया-दुपहिया सब कुछ।'

'बैंक बैलेन्स?' 'बहुत।'

'लगता है, इस गाँव में आप सबसे सम्पन्न आदमी हैं?'

'सो तो है, मुझसे आँखें मिलाने की किसी में हिम्मत नहीं।'

'अच्छा चलता हूँ सर, नमस्कार।' युवक उठ खड़ा हुआ।

'अरे रुको रुको।यह तो बताओ कि तुमने यह सब क्यों पूछा? '

'यह केन्द्र सरकार का सर्वे है सर। सरकार गरीबों की किस्मत बदलने को तत्पर है, इसलिए लोगों की आर्थिक स्थिति आंकी जा रही है।'

'एक मिनट ठहरो।' कहकर वे भीतर गये, फिर निकल युवक के हाथ में कुछ थमाते हुए बोले, 'यह लो,

यह मेरा बीपीएल कार्ड है। सरकारी योजनाओं का लाभ मुझे हमेशा मिलता रहा है, आगे भी मिलना चाहिए।'

-- मुन्नू लाल

आँचल

मंजरी हिन्दी की पुस्तक में 'मां का आँचल' कहानी पढ़ रही थी। जिज्ञासा हेतु मम्मी से पूछा, 'मम्मी, आपका आँचल कहां है?'

जीन्स टॉप पहने आधुनिक मॉम अनुत्तरित रह गई, 'सॉरी, गुड़िया, मैं कहां मां रही, मैं तो मम्मी बन गई हूँ।'

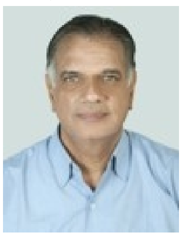

पर एक संकल्प भी लिया साड़ी या सलवार सूट चुन्नी के साथ पहनने का, ताकि बेटी को आँचल दिखा सके।

-- दिलीप भाटिया

रैगिंग

कालेज कैम्पस में घुसते ही वहां का नजारा देख गुस्से से दामिनी की दोनों मुट्ठियां भिंच गईं। कुछ मनचले, बिगड़ैल सीनियर रैगिंग कर रहे थे।

'आइये. आइये होने वाली नई डाक्टर मिस... जरा परिचय दीजिए।'

'क्यों.. तुमको क्यों दूँ, यहां कोई मैरिज ब्यूरो चल रहा है?' दामिनी बोली

'चलिये यही सही, हम तैयार हैं न... यहीं शादी, यहीं...' इससे पहले कि सीनियर छात्र आगे कुछ कहता 'शटअप' दामिनी बोली। 'वाह क्या तेवर है! अब तो शुद्ध परिचय के साथ यहां साइन भी करना पड़ेगा, सारे लडके अपने गालों पर हाथ फेरकर ठहाका लगाने लगे।

'क्यों पंगा ले रही हो, मान ले इनकी बात वरना एक रात मुर्दा घर में गुजारनी होगी।' एक लड़की बोली।

लेकिन इससे पहले कि वे कुछ सोचते, दामिनी बिजली की फुर्ती से पलटी और जो चार लड़के उसको घेरे हंस रहे थे, अपने टूटे हुए दो-दो दांतों के साथ चारों खाने चित्त पड़े थे। 'मैं दीपक दामिनी शर्मा, ब्लैक बेल्ट, रायगढ़, एमबीबीएस फर्स्ट ईयर!'

दीपक नाम सुनकर सन्नाटा छा गया, यह वही लड़का था जिसने रैगिंग से तंग आकर पिछले साल

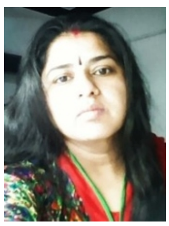

सुसाइड कर लिया था। दामिनी की आँखें क्रोध से लाल हो रही थीं- 'भाई था वो मेरा!' दामिनी की चीख पूरे कैम्पस में गूंज रही थी।

-- रजनी विलगैयां

स्वर्गारोहण में कुत्तों का योगदान

शरद सुनेरी

साधारण मनुष्य, स्वर्ग-प्राप्ति की कामना में जीता और मरता है। हमारी संस्कृति में स्वर्ग तक पहुँचने के अनेक साधन और मार्ग बताए गये हैं। जिसे जो वाहन और मार्ग जँचे, चयन करने को स्वतंत्र है। इसमें से एक है- गोदान। मान्यता है कि गोदान करने से स्वर्ग का हाइवे खुल जाता है। चौकीदार नाका भी नहीं काटता और आपकी आत्मारूपी गाड़ी दनदनाते हुए बिना किसी बाधा के स्वर्ग के मुख्यद्वार पर पहुँच जाती है। अपनी यह यात्रा निर्विघ्न संपन्न करने के लिए लोग पहले गाय पालते भी थे और दान भी करते थे। आजकल कोई ये रिस्क नहीं लेता। क्या पता गाय बिदक जाए और यहाँ-वहाँ चली जाए घास चरने!

युधिष्ठिर के साथ कुत्ते को स्वर्ग में प्रवेश मिला था और वह भी शरीर के साथ- सशरीर। इसलिए अब लोगों को स्वर्ग तक पहुँचने का यह 'कुत्तेवाला' रास्ता अधिक पसंद आता है। कुत्तेवाले अपने कुत्ते के साथ प्रातःकाल भ्रमण पर स्वर्ग-प्राप्ति की कामना के लिए निकलते हैं। कुत्ता भी रास्ते भर स्वर्ग का मार्ग तलाशने में लगा रहता है। उचित स्थान न मिलने पर वह सुसु अथवा छीछी कर देता है और अपने मालिक अथवा मालकिननुमा युधिष्ठिर को समझा देता है- 'फिलहाल गुंजाइश नहीं है। कल देखेंगे।' असत्यप्रिय और धर्महीन आधुनिक युधिष्ठिर समझ जाते हैं और स्वर्ग-सर्चिंग का वह धार्मिक अनुष्ठान अगली भोर तक टल जाता है।

एक जमाना था- पिताजी का जमाना- जब कुत्ता, 'कुत्ता' ही होता था। वह शेरू, मोती, सुल्तान, टीपू वगैरह-वगैरह हुआ करता था। आजकल- मेरे जमाने में- वह डॉग और डॉग से भी आगे डॉगी हो गया है। अब वह टॉमी, टॉम, टफी वगैरह-वगैरह हो गया। पिताजी के जमाने में उसे वही सम्मान मिलता था जो कुत्ते को मिलना चाहिए। पिछले कुछ दशकों में देशवासियों की साक्षरता और शिक्षा का स्तर सुधरा। वे सभ्य हो गए हैं। उसका लाभ डॉगियों को मिला और उनके स्तर में भी आश्चर्यजनक सुधार हुआ।

मनुष्य के साथ-साथ अब वे भी सभ्यता और संभ्रांत वर्ग में गिने जाने लगे। अब उन्हें कुत्तों जैसा सम्मान नहीं दिया जाता। अब वे कार में घूमते हैं। सोफे और पलंग पर सोते हैं। कोई अधिक भाग्यशाली रहा तो मेडम की नाजुक-नर्म बाँहों का झूला भी झूलता है। घर की रखवाली जैसा ओछा काम वह अब नहीं करता अपितु उसकी देखभाल करने के लिए नौकरों की फौज होती है। अगर उसकी शान में कोई कमी आई तो घर के दादाजी और दादीजी को डाँट भी पड़ सकती है। दादा और दादीजी अपनी इस धृष्टता के लिए डाँट सुनते भी हैं, क्योंकि अब वे किसी काम के नहीं रह गये। उन्हें इतना काम तो करना ही चाहिए न। कुत्ता भी किसी काम का नहीं। लेकिन अब वह कुत्ता नहीं, डॉगी है। अब उसका सम्मान बढ़ गया है।

साहब, डॉगी पालना हर किसी के बस की बात नहीं। कुत्ता पल जाता है, डॉगी को पालना पड़ता है। डॉगी को साहब, व्यापारी और बड़े-बड़े लोग पालते हैं। साहब, रिश्वत खाते हैं। डॉगी, बिस्कुट खाता है, मटन खाता है। डॉगी को बिजनेसमैन पालते हैं। बिजनेसमैन अपना काम बनाने के लिए साहब को रिश्वत खिलाते हैं, देश के टैक्स की चोरी करते हैं। कुत्ता और डॉगी वफादार होते हैं। साहब और बिजनेस मैन डॉगी पालते हैं, पर कुत्ता, जिसकी दो रोटी खाता है, उसके घर की रखवाली करता है। अवसर पड़ने पर जान की बाजी लगा देता है और कुछ न कर सका तो भौंक-भौंककर सारे घर और मौहल्ले को सिर पर उठा लेता है।

साहब और व्यापारी भौंकनेवाले को उठा लेते हैं। ये लोग भौंकनेवाले के सामने हड्डी डाल देते हैं। डॉगी मटन खाता है। कुत्ता हड्डी चूसता है। ये लोग जानते हैं कि चूसते-चूसते हड्डी गले में फँस जाती है। फिर कुत्ता कुछ नहीं कर सकता, सिवाय पूँछ हिलाने के। डॉगी पालनेवाले, कुत्ता बनने और बनाने का हुनर जानते हैं। कुत्ता वफादार होता है। नमक की कीमत चुकाता है। साहब और व्यापारी नमक की कीमत नहीं जानते क्योंकि नमक सस्ता होता है। सस्ती चीजों की कीमत जानना बड़े लोगो को शोभा नहीं देता।

उस दिन साहब अपने डॉगी के साथ प्रातःकालीन भ्रमण पर निकले। आज डॉगी स्वर्ग जाने का मार्ग ढूँढ़ ही लेगा, ऐसा लग रहा था। खंभा दिखा, उसे सूँघा। मार्ग न दिखाई दिया तो अपनी पिछली टाँगों में से एक उठा कर खंभे का अभिषेक कर दिया।

आगे बढ़ने पर कचरे के ढेर को सूँघा। शायद वहाँ भी उसे स्वर्ग जाने का रास्ता नहीं नजर आया। कमर को थोड़ा जोर देकर झुकाया और पेट खाली कर दिया। अचानक सड़क के उस पार भागा। शायद उसे स्वर्ग का मार्ग दिख गया था। इस बार उसने उस स्थान को सूँघा नहीं। पूरी तरह आश्वस्त था। साहब उसका यह अप्रत्याशित आचरण समझ न पाए और उसे पकड़ने पीछे भागे। दायीं ओर से ट्रक आ रहा था। साहब का ध्यान उस ओर न था। जहाँ स्वर्ग का मार्ग था, ट्रक साहब को वहीं रौंदता हुआ चला गया। डॉगी आसपास खड़ी कुत्तों की फौज के साथ आसमान की ओर देखकर रोने लगा। कुत्ता बन गया। वफादार जो था। ■

क्या देश वाकई में चीख रहा है?

सुमित प्रताप सिंह

देश में इन दिनों चीख-पुकार मची हुई है। जब भी देश में कुछ नया होता है तो लोग चीखते हैं और पूरा दम लगाकर चीखते हैं। इस बार चीखने की शुरुआत ८ नवंबर, २०१६ को हुई थी। बड़े नोटों की बंदी ने देश के कुछ भले और ईमानदार लोगों के दिलों पर करारा आघात किया, जिससे वो एकदम से बिलबिला उठे। उनसे ज्यादा परेशान उनके संरक्षक और आका हो गए और सड़क से लेकर संसद तक उन्होंने जमकर चीख-पुकार मचानी शुरू कर दी। हालाँकि इस फैसले से उनका नेक दिल बहुत दुखा और उन्होंने काफी कष्ट और परेशानी महसूस की, पर उन्होंने देश की जनता के कष्टों को ढाल बनाकर तलवारबाजी शुरू कर दी।

वैसे अगर देखा जाए तो उनका चीखना जायज भी है। देश की जनता का खून चूस-चूसकर ईमानदारी और मेहनत से जमा किया इतना ढेर सारा धन यूँ अचानक रद्दी हो जाए तो भला कोई चुप रह भी कैसे सकता है? इसलिए भुक्तभोगी चीख रहे हैं और इस चीख-पुकार से जनता को दिग्भ्रमित करते हुए अपने रद्दी हो चुके धन को फिर से धन की श्रेणी में लाने की भरपूर जुगत लगा रहे हैं। बैंक कर्मचारियों के रूप में अपने देश में एक नई ईमानदार कौम का उदय हुआ है और ईमानदारी में वो बाकी कौमों को तेजी से पीछे छोड़ने को तत्पर है। उनकी ईमानदारी देखनी हो तो बैंक के पिछले दरवाजे पर खड़े हो जाएँ। आपको बिना किसी विशेष परिश्रम के ही बैंककर्मियों के दिलों से झाँकती हुई विशेष ईमानदारी के दर्शन हो जाएँगे।

साथ ही साथ दिख जाएँगे चीखते रहनेवाले वे भले और ईमानदार लोग भी। बैंक कर्मचारियों द्वारा चीखनेवाले भले मानवों को पूरी ईमानदारी और निष्ठा से गड्डियों का भोग लगाया जाता है, जिसे वे अपने सेवकों को प्रसाद के रूप में वितरित करके फिर से चीखना-चिल्लाना शुरू कर देते हैं। यह देख उनके चमचे भी प्रसाद को ठिकाने लगाकर अपने गुरुओं का समर्थन करते हुए उनका साथ देते हुए रेंकना शुरू कर देते हैं।

जो चमचे चीखने में असमर्थ हैं और कलम तोड़ने में सिद्धहस्त हैं उन्हें आभासी दुनिया पर बिठा दिया जाता है और वो सभी निष्ठापूर्वक अपने आकाओं के समर्थन व नोटबंदी के विरोध में आभासी दुनिया पर चिल्ल-पों मचाना आरंभ कर देते हैं तथा ये घोषित करने का पूरा प्रयास करते हैं कि पूरा देश उनके संग विरोध में चीख रहा है जबकि मामला कुछ और ही होता है। दरअसल पूरा देश उन सबकी चीख-पुकार सुनते हुए खिलखिलाकर हँस रहा होता है। ■

नोटबंदी पर सवालों के घेरे में बैंक

अमित कु. अम्बष्ट

विगत दिनों जब केन्द्र सरकार ने नोटबंदी का फैसला लिया और देश के आम नागरिकों से सबकुछ ठीक करने हेतु ५० दिनों की मोहलत मांगी तो देश के अधिकतर नागरिक तमाम मुश्किलों के बावजूद सरकार के साथ खड़े दिखे। हर दिन स्थिति का मूल्यांकन करते हुए लगातार नियमों में परिवर्तन होता रहा और ऐसा महसूस होने लगा कि थोड़ा वक्त अधिक जरूर लग रहा हो, लेकिन सरकार इसमे सफल हो जाएगी। सरकार ने हर बार की तरह अपने बैंकों और उसके कर्मचारियों पर भरोसा दिखाया। नोटबंदी के कार्यान्वयन की सारी जिम्मेदारी देश के सभी बैंकों को दी गई।

रिजर्व बैंक सहित देश के सभी बैंक इस काम में लग गए। लगा जैसे बस थोड़ी सी मुश्किल है, धीरे-धीरे सबकुछ सामान्य हो जाएगा। लेकिन अधिकतर एटीएमों पर लगे 'नो कैश' के बोर्ड ने आम जनता को मुश्किल में डाल दिया। सरकार ने वादा किया कि नोट के छापने का काम बहुत तेजी से चल रहा और दिए गए ५० दिन में सबकुछ पटरी पर आ जाएगी, लेकिन ऐसा हुआ नहीं। जितने रुपये बैंक में वापस किए गए, उससे बहुत कम नोट ही सरकार जारी कर पाई। नोट की किल्लत का आलम यह है कि आम लोगों ने अपनी जरूरत से कहीं अधिक रुपए का निकासी कर घर में जमा कर लिये, जिससे उस रुपए के बाजार का रोटेशन तो बंद हुआ ही साथ बैंक द्वारा एटीएम में रुपए डालने के कुछ घंटे बाद ही नोट खत्म होता रहा जिससे बहुत सारे जरूरतमंद लोग रुपए की निकासी नहीं कर पाए।

सरकार ने आम नागरिकों के लिए एक हफ्ते में २४ हजार रुपए तक निकासी का नियम बना तो दिया, लेकिन अधिकतर बैंक अपने ग्राहकों को एकमुश्त इतने रुपए देने में असक्षम रहे, जिस कारण सरकार को उच्चतम न्यायालय की तीखी टिप्पणी का सामना करना पड़ा। लेकिन इन सारी मुश्किलों के बावजूद केन्द्र सरकार को एक-दो स्थानों पर ही जनता के विरोध का सामना करना पड़ा। देश हित में देश के अधिकतर नागरिकों की यह सोच रही कि काला धन, भ्रष्टाचार और आतंकवाद की फंडिंग रोकने हेतु यह कदम बहुत आवश्यक है। हर किसी को इस बात की खुशी थी कि थोड़ी मुश्किल के बावजूद अगर देश हित में यह कदम आवश्यक है तो इसका समर्थन किया जाना चाहिए।

लेकिन इस अभियान को सबसे बड़ा झटका तब लगा जब पुराने नोट के साथ नये नोट बहुत अधिक मात्रा में पकड़े जाने लगे। चिंता का विषय यह भी है कि नये नोट किसी एक स्थान से नहीं अपितु देश के अलग अलग हिस्सों से पकड़े जा रहे हैं। आँकड़ों के अनुसार, अब तक आयकर विभाग ने अलग-अलग स्थानों पर छापा मारकर दिसंबर के तीसरे हफ्ते तक लगभग १२५ करोड़ रुपए के नये नोट बरामद किये है। जिसमे अकेले चेन्नई में लगभग १०० करोड़ के नये नोट बरामद किए गए हैं और ऐसे ही देश के अलग अलग हिस्सों से लगातार नये नोट के बरामदगी की सूचना मिल रही है।

ऐसे में संदेह के घेरे में सिर्फ तीन संस्थाएं आती हैं, जिनमें सबसे पहला नाम रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया का है। दूसरे स्थान पर देश के सभी बैंक और तीसरे स्थान पर वो एजेंसियाँ हैं, जिन पर एटीएम में रुपए डालने की जिम्मेदारी है। सवाल उठता है कि काले धन कुबेरों के रुपए को इतने बड़े पैमाने पर बदलने और उनके घर तक पहुंचाने का काम कौन कर रहा है? अगर बैंक आम नागरिक को हर हफ्ते सिर्फ २४ हजार रुपए नहीं दे पा रहे और अधिकतर एटीएमों पर कैश अब तक नियमित रूप से नहीं पहुंच रहा, तो आखिर बैंक इतनी बड़ी राशि का नया नोट काला धन कुबेरों को कैसे मुहैया करवा रहे हैं?

अगर बैंकों के पास नये नोट उतनी अधिक मात्रा में उपलब्ध नहीं, तो इस काले काम में क्या रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया खुद ही शामिल है? क्या एटीएम तक रुपए पहुचाने वाली एजेंसियाँ इस खेल में शामिल हैं? ये कुछ सवाल आज कैश की किल्लत से जूझ रहे हर एक नागरिक के जेहन में घुमड़ रहे हैं। आयकर विभाग के छापे के बाद सबसे अधिक जिस बैंक पर फर्जीवाड़े का आरोप लग रहा है वो है एक्सिस बैंक। हालांकि एक्सिस बैंक लगातार इन आरोपों का खण्डन करता आ रहा है लेकिन इस बैंक पर आयकर विभाग के आरोप और कुछ कर्मचारियों का निलंबन इस बात के पुख्ता सबूत हैं कि कहीं न कहीं गड़बड़ी तो हुई है।

एक्सिस बैंक पर उठा सवाल देश के बाकी बैंकों को भी संदेह के दायरे में खड़ा करता है। लेकिन जो सबसे अधिक चिंताजनक है वो है रिजर्व बैंक पर उँगली का उठना। विगत दिनों सीबीआई ने पुराने नोटों को नए नोटों से बदलने के आरोप में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के दो अधिकारियों को गिरफ्तार किया है तथा इससे पहले भी सीबीआई रिजर्व बैंक के अधिकारी माईकल को गिरफ्तार कर चुकी है। आरोप है कि रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के चेस्ट से १.९९ करोड़ के पुराने नोट नए नोटों से बदले गए।

विचार करने वाली बात यह है कि अगर रिजर्व बैक स्वयं ही अगर इन आरोपों से घिरा है तो बाकी बैंकों की विश्वसनीयता पर सवाल उठना तो जायज है, क्योंकि नोट के छापने का निर्णय भले ही केन्द्र सरकार का सहमति से लिया जाता है, लेकिन अधिकारिक तौर पर इसकी जिम्मेदारी रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के पास ही होती है। इतना ही नहीं देश के सारे बैंक रिजर्व बैंक के निर्देशों का ही अनुसरण करते हैं। अगर सीधे शब्दों में कहा जाए, तो केन्द्र सरकार द्वारा लिया गया एक शानदार फैसला, रिजर्व बैंक और अन्य कुछ बैंकों के भ्रष्टाचार का शिकार हुआ है, जिसने इस फैसले को निस्संदेह कटघरे में खड़ा कर दिया है। हालांकि एक सकारात्मक पक्ष यह है कि आरोपी लगातार पकड़े जा रहे हैं, लेकिन लगातार हो रहे घटना क्रम से जहाँ एक ओर बैंक की विश्वसनीयता घटती जा रही है, वहीं इसके कार्यान्वयन में कहीं न कहीं कोई भारी चूक हुई है, इससे इंकार नहीं किया जा सकता है। ■

आतंकवाद

डॉ अ. कीर्तिवर्धन

हमारे शास्त्रों में बताया गया है कि संन्यासी बनाने की प्रक्रिया बहुत ही दुरूह है। संन्यासी बनने के लिए मनुष्य को मात्र कर्म से नहीं अपितु धर्म एवं मन से भी अपने आप को पवित्र करना पड़ता है। संन्यासी बनने के लिए मनुष्य को सबसे पहले अपने परिवार से अलग होना पड़ता है। मोह-माया का त्याग, परिवार से विरक्ति, मानवता को समर्पित जीवन, भिक्षाटन से जीवन यापन, सर्वे भवन्तु सुखिनः की अवधारणा, राष्ट्र के साथ-साथ विश्व बंधुत्व भाव तथा सबसे महत्वपूर्ण पत्नी, बच्चों या माँ-बाप के प्रति पूर्ण परिग्रह। कहा जाता है कि संन्यासी बनाने की प्रक्रिया में अंतिम परीक्षा अपने ही घर से भिक्षा मांगने की होती है, जो संन्यासी इसमें सफल हो जाता है वही संन्यासी कहलाता है।

इसी प्रकार आतंकवादी बनने के लिए भी बहुत सी कठिन परीक्षाएं पास करनी पड़ती हैं और उसमें भी अंतिम परीक्षा अपने ही परिवार, मित्रों, रिश्तेदारों तथा राष्ट्र के विरुद्ध हथियार उठाकर निर्दोष परिवार वालों की हत्या शामिल है। आतंकी का धर्म होता है अपने आकाओं के इशारे पर निर्दोष लोगों की हत्या। आज सम्पूर्ण इस्लामी जगत में जो कुछ हो रहा है, वह उसी का परिणाम है। पाकिस्तान में निर्दोष मासूम बच्चे मारे गए, उनके परिवारजनों से सम्पूर्ण विश्व को हमदर्दी है मगर आज उन माँ-बापों को सोचना पडेगा कि जब ईराक में शिया-सुन्नी के नाम पर कत्लेआम मचा था, जब भारत में निर्दोष लोगों को मारा जा रहा था, जब कुर्दिश महिलाओं को बेचा जा रहा था, उनके साथ बलात्कार किया जा रहा था, मासूम बच्चे मारे जा रहे थे और भी कितने ही बेगुनाह लोगों को गोलियों से भूना जा रहा था, तब किसी भी मुस्लिम देश या विश्व के मुस्लिमों ने उनके खिलाफ आवाज क्यों नहीं उठाई?

आतंकवादी का कोई मजहब नहीं होता है, उसका

(शेष पृष्ठ २७ पर)

बच्चों की खातिर

सचमुच बहुबत दुखद समाचार था, लेकिन जानकी पड़ोसिन से अफसोस नहीं कर पाई। उनकी बहू ने ही बताया कि उनकी सास प्रभा अपने भाई के घर गई है। अचानक उनकी भाभी का देहांत हो गया है। दो तीन हफ्ते तक उनका वहाँ से लौटना संभव नहीं था।

अभी एक साल भी नहीं हुआ जब उनकी दूसरी बेटी का पति एक ऐक्सीडेंट में मारा गया। माँ बेटी फूट-फूट के रोई थी। अभी तो वो सताईस वर्ष की एक बेटे की माँ थी।भरा पूरा ससुराल था फिर भी सबको वो कांटे की तरह खटकती थी। किसी तरह प्राइवेट स्कूल में टीचर की नौकरी लग गई थी पर अभाव तो अभाव ही होता है ऊपर से अभागिनी होने का कलंक।

कई बार प्रभा बताती कि लड़की का फोन आया था कि बहुत दुखी हूँ मुझे यहाँ से ले चलो। जानकी से रहा न गया तो उसने कह दिया- 'प्रभा उसे ले आ अभी उसकी उम्र ही क्या है? कोशिश करना कि बेटी का घर फिर से बस जाए, बच्चे और बेटी को सहारा मिल जायेगा।'

इतना सुनते ही प्रभा आगबबूला हो गई थी। बोली- 'खबरदार, ऐसी बात कही तो! हमारे ऐसे संस्कार नहीं कि बेटी का दूसरा ब्याह करें। अरे भाग्य में सुख होता तो पहला ही क्यूँ जाता? मैंने तो बेटी से कह दिया दोनों घरों की इज्जत इसी में है कि तू अपने बच्चे की खातिर जिये। थोड़े सालों में बेटा बड़ा हो जाएगा और उसके सब दुख दूर हो जाएँगे।'

जानकी को चुप होना पड़ा। एक महीने के पश्चात जानकी को प्रभा मिली। मिलते ही भाई की व्यथा सुनाने लगी कि कैसे घर की सारी व्यवस्था तितर बितर हो गई है। उनकी माँ अपने पोते पोतियों को लेकर बहुत दुखी हैं। बच्चों ने स्कूल जाना आरंभ कर दिया है पर बहुत उदास रहते हैं। और सबसे ज्यादा दुख तो ये है कि अभी भाई पचास का भी नहीं हुआ कैसे जिंदगी काटेगा?

बहन तुम्हारी नजर में कोई गरीब विधवा या कुंवारी बेसहारा हो तो बताना उसका घर बसाना है। जानकी निरुत्तर हो उसका चेहरा ताकने लगी।

-- इंद्रा रानी

घी का लड्डू

नोटबंदी की खबर से पसीने छूट गए मणिकांत के। बड़ी दी ने जब मकान के लिए कर्जे के रूप में मांगे तब नकार दिया था मणि ने, 'दीदी, रुपये होते तो अपना खुद का बड़ा मकान ना बनवा लेता? देख रही हो ना इस दो कमरे के छोटे से घर में कितनी असुविधा होती माँ के साथ रहने में।' जब छोटी ने बेटी की पढ़ाई में मदद चाही तब भी मुकर गया और कुछ ऐसा ही बहाना बना गया था मणि। मालूम सबको था कि पैतृक मकान बिका है और गाँव के खेत भी और मणि के पास लाखों नहीं वरन करोड़ों में रुपये हैं पर...?

माँ चाहती तो दोनों बेटियों को उनका हक दिलवा सकती थीं, किन्तु बचपन से बेटे को शह देती थीं और बेटियों को 'पराया धन'। माँ को हमेशा भाई का पक्ष लेते देखा था, 'अरे, मेरा घी का लड्डू है, टेड़ा भी भला।'

'माँ, जरा दीदी-जीजाजी और बच्चों की पासबुक तो देना। हाँ छोटी और उसके परिवार की भी।'

दोनों बहनें के सपरिवार उसी शहर में अकाउंट थे जिसका इस्तेमाल मायके आने पर करती थीं।

'क्यों? क्या करेगा उनका? पता नहीं कहाँ रखी होंगी, बडकी पांच-एक साल से तो आई ही नहीं।'

'माँ, कैसे भी करके ढूँढो। दोनों के अकाउंट में ढाई-ढाई लाख इस समय अवधि में दो बार डलवाने हैं और बच्चों के में एक कम पचास हजार, वरना समझो

कि अब तक का बचाया धन सब रद्दी हो जाएगा।'

आज वही 'घी का टेडा लड्डू' अशक्त माँ के आगे बेचारगी लिए खड़ा था।

-- पूर्णिमा शर्मा

जादू

मेले में हर ओर चहल पहल थी, सभी अपने बच्चों के साथ मेला देखने आए थे। वहीं मेले में जादूगर अपने बेटे के साथ जादू का खेल दिखा रहा था। जादूगर का बेटा अभी अपने पापा के साथ नया-नया हाथ बंटाने लगा था। कभी-कभी कोई चूक हो जाए, तो जादूगर हाथ की सफाई से खेल को बचा लेता।

सभी मेले का लुत्फ उठा रहे थे, जादू का शो भी चल रहा था। सभी बच्चे बड़ी उत्सुकता के साथ देख रहे थे। जादूगर पहले भी खेल दिखाता था। सभी बहुत आन्दं उठाते थे, इस बार बेटा भी जादूगर के साथ था।

सभी खेलों का मजा ले रहे थे सारा हाल तालियों से गूंज रहा था। खेल खत्म होने वाला था आखिर में जो खेल चल रहा था, उसमें जादूगर ने अपने बेटे को लिटाकर चाकू से मारना होता है और फिर जिन्दा करके दिखाना होता है। बेटे से थोड़ी चूक हो गई। वो हाल में इतनी भीड़ देखकर थोड़ा सा डर गया था और चाकू उसके कंधे को थोड़ा सा लग गया। खून निकलने लगा था, पर बेटे ने उफ्फ तक नहीं की, कहीं पापा की बेइज्जती न हो जाए।

जैसे ही जादूगर ने चादर पर खून के छींटे देखे उसने खेल बंद कर दिया और अपने बेटे को उठाकर गले से लगा लिया। घाव इतना गहरा नहीं था, पर जादूगर हैरान था कि बेटा चुप रहा, कुछ कहा नहीं कि पापा का जादू का खेल खराब न हो जाए। जादूगर की

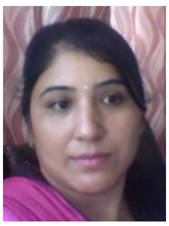

आँखों में नमी थी। उसने खेल की परवाह नहीं की क्योंकि वो पैसे और शौहरत तो कमा सकता था, बेटा नहीं और जल्दी से बेटे को डाक्टर के पास ले गया।

-- कामनी गुप्ता

बदलता रूप

बद्रीनाथ गुस्से से आग बबूला हो रहे थे। उनकी सोलह वर्षीया बेटी पिंकी ने आज ही कॉलेज में दाखिला लिया था। लगातार दस साल से एक ही तरह का गणवेश पहनने के बंधन से छुटकारा पाने से उत्साहित पिंकी ने कॉलेज जाने के लिए तीन जोड़ी नए कपडे खरीदे और घर में प्रवेश किया। बाहर बरामदे में ही खड़े बद्रीनाथ ने पिंकी के हाथों में लटके थैले को देखते हुए पुछा 'दाखिला हो गया बेटा? और ये हाथ में क्या है?'

'जी! पिताजी! ये कुछ कपड़े हैं जो मैंने अपने लिए खरीदे हैं कॉलेज जाने के लिए।' पिंकी ने उत्साह से जवाब दिया था।

उसके हाथों से थैला लेकर उसमें कुछ जीन्स के कपड़े और कुछ नए फैशन के कपड़े देखने के बाद बद्रीनाथ का पारा सातवें आसमान पर था। पिंकी को फटकार लगाते हुए बद्रीनाथ ने उसकी मम्मी को भी आड़े हाथों लेते हुए उन्हें भी जमकर सुनाया।

पिंकी और उसकी मम्मी को जी भर डांट कर और उसके लाये कपड़ों को बाहर फेंककर अपनी भड़ास निकाल चुके बद्रीनाथ अभी अभी आकर हॉल में बैठे थे कि रोहन की गाड़ी की आवाज सुनकर उन्होंने दरवाजे की तरफ देखा। दरवाजे पर उनका उन्नीस वर्षीय पुत्र रोहन टी शर्ट और जीन्स पहने हिप्पी कट बालों पर धुपी चश्मा चढ़ाये स्वीटी का हाथ थामे खड़ा था। रोहन की सत्रह वर्षीया गर्लफ्रेंड स्वीटी ने भी टॉप और मिडी पहन रखी थी। दोनों ही आधुनिक परिधान में किसी युरोपिय जोड़े की तरह लग रहे थे।

उन्हें देखते ही बद्रीनाथ ने मुस्कान बिखेरते हुए कहा 'आओ बेटा! घूम आये? कैसा रहा सफर? कोई परेशानी तो नहीं हुई?'

दरवाजे की ओट में खड़ी पिंकी आँखों में बेबसी

के आंसू लिये बद्रीनाथ के बदलते रूप को महसूस कर रही थी। अपनी सिसकियों के बीच वह रोहन का जवाब नहीं सुन सकी।

-- राजकुमार कांदु

'भीम' एप

(पृष्ठ २ का शेष)

ने इस मौके पर डिजिटल पेमेंट को बढ़ावा देने के लिए नया मोबाइल एप 'भीम' यानि 'भारत इंटरफेस फॉर मनी' जारी किया। पीएम ने कहा कि ये भीम देश के लिए तो क्रांतिकारी साबित होगा ही, आने वाले समय में दुनिया के लिए अजूबा होगा। भीम ऐप को बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर को श्रद्धांजलि बताते हुए पीएम ने कहा कि अब आपका अंगूठा ही आपका बैंक होगा और इसके साथ ही उन्होंने ऐलान किया कि दो हफ्ते के भीतर सरकार कैशलेस लेनदेन के लिए बायोमीट्रिक सिस्टम लागू करेगी। पांच सौ और हजार के पुराने नोटों को बंद करने के बाद एक महीने में एक करोड़ से ज्यादा ग्रामीण भारतीयों ने डिजिटल लेनदेन अपनाया है। ■

गीत

तुझे खोजूं कहां ओ मेरी मातरम
भूल सकती न मैं, तुझको सौ-सौ जनम
मेरा जीवन है सूना तुम्हारे बिना
दुख है दूना से दूना तुम्हारे बिना
तेरे दर्शन को रोते है मेरे नयन
तेरी बोली मधुर को तरसते बयन
मेरी पूजा -पूजापा की दात्री है तू
अपनी पुत्री की पावनीय पात्री है तू
तू सरस साधना की सुघर स्वामिनी
मेरी पूनम की तू चन्द्रिका च दनी
ज्योति तेरी से जीता न हारा है तम
तुझे खोजूं कहां ओ मेरी मातरम
और कोई न मेरा तुम्ही एक हो
मेरे जीवन जगत की तो अभिषेक हो
जन्मदात्री तुरत दर्श दो हर्ष दो
अपना दैवीय आदर्श स्पर्श दो
तू है पूर्वा-अपूर्वा अनूठी है मां
बात झूठी है मुझसे तू रूठी है मां
तू तो मेरे लिये अंब अमरावती
तू ही सीता सावित्री परम पार्वती
तू प्रणम्या परम,धैर्य धारण धरम
तुझे खोजूं कहां ओ मेरी मातरम

-- सफलता सरोज

साथी वह जो हर सुख-दुख में, हरदम साथ निभाये
सही-गलत को जाँच परखकर, सच्ची राह दिखाये
नहीं चाहिए सोना चाँदी, गाड़ी, घोड़ा, हाथी
दे दो भगवन इस निर्धन को, सच्चा सा इक साथी
जिसकी गोदी में सिर रखकर, सुन्दर सपना देखे
निश्छल सी मुस्कान होंठ पर, बारम्बार निरेखे
जिसको पाकर मानस की, सारी पीड़ा मिट जाये
साथी वह जो हर सुख-दुख में हरदम साथ निभाये
दिल में सच्चा भाव, हाथ में कर्म, और हो ज्ञानी
फौलादी हो काया उसकी, बोले मधुमय बानी
सिर पर हाथ फेरकर बोले, मित्र नहीं घबराओ
चिंता को चिंता करने दो, तुम खुश हो मुस्काओ
हँसी खुशी से झूम उठे मन, आकर गले लगाये
साथी वह जो हर सुख-दुख में हरदम साथ निभाये
मुझपर मेरे से भी बढ़कर, रहे भरोसा उसको
उसके ऊपर उससे बढ़कर, रहे भरोसा मुझको
मात-पिता गुरु-भाई के सम, हो उसका मन पावन
मैं हूँ रंक सुदामा तो
वह है केशव मनभावन
जब भी मिलें मीत आपस
में, 'अवध' दिवाली आये
साथी वह जो हर सुख-दुख
में हरदम साथ निभाये

-- अवधेश कुमार 'अवध'

क्षणिकाएँ

चाँद पर पग धरने वाले मानव
एक कतरा उसकी चाँदनी का
मुट्ठी में कैद करके दिखला दे
मिट जाएगा तेरा भी ये वहम कि
तू प्रेंति से जीत गया है
धरती पर पाँव जमाना सीख गया है

-- शशि बंसल

इस सर्द मौसम में
यादों को सहेजते सोचा कि
रिश्तों की फटी चद्दर पर
स्नेह का पैबंद लगा दूँ
शायद एहसास दे दें
ये फिर से गर्माहट का !

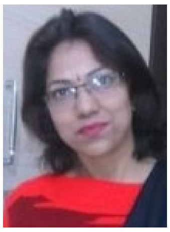

-- अंजु गुप्ता

झाड़ू लगाई सफाई की
नदियों की सफाई में
सफाई से काम किया
मुद्रा के परिवर्तन में
५० दिनों में हाथी निकल गया
शेष पूंछ रह गई है!

-- अनिल कुमार सोनी

दोहे

कल चुनाव आयोग ने, कही न्याय की बात
दो हजार तक ही रहे, चंदे की औकात
इस पर चर्चा कीजिये, मंशा रखिए साफ
आम जनों की यातना, कौन करेगा माफ
संविधान देता नहीं, कभी अनैतिक छूट
चंदा रहम गरीब को, यह कैसी है लूट
किसी बहाने ले लिया, जनता का ही नोट
भरी तिजोरी खुल गई, फिर जनता से वोट

-- महातम मिश्र, गौतम गोरखपुरी

माया ममता संगिनी, मोह हिया अंगार
कामी क्रोधी लालची, कब उतरे हैं पार
दौलत से अंधे हुए, कौरव जन्मे गेह
पाप घड़ा भरने लगा, अजगर जैसी देह

-- राजकिशोर मिश्र 'राज'

कोहरा छाया देश में, आया है तूफान
संत्री-मंत्री सब लडें, टेंशन में भगवान
टांग खिंचाई में सभी, काट रहे हैं कान
सिसक-सिसक कर रो रहा, मेरा हिंदुस्तान
पप्पू, ममता, केजरी, माया, शरद पवार
केहरि के पीछे पडे, जैसे कई सियार
थोडी सी तकलीफ है, थोडा सह लो क्लेश
भ्रष्टाचारी कुपित हैं, बदल रहा है देश
कल तक ओबीसी रहे, दलित बन गये आज
वोट बैंक की व्यवस्था, टीपू तुम पर नाज

-- सुरेश मिश्र

कुंडलियाँ

बिल्ली कुत्ते लोमड़ी खच्चर गधे सियार
सारे मिलकर करेंगे, पुनः शेर पर वार
पुनः शेर पर वार, देखिये फिर ठगबंधन
यूपी में इस बार, करो इनका अभिनंदन
कह सुरेश जैसे बिहार में उड़ती खिल्ली
वैसे शेरों को घेरेंगे कुत्ते-बिल्ली
टीपू भइया इस तरफ, उधर खड़े शिवपाल
दो पाटन के बीच में, जनता होत हलाल
जनता होत हलाल, मुलायम पीटें माथा
बिन अतीक-मुख्तार, लिखेंगे कैसे गाथा
कह सुरेश लोहिया जी करते ता-ता थइया
वा रे समाजवाद, वाह रे टीपू भइया

-- सुरेश मिश्र

कैसे बने ये डॉक्टर, कैसे ये जल्लाद
कीमत मांगें लाश की, सुनै नहीं फरियाद
सुनै नहीं फरियाद, पुराने नोट न लेते
ऊपर से अपमान, दवा भी एक न देते
डिगरी लेते समय, शपथ सेवा की लेते
करते नहीं इलाज, डॉक्टर बने ये कैसे

-- डॉ. रमा द्विवेदी

छंद

काल घड़ी सब ही बदले अब नायक भ्रष्ट बने अधिकारी
भीतर भीतर घात करें मनमीत रहे न रही अब यारी
बात करे सब स्वारथ की तब, बात रही नहि मानस वारी
पूत-पिता मतभेद परो अब, दाम बने जग के गिरधारी
शौकिन को यह दौर चलो, फिर शौकन पे धनधान लुटायो
भ्रात रहो नहि भ्रात यहाँ, सब गैरन में अपनापन पायो
पूत पिता मतभेद हुओ, अब लालच है उर माहि समायो
टूटत है परिवार यहाँ, जब आप छलो, अपनो बिखरायो

-- नवीन श्रोत्रिय 'उत्कर्ष'

मुक्तक

मैं तेरे इक इशारे को, नजर का तीर लिख दूंगा
तेरी बाहों के घेरे को, हसीं जंजीर लिख दूंगा
हमारी चाहतों को इक नया अब नाम हम दें दें
तेरा रांझा बनूंगा तुझको अपनी हीर लिख दूंगा
चलो फिर आज से बरसों पुरानी रीत हो जाए
यहां फिर सबके होठों पर प्यार का गीत हो जाए
कहे कोई ना फिर देखो ये तेरा है ये मेरा है
चलो अब हार जाऊं मैं, तुम्हारी जीत हो जाए
अमन का, दोस्ती का शायद, रिश्ता लौट आया है
महकता और खिलता फिर,
गुलिस्तां लौट आया है
उठाकर देखलो नजरें,
गजब के ये नजारे हैं
लिये खुशियों की सौगाते,
फरिश्ता लौट आया है

-- जय कृष्ण चांडक

लघुकथा

उम्मीदों का आसमान

'देख बिन्नो! छोटू के खाने पीने पर टोक मत लगाया कर, मैं तुझे पहले भी कह चुकी हूँ।' सीमा कमरे के दरवाजे पर ही थी जब माया की अपनी बड़ी बेटी को डांटने की आवाज कानों में पड़ी। स्कूल से लाई 'एग्जाम शीटस' चेक करते-करते जब उसे चाय की तलब महसूस हुयी तो साथ ही रहने वाली माया के कमरे में चली आई थी, जैसा कि वह अक्सर किया करती थी।

'और मैंने तुझे कितनी बार कहा है कि बेटियों का डांटा मत करो।' उसकी बात पर गुस्सा दिखाते हुए सीमा अंदर पहुँच गयी थी जहां बेटे की प्लेट में सजे खाने को देखकर दोनों बहने खफा हो रही थी।

'पर जीजी इन दोनों की भी छोटू के खाने में तांक-झांक करने की बहुत गंदी आदत है।' माया ने अपनी झुंझलाहट उतारी।

'माया, बच्चों में यूँ भेद-भाव मत किया करो।'

'अब जीजी बेटा है आखिर, कुछ तो ध्यान देना ही पड़ेगा। फिर बुढापे में भी तो यही सहारा बनेगा न!' अपनी बात कहते-कहते माया कुछ झिझक सी गयी क्योंकि उसकी कही बात, दो-दो संपन्न बेटों के होते हुए इस उम्र में निःसहाय सा जीवन जीती सीमा के लिए सहज ही एक कटाक्ष थी। एक क्षण के लिए सीमा का चेहरा फीका भी पड़ा लेकिन नाकारा पति और तीन बच्चों को अपने बूते पर पालती माया के बारे में सोचकर अनायास ही वह मुस्करा पड़ी।

'माया, यही तो एक मृगमरीचिका है जिस के पीछे हम सारा जीवन भागते रहते है और अपनी उम्मीदों के आसमान को छूने का प्रयास करते रहते हैं। काश कि हम निरीह जीवो से कुछ सीख पाते हैं जो अपने बच्चों को सिर्फ देने का फर्ज अदा करना जानते हैं, बदले में कुछ पाने का नहीं!' अपनी बात पूरी करते करते सीमा अपने कमरे की ओर लौट पड़ी थी। और माया की

नजरें भी कुछ देर उसे जाते देखती रही और फिर सहसा ही उसने बेटे की प्लेट का खाना तीन भागों में बांटना शुरू कर दिया।

-- विरेन्दर 'वीर' मेहता

माहिया

१. जीवन ये कहता है
काहे का झगड़ा
जग में क्या रहता है!

२. तुम कहते हो ऐसे
प्रेम नहीं मुझको
फिर साथ रही कैसे!

३. मेरा मौन न समझे
कैसे बतलाऊँ
मैं टूट रही कब से!

-- डॉ जेन्नी शबनम

ऐसे माली बनें

शशि बंसल

नव वर्ष आने को है, बहुतेरे सैर सपाटे से लौटने को हैं तो बहुतों की योजनाएँ बन रही हैं। अच्छा भी है, इसी बहाने सही परिवार के सदस्य एक दूजे के लिए समय तो निकल पाते हैं। इस नव वर्ष पर मेरे साथ आप भी संकल्प लें कि धन-दौलत तो बहुत कमा लिया। भरोसा नहीं, बुरे वक्त में साथ दे या नहीं, इसलिए फूलों की वाटिका से जो संस्कार हमें मिले या हमसे अछूते रह गए, उन्हें ढूँढ़कर सहेज लें और अपनी अगली पीढ़ी को भी उसी सघन छाँह में बैठाकर अपना जीवन संवार लें।

आज माता पिता के पास बच्चों को देने के लिए तमाम ऐशो-आराम हैं। बच्चे भी आज के बहुत ज्यादा स्मार्ट हैं, फिर भी हम गाहे बगाहे पाते हैं कि कहीं कोई सूनापन हमारे आस पास छितरा है। हम सब कुछ होते हुए भी उतने प्रसन्न नहीं हैं जितने हमारे माता-पिता होते थे। भौतिकता हर जगह हावी है। आत्मीयता ढूंढ़े से दिखाई नहीं देती। सारे रिश्ते पैसों व सुख सुविधाओं पर आकर ठहर जाते हैं। 'एकला चलो' की भावना जोर पकड़ती जा रही है। 'स्व' ही 'स्व' है, 'पर' का कोई स्थान नहीं। क्या ऐसे ही जीवन की कल्पना हमने की थी? निश्चित ही नहीं।

दरअसल जीवन की आपाधापी में भागते हुए हम कब खुद से ही इतने दूर हो गए कि हमे भी पता नहीं चला। पर अब बस। हमें इस भौतिकता का जीवन नई पीढ़ी को नहीं देना है, बल्कि उन्हें सहेजना है, संवारना है, पुष्पित और पल्लवित करना है संस्कारों के वृक्ष से, जब वे चलें, तो उनकी सुगंध दूर दूर तक फैल जाये। जो भी पास से गुजरे, तो वह भी महक उठे, और पूछ बैठे तुम्हारा माली कौन है? ■

लघुकथा

कुल-गोत्र

पंडित भोलानाथ की बिटिया मिठी विवाह योग्य हो गई थी। पंडित जी ने सभी परिचितों एवं नाते-रिश्तेदारों से बोल रखा था। रिश्ते आते भी थे, जहां घर-वर अच्छा होता था वहाँ 'कुंडली-कुल-गोत्र' नहीं मिलता था और दहेज की मांग भी होती थी।

पंडित जी पुराने ख्यालों के व्यक्ति थे। वे कुंडली-कुल-गोत्र के मिलान में अडिग विश्वास रखते थे और दहेज देने की स्थिति भी नहीं थी ।

एक रिश्ता ऐसा आया जब कुंडली-कुल-गोत्र तो मिल गया, लेकिन उनकी माली हालत बहुत खराब थी और पंडित जी के पास दहेज के नाम पर सिर्फ कन्या ही थी। मिठी इस शादी के लिए राजी नहीं थी, लेकिन बाबू जी की बात नहीं टाल सकती थी, फिर शादी की उम्र भी निकली जा रही थी। उसे यह भी पता था कि बिना दहेज कोई उससे शादी नहीं करेगा। अतः मन मारकर उसने शादी कर ली ।

उसका पति रामाधार पुरोहिती करता था, गाँव में छोटी-मोटी पूजा करवा कर या सत्यनारायण की कथा बांच कर थोड़ा धन कमा लेता था। दो साल लगातार सूखा पड़ने से उसकी यह आमदनी भी बहुत कम हो गई लेकिन पेट की भूख तो कभी कम नहीं होती बल्कि जब खाने के लाले पड़े हो तो भूख और बढ़ जाती है ।

एक दिन मिठी पेट की भूख मिटाने के लिए महुआ भून रही थी, उसी समय अचानक पंडित भोलानाथ पहुँच गए और पूछा 'मिठी बिटिया, क्या कर रही हो?'

मिठी ने कडुआहट से उत्तर दिया- 'कुल-गोत्र' को भून रही हूँ, पिताजी। यह सुनकर पंडित भोलानाथ निरुत्तरित अवाक से देखते रह गए।

-- डॉ. रमा द्विवेदी

(पृष्ठ २४ का शेष)

आतंकवाद

मकसद सिर्फ दहशत फैलाना होता है। संन्यासी का धर्म होता है मानवता, सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना, विश्व बंधुत्व की अवधारणा तथा शांति की कामना। इसके विपरीत आतंकवादी का धर्म है कट्टरवादिता, दहशत, लूट-खसोट, बलात्कार और मौत। पाकिस्तान तथा इस्लामी जगत के रहनुमाओं को सोचना पड़ेगा कि जब उन्होंने अपने मुल्क में आतंकवादियों की ही फसल बोई है तब वहाँ पर प्यार-भाईचारे के फूल कहाँ से खिलेंगे?

अभी भी वक्त है सभी कौमों व देशों के रहनुमा इस भस्मासुर को खत्म करने पर एकजुट हो विचार करें। कहीं देर न हो जाए और उनका अपना पोषित पालित यह आतंकवाद का भस्मासुर उनके ही बच्चों की मौत का कारण बन जाए। सोचिये जब कल आपके परिवार ही नहीं रहेंगे तब आप किस कौम व देश के रहनुमा बनेंगे? पैदा करना है तो अपने मुल्क में संन्यासियों को पैदा करो ताकि मानवता जिंदा रहे, अध्यात्म से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हो, जन जन में खुशियाँ हों, शिक्षित समाज का निर्माण हो तथा विश्व बंधुत्व की धारणा पुष्पित पल्लवित हो। हमारा विकास अस्त्रों-शस्त्रों का नहीं बल्कि मनुष्यता का विकास हो। सबके लिए भोजन, कपड़ा, शिक्षा, स्वास्थ्य व मकान हमारी प्राथमिकता हो। भौतिक विकास के साथ-साथ मानसिक व आध्यात्मिक विकास हमारी प्राथमिकता हो।

आओ हम सब मिलकर आतंकवाद के विरुद्ध आवाज उठायें, और यह कार्य आज से ही शुरू करें। कहीं कल देर न हो जाए और कोई पेशावर जैसा हादसा हमारे बच्चों व परिवारजनों को हमसे न छीन ले। ■

नमामि देवि नर्मदे अभियान : एक पुनीत पहल

संजय वर्मा 'दृष्टि'

नर्मदा नदी का प्रवाह मध्यप्रदेश के अमरकंटक से लेकर गुजरात में खंभात की खाड़ी तक कुल १३१० किमी है। नर्मदा नदी की विशेषता है कि ये पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर बहती है और मध्यप्रदेश की जीवन रेखा है। नदी के तट पर कई प्रसिद्ध धार्मिक नगर, मंदिर, महल और किले, सुन्दर घाट निर्मित हैं इनके महत्व का अनेक ग्रंथों में उल्लेख मिलता है। इनमें से कुछ डूब क्षेत्र में प्रभावित होने से उन्हें ज्यों का त्यों सुरक्षित जगह बसाया गया है। माँ नर्मदा के तटपर अमावस्या एवं अन्य धार्मिक पर्व पर श्रद्धालु तथा परिक्रमावासी स्नान, पूजन का कार्य करते हैं।

नदियों को पुनर्जीवित करने, नदियों को जोड़ने, प्रदूषण से मुक्त रखने हेतु कई स्थानों पर संस्थाएं कार्य कर रही हैं जो कि पर्यावरण के हित में है। इसी प्रकार कई घाटों पर साफ सफाई के बेहतर इंतजाम होने से घाट की सुंदरता आकर्षित करती है। सेवा भावी लोग धार्मिक पर्वों पर इन घाटों के मंदिरों की रंगाई पुताई सफाई कर साफ सुथरा बनाते आ रहे है। कई जगहों पर घाटों पर महिलाओं के लिए स्नान की उचित व्यवस्था है। साथ ही संकेतक पूजन सामग्री, पत्तल, पन्नी की थैलियां, नारियल आदि डालने के लिए स्थान नियत किया है ताकि नदी में ये सामग्रियां प्रवाहित न हों एवं पानी स्नान-आचमन योग्य रह सके।

नर्मदा नदी के तट स्थित रहने वाले कई रहवासी अपने घर के निकले गंदे पानी का निकास घर के पीछे करते है और उस गंदे पानी को सोख्ता गड्ढे में समाहित करते हैं ताकि सीधे गन्दा पानी माँ नर्मदा के स्वच्छ जल में न मिले। ऐसी ही तकनीकी प्रक्रिया यह है कि नदियों पर बनाये जाने वाले श्रंखलाबद्ध स्टॉप डेमों में बरसात के बाद पानी को संग्रहित कर लेते हैं और वो पानी खेतों में उद्वहन कर किसान खेती में सिंचाई के लिए उपयोग करते है। इन स्टॉप डेमों में नगर एवं गांवों की नालियों का गन्दा पानी भी मिलता है। स्टॉपडेम नहीं बनाये जाने से सीधे गन्दा मिश्रित पानी मुख्य नदी माँ नर्मदा में मिलता था। अब वो पानी वर्तमान में ऐसी ही प्रक्रिया अपनाने से पानी सीधे तौर पर नहीं मिल पाता, क्योंकि वो पानी खाद युक्त होकर किसानों के खेतों में सिंचाई के उपयोग में लिया जाता है।

इसके साथ ही नदी के तट में मिट्टी का कटाव रोकने हेतु नदी के तट पर फलदार वृक्ष ज्यादा संख्या में लगाये जाने चाहिए जिससे परिक्रमावासी, नदी में स्नान करने वाले श्रद्धालुओं को गर्मी में सुखद छांव एवं फल की प्राप्ति हो सके। नगर एवं गाँवों में बहने वाले नाले एवं नर्मदा नदी में समाहित होने वाली अन्य नदियों में सर्वप्रथम सुधार होना चाहिए, ताकि उनमें मिलने वाले गन्दे पदार्थ नर्मदा नदी में समाहित न हों। नदियों को प्रदूषण से मुक्त करने का दायित्व निभाने वाली संस्थाओं को पुरस्कृत कर उन्हें शासन से सहायता मुहैया होनी चाहिए, ताकि जल संक्रमण से होने वाली बीमारियो से निजात मिल सके। साफ-सफाई न होने से भी बीमारियां पनपने के कारण इंसान आर्थिक और शारीरिक रूप से कमजोर हो जाता है।

हमें इस व्यापक सोच को दूर करना होगा कि साफ-सफाई करने से लोग क्या कहेंगे? स्वच्छता न होने से पनपे विभिन्न रोगों से जब लोग पीड़ित होते हैं, तब स्वच्छता की बातें अपने आप ही समझ में आ जाती हैं। स्वच्छता का संदेश और जागरूकता लाना हर इंसान का कर्तव्य है, क्योंकि स्वच्छता से ही बीमारियों, प्रदूषण को मुक्त रखकर स्वास्थ्य का लाभ हमें एक नई दिशा प्रदान कर सकता है। साफ सफाई करने हेतु आपस में सहयोग की भावना को बढ़ावा देकर स्वच्छ नदी व प्रदुषण मुक्त नदी बनाने का संकल्प लेना होगा ताकि स्वस्थ गाँव -शहर समाज के निर्माण में अपनी भागीदारी को सुनिश्चित किया जाए, विश्व स्वास्थ्य संगठन के लक्ष्य को पूरा करने में हम सभी मिलकर नगर एवं नदियों की स्वच्छता बनाये रखने में बेहतर तरीके से अपनी भूमिका अदा कर सकें। हम सबका एक ही उद्देश्य है कि नर्मदा का संरक्षण और उसे प्रदुषण मुक्त करें.

नर्मदा नदी स्वच्छ होगी जब कुछ बात होगी।
नदियों के संरक्षण में यही गिनती खास होगी।। ■

(पृष्ठ १७ का शेष) **तू भी चर, मैं भी चरूं**

पेट थोड़ा बहुत पहले से ही भरा हुआ था, वह पार्क में लगे पेड़-पौधों को चुन-चुनकर चर रहा था, जबकि बाद वाला गधे को शायद कई दिनों से घास नहीं मिली थी। वह बिना कुछ सोचे-बिचारे बस चरता जा रहा था। जब थोड़ा पेट भर गया, तो उसने मुंह उठाया और पहले वाले गधे के पास जाकर बोला, 'भाई! यह बताओ, आज पार्क का रखवाला यानी माली नहीं दिखाई दे रहा है? कालोनी में भी चहल-पहल नहीं दिखाई दे रही है। मामला क्या है?'

'यह सब किसी नोटबंदी का कमाल है। सुना है कि इस देश के प्रधानमंत्री ने नोटबंदी लागू की है। तब से सारे लोग परेशान हैं। अमीर भी, गरीब भी। चोर भी, उचक्के भी। सज्जन भी, दुर्जन भी। बेईमान भी, शाह भी। जो भ्रष्टाचारी हैं, बेईमान हैं, वे अपने नोट को तीरे-थाहे लगाने (सुरक्षित करने) में लगे हैं। जो ईमानदार हैं, वे सुबह से लेकर शाम तक लाइन में लगे हुए हैं। जितने दिन यह कतारबंदी चलेगी, उतने दिन तक समझो कि हम गधों की मौज है।'

इतना कहकर पहले वाला गधा चरने लगा। पहले गधे को चरता देखकर दूसरा भी चरने लगा। ■

(पृष्ठ १९ का शेष) **दयानन्द एवं विवेकानन्द**

सत्य के उपासक हैं, जबकि विवेकानंद सुनियोजित छवि निर्माण के उत्पाद है। आज हिन्दू समाज स्वामी दयानंद के विचारों से स्वाध्यायशील न होने के कारण परिचित ही नहीं है। उन्हें कोई भी स्वामी दयानंद के विरुद्ध यह कहकर भ्रमित कर देता है कि स्वामी दयानंद मूर्तिपूजा और पुराणों का विरोध करते थे, इसलिए उनकी मत सुनिये। वे आंख बंदकर उन पर विश्वास कर लेते हैं। इसी प्रकार कोई स्वामी विवेकानंद को सबसे बढ़िया कहकर उनका महिमामंडन कर देता है। तो वे तत्काल उन पर भी विश्वास कर लेते है। यह पुराना रोग है। हिन्दू समाज की सामाजिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक व्याधि का उपचार केवल स्वामी दयानंद की कड़वी दवाई है, जिसे लेने से वह सदा हिचकता है।

मैंने अपनी क्षमता से अपने विचार प्रकट किये है। पाठक स्वयं निर्णय करें कि स्वामी दयानंद को उनका वास्तविक स्थान और मान हिन्दू समाज क्यों न दे? ■

(पृष्ठ १८ का शेष) **परवाह और जरूरत**

कमरे का सूनापन सुजाता को खाने लगा। उसकी आँखों से आँसूओं की बाढ़ आ गई। वह फिर तस्वीर की ओर देखते हुए कहती है, 'आप किसके भरोसे मुझे यहाँ अकेले छोड़कर चले गए? मुझे भी अपने पास बुला लो। यहाँ न तो किसी को मेरी परवाह है, न ही मेरी जरूरत।'

आधी रात हो गई सुजाता को समय का पता ही नहीं चला और उसने अब तक कुछ नहीं खाया। तभी बेल बजती है। वह जल्दी जल्दी अपनी साड़ी के पल्लू से आँसू पोंछती है और दरवाजा खोलती है। राजेश और रश्मि अन्दर आते हैं और उस पर ध्यान दिए बिना चुपचाप अपने कमरे में चले जाते हैं। सुजाता भी सन्नाटे भरे अंधेरे कमरे में मन मसोसकर सो जाती है। ■

(पृष्ठ १६ का शेष) **अध्यात्म का अर्थ**

मिल सकती है. दरअसल, इन दिनों ऑफिस या घर-परिवार में तनाव की वजह से लोगों में ब्लड प्रेशर, शुगर, दिल संबंधित बीमारियां बड़ी तेजी से बढ़ी हैं. चिकित्सक भी अब मानने लगे हैं कि इन सभी समस्याओं की जड़ रोजमर्रा के जीवन में रचा-बसा तनाव है. इसे दूर भगाने का उपाय हैं अध्यात्म के अलग-अलग अभ्यास, जैसे-प्रार्थना, मधुर संगीत और कुछ पल मौन होकर बैठना भी. जरूरी नहीं है कि ध्यान या अध्यात्म के लिए संन्यासी बना जाए. आम जिंदगी में भी इसे अपनाया जा सकता है.

इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि प्रार्थना से तनाव दूर होता है. इस दिशा में पूरे विश्व में कई अध्ययन भी किए जा रहे हैं. इनके आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा रहा है कि विज्ञान, अध्यात्म और रोगों का उपचार एक-दूसरे से संबंधित हैं. यदि हम जीवन शैली संबंधित बीमारी की चर्चा करें, तो ज्यादातर चिकित्सकों की राय होती है कि अध्यात्म का चिकित्सा पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है. यह हमें जीवन को संतुलित करना सिखाता है, बशर्ते हम दिल से वह कार्य करें. ■

मुक्तक

खुद को जनसेवक कहते पर नोटों के भिखमंगे हैं
स्वार्थ के दलदल में डूबे है बतलाते हैं चंगे हैं
सबने अपना कालाधन देखो घोषित कर मुक्त किया?
अजब गजब है राजनीति का यह हमाम सब नंगे हैं

बच्चा स्वस्थ हुआ है पैदा रंग भंग ना हो जाए
गजब विवादों में फंसकर वह खुद मलंग ना हो जाए
अगर नहीं है ज्ञान पढ़ें इतिहास जरा पन्ने पलटे
नाम जुबां पर दुनिया की तैमूर लंग ना हो जाए

-- मनोज श्रीवास्तव

(पृष्ठ ३ का शेष)

आप अद्वितीय हैं!

जागृत कर स्वयं को समझने का मौका देती हैं। अगर आप आज उन पलों को याद करेंगे तो शायद सहम उठेंगे और यह सोचने पर मजबूर हो जाएंगे कि क्या वह मै ही था जिसने जिन्दगी की इतनी कठिन परीक्षा को पास किया था। लेकिन अब आप उन परिस्थितियों से उबर चुके हैं। इससे सिद्ध होता है कि आप में अटूट सामर्थ्य है। बस एक बार फिर स्वयं की शक्तियों को समझना पड़ेगा।

यकीन मानिए, विश्व के सबसे सुपर कम्प्यूटर का मालिक अमेरिका नहीं बल्कि आप हैं। आपके दिमाग में लगा कम्प्यूटर हर पल आपका साथ देता है, रचनात्मकता लाने की पुरजोर कोशिश करता है। फिर भी आप इतने लाचार एवं बेबस क्यूं? क्यूँकि हमें दिमाग के सुपर कम्प्यूटर को ऑपरेट करना नहीं आता। क्या आपने कभी गौर किया है कि अत्याधुनिकता के दौर में हमारे सुपर कम्प्यूटर को हम नहीं बल्कि कोई और चला रहा है। यहाँ तक कि हमारे इस कम्प्यूटर को समाज, भय, कल्पना आदि शक्तियाँ चला रही हैं।

अब आपका समय है, जागिए, खड़े होइए और चलते ही जाइए। परमात्मा ने आपको कुछ नए मुकाम रचने के लिए भेजा है। मुझे पूरा यकीन है कि आप वैसा सब कुछ कर जाएंगे, जैसा और दूसरे किसी ने नहीं किया होगा, क्यूँकि आप अद्वितीय हैं। ■

सीखना

भरत मल्होत्रा

सीखना एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत निरंतर चलती रहती है। आदमी जितना अधिक सीखता जाता है उतना ही अपना अज्ञान उसे मुखर होकर दिखाई देने लगता है। अज्ञानी या अल्प ज्ञानी स्वयं को बहुत विद्वान समझता है। जैसे-जैसे ज्ञान बढ़ता है वैसे-वैसे ही समझ आता है कि हम महासागर को चम्मच से उलीचने का दुष्कर कार्य साधने का प्रयास कर रहे हैं। अनंत जन्मों के अथक प्रयत्नों से भी ये संभव न होगा।

महान यूनानी दार्शनिक सुकरात ने एक बार ये घोषणा कर दी कि मुझसे बड़ा अज्ञानी इस पृथ्वी पर और कोई नहीं है। कृपा करके कोई मुझे विद्वान कहने की भूल न करे। तब उस समय के ज्ञानी महापुरुषों ने कहा कि आखिरकार सुकरात ज्ञान के नगर में प्रविष्ट हो ही गया।

मनुष्य को सीखने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। हर आयु, हर स्थान, हर समय सीखने के लिए उपयुक्त होता है। इस संसार का सर्वश्रेष्ठ विद्यालय है ये जीवन स्वयं और इस विद्यालय के शिक्षक हैं समय, परिस्थितियाँ एवं हमें मिलने वाले व्यक्ति। जीवन प्रतिपल हमें कुछ ना कुछ सिखा रहा है। अगर मनुष्य आँखों और कानों के साथ-साथ दिमाग भी खुला रखे तो कोई व्यक्ति हो या परिस्थिति हमें कुछ ना कुछ सिखाते ही हैं।

इसे ही हम जीवन का अनुभव कहते हैं। कुछ अनुभव सुखद होते हैं और कुछ दुखद। प्रायः देखा गया है कि बुरा समय, बुरी परिस्थितियाँ एवं बुरे व्यक्ति हमें अधिक सीखने का अवसर प्रदान करते हैं। सुख का अधिकांश समय तो उसका आनंद लेने में ही निकल जाता है। हम हर प्रकार से लापरवाह हो जाते हैं एवं ये सोचते हैं कि ये समय सदा ऐसा ही रहेगा।

परंतु समय कभी एक सा नहीं रहता। जैसे हर दिन के बाद रात का आना तय है वैसे ही सुख के बाद दुख का आना अवश्यंभावी है। यदि हम सुख को अस्थाई जानकर उससे कुछ सीखने का प्रयत्न कर अपने आप को आने वाले दुख के लिए तैयार करते रहेंगे तो दुख हमें ज्यादा प्रभावित नहीं कर पाएगा। जीवन में अच्छा बुरा जो भी मिले उसे सहज रूप से स्वीकार करके उससे कुछ न कुछ ग्रहण करने वाला मनुष्य ही सर्वश्रेष्ठ है। ■

(पृष्ठ ४ का शेष)

काला धन्+धा

को खर्च करना मुश्किल हो जाएगा। बचत को बढ़ावा देने से लोग दबाकर पैसा रखने की कोशिश नहीं करेंगे। कम से कम नकद लेन-देन नकली नोट की समस्या का समाधान होगा। पैसा चलन में रहता है तो बार-बार बैंकों से होकर गुजरता है और नकली नोट पकड़े जाने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं।

हम यह नहीं कहते कि इन उपायों से काला धन पूर्णतः समाप्त हो जाएगा या नकली मुद्रा विलुप्त हो जाएगी पर इतना निश्चित है कि इसका प्रसार नगण्य रह जाएगा। चाणक्य ने भी कहा है कि भ्रष्टाचार एक छाया की तरह होता है। इसे कम तो किया जा सकता है पर मिटाया नहीं जा सकता, अतः राजा को इसे कम करने का प्रयास करना चाहिये, मिटाने की निरर्थक कोशिश नहीं।

(पृष्ठ ५ का शेष)

स्नान की सही विधि

अँगुली डालकर अपने काग और तालू की मालिश कीजिए। इससे जमा हुआ कफ निकलेगा और आँखों की रोशनी भी बढ़ेगी। अब अपने मुँह में लगभग एक-डेढ़ घूँट पानी भर लीजिए। यह पानी स्नान पूरा होने तक मुँह में भरा रहने दीजिए। इसको तभी उगलना चाहिए जब आप शरीर पौंछ चुके हों। इसको पीना उचित नहीं होगा।

मुख्य स्नान

नहाने के लिए साबुन का उपयोग करना बहुत हानिकारक है। लगभग सभी साबुन केमीकलों से बने होते हैं जो हमारे रोमछिद्रों में घुसकर रक्त और त्वचा को दूषित करते हैं। इसलिए साबुन के स्थान पर हमें रूमाल के आकार के खुरदरे तौलिए को पानी में डुबोकर उससे शरीर के सभी अंगों को रगड़ना चाहिए।

सबसे पहले एक-दो लोटे पानी सिर पर डालकर सारे शरीर को हाथ से रगड़ते हुए धोइए। फिर तौलिए का टुकड़ा गीला करके एक-एक करके क्रमशरू हाथों, पैरों, सीना और पेट, पीठ और अंत में मुँह और सिर को रगड़ना चाहिए। इससे रोमकूप खुल जायेंगे, पसीने के द्वारा गन्दगी भी निकलेगी और रगड़ने से मालिश का लाभ भी मिलेगा।

स्नान कर लेने के बाद किसी सूखे तौलिए से शरीर को रगड़कर पौंछ लीजिए और कपडे पहन लीजिए। इस निधि से स्नान करने पर आपको स्नान का पूरा लाभ मिलेगा। इसका सही अनुभव ऐसा करके देखने पर ही किया जा सकता है। ■

(पृष्ठ ११ का शेष)

आई हेट यू पापा

जाना ही पड़ा, कहीं दूसरी जगह। माँ और बेटी से दूर, अपनी पत्नी और अपने कर्मों को भुगतने के लिये।

कैसी स्थिति होती है उस व्यक्ति की, जो अपनी माँ और बेटी दोनों की नजरों में ही गिर जाये। इस अनुभव की अभिव्यक्ति तो गजल के पापा कल्पेश से अधिक अच्छी तरह और कौन कर सकता है। पर तब ही, जबकि उसकी आँखों में थोड़ा बहुत पानी हो और मन पानीदार। सूखे रेगिस्तान की तो बात ही व्यर्थ है।

दूसरे दिन गजल, अपनी दादी जी के साथ देवम के घर पहुँची। मिलने के लिए, धन्यवाद देने के लिए और देवम को आशीष देने के लिए।

गजल और देवम आज बहुत खुश थे। उनके मन में सन्तोष था और अच्छा काम करने की प्रसन्नता भी। आज गजल को दादा जी मिल गये थे और देवम को दादी जी। दादी को बहू मिल गई थी और बहू को सासू जी। और बूढ़ी बेबस आँखों को आत्म-सन्तोष।

कभी-कभी तो खून के रिश्तों से ज्यादा मजबूत होते हैं, मन के रिश्ते। आँखों से सागर छलक रहा था और मन से शुभाशीष। धन्य है वह कुल, धन्य हैं वे माता-पिता और धन्य है वह घर, जिसमें देवम जैसे बेटे जन्म लेते हैं।

(समाप्त)

अखिल भारतीय काव्य-महोत्सव और साहित्यकार सम्मान समारोह

नई दिल्ली। नई दिल्ली स्थित पी.के.रोड रेलवे अधिकारी क्लब में हिन्दी साहित्य के प्रचार-प्रसार एवं उन्नयन के प्रति समर्पित दिल्ली स्थित संस्था 'युवा उत्कर्ष साहित्यिक मंच' का तृतीय वार्षिक काव्य महोत्सव और साहित्यकार एवं पत्रकार समारोह-२०१६ सम्पन्न हुआ। इस समारोह का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री सुभाष राय, प्रमुख संपादक जनसन्देश टाइम्स (लखनऊ) ने अनूप श्रीवास्तव, मुख्य संपादक अट्टहास (अतिविशिष्ट अतिथि), डा.अकील अहमद, सचिव गालिब अकेडमी, मशहूर शायर डा. अहमद अली बर्की आजमी, प्रो. विश्वंभर शुक्ल, डा.रामकुमार चतुर्वेदी, श्री के.के. अग्रवाल (पूर्व सदस्य यातायात, रेलवे बोर्ड) विख्यात कथाकार बलराम, सम्पादक लोकायत और सुश्री मीरा शलभ की गरिमामयी उपस्थिति में किया।

साहित्यिक मंच के प्रमुख पदाधिकारियों ने मंचस्थ सभी अतिथियों का पुष्प गुच्छ और शाल ओढ़ाकर स्वागत किया। तत्पश्चात श्री रामकिशोर उपाध्याय (अध्यक्ष युवा उत्कर्ष साहित्यिक मंच) ने अपने भाषण में सभी उपस्थित कवियों कवयित्रियों एवं मंचस्थ अतिथियों का अभिनन्दन करते हुए आमंत्रण स्वीकार करने के लिए उनका आभार प्रकट किया। उन्होंने महासम्मेलन में आये हुए सभी वरिष्ठ और नवांकुर रचनाकारों से निवेदन करते हुए कहा है कि इस वर्ष सम्पन्न होने वाले सम्मेलन में पूर्ण उत्साह और तल्लीनता से अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें और अपना योगदान दें ताकि आप सबका यह मंच साहित्य के सर्वोच्च शिखर पर आसीन हो। तत्पश्चात मासिक पत्रिका टू मीडिया ने मंच अध्यक्ष श्री रामकिशोर उपाध्याय के व्यक्तित्व और कृतित्व पर आधारित नवम्बर २०१६ अंक का लोकार्पण भी किया गया।

साहित्यिक परिचर्चा के बाद साहित्यकार-अलंकरण समारोह में शिखर सम्मान 'भारतेंदु हरिश्चंद्र सम्मान' सुश्री डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा को प्रदान किया गया। साहित्य की विधाओं में विशिष्ट अवदान के लिए डा. रूप चन्द्र शास्त्री मयंक को 'कबीर दोहाकार सम्मान', अकेला इलाहाबादी को 'दुष्यंत गजलकार सम्मान', त्रिभुवन कौल को छन्दमुक्त के लिए 'सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला सम्मान', उपन्यास के क्षेत्र में श्री हरिसुमन बिष्ट को 'अमृतलाल नागर सम्मान' आदि अनेक विधाओं में साहित्यकारों को सम्मान प्रदान किये गये।

सभी कवियों-कवयित्रियों ने सुन्दर काव्य-पाठ किया एवं श्री प्रमोद वशिष्ठ के सुंदर बांसुरी वादन और ख्यात गायक श्री सुरेन्द्र सागर ने एक सुरीला पंजाबी गीत गाया। अंत में अध्यक्ष द्वारा युवा उत्कर्ष साहित्यिक मंच की पूरी टीम का इस समारोह के आयोजन में अप्रतिम योगदान के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। मंच का सुंदर संचालन त्रिभुवन कौल, सुरेशपाल वर्मा जसाला और श्वेताभ पाठक ने अपने अनूठे अंदाज में किया।■

(पृष्ठ २१ का शेष)

नोटबंदी कौ आल्हा

दिन में डरैं, रात भर जागैं, सम्पति सारी छीन न लेइ।।
जा ते तौ कांग्रेस भली ई, मैं भी खाऊँ, तू भी खाउ।
गाँधी जी के बन्दर बनिकें, बुरौ न कोई देखै काउ।।
कान पकर लए मैंने भैया, कबउँ न दूँ मोदी कूँ वोट।
कांगरेस कूँ वापस लाऊँ, भले रहें वो कफनखसोट।।
चाहें करें घुटाले कितने, बस मेरौ धंधौ चलि जाइ।
बिनती है लछमी मैया ते, या मोदी ते लेउ बचाइ।।

-- विजय कुमार सिंघल

संजय कुमार गिरि को 'साहित्य कमल पुरस्कार'

नई दिल्ली। 'युवा उत्कर्ष साहत्यिक मंच' के तत्वावधान में तृतीय अखिल भारतीय वार्षिक महोत्सव एवं साहित्यकार सम्मान समारोह, ११ दिसम्बर २०१६ को पी.के.रोड रेलवे अधिकारी क्लब, नई दिल्ली में आयोजित हुआ, जिसमे पत्रकारिता के क्षेत्र में उत्कर्ष कार्य करने पर 'संजय कुमार गिरि को 'साहित्य कमल पुरस्कार' से सम्मानित किया गया,

इस मौके पर रामकिशोर उपाध्याय के व्यक्तित्व-ृतित्व पर केन्द्रित मीडिया नवम्बर-२०१६ अंक का लोकार्पण भी हुआ। इस समारोह में देश के अलग अलग राज्यों से आये कवियों, कवित्रियों, शायरों, पत्रकारों और अन्य गणमान्य लोगों को भी समानित किया गया! ■

कार्टून

-- श्याम जगोता

जय विजय मासिक
कार्यालय- १००२, कृष्णा हाइट्स, प्लॉट ८, सेक्टर २-ए, कोपरखैरणे, नवी मुंबई (महा.)
मो 09919997596; ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com
वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in
सम्पादक- विजय कुमार सिंघल
सहसम्पादक- विभा रानी श्रीवास्तव, अरविंद कुमार साहू, रमा शर्मा (जापान)
'जय विजय' का नेट संस्करण ई-मेल से निःशुल्क भेजा जाता है। रचनाओं में व्यक्त किये गये विचार सम्बंधित रचनाकारों के हैं। उनसे सम्पादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।